आजादी का
अमृत महोत्सव

Volume-03
Year
2022

अपराजिता

St. Paul Teachers' Training College Birsinghpur

उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE
BIRSINGHPUR, SAMASTIPUR (BIHAR)

In loving Memory of
Shri Parmeshwar Prasad Narain Singh
Founder St. Paul School and College

9th January 1946 – 23rd May 2021

We Miss You dearly
May the sun Shine on you wherever you be
May you be our guiding light forever and ever to be!

Message from Secretary

Avinash Kumar
Secretary

It gives me enormous felicity that third edition of our annual magazine "Aprajita" is getting published. The annual magazine provide opportunity to students, Research scholar and faculty member to extract and demonstrate their contemplation and ideas with an ingenious speculation.

I appreciate the efforts and developed contributions of the entire Magazine Committee of Aprajita for the publication of this enigmatic and distinctive edition.

My best wishes towards a magnificent success of the magazine.

Avinash Kumar
Secretary

संदेश

उन्हें ज़िद है मुझे नाम से जाना जाए।
पर हमारा शौक है कि हमें काम से पहचाना जाए।।

डॉ. रोली द्विवेदी, प्राचार्या

शिक्षा का मूल लक्ष्य केवल रोजगार और रोजगार पाने की क्षमता प्राप्त करना नहीं वरन इससे भी कहीं अधिक आकर्षक एवं व्यापक है। प्रायः ऐसा माना जाता है कि कौशल विकास, युवाओं में रोजगार प्राप्त करने की क्षमता, उद्यमशीलता और कार्यबल के साथ सामंजस्य बिठाने की क्षमता एवं प्रतिभा निर्वाहन करती है। आर्दश रूप में शिक्षा का तात्पर्य आधारभूत एवं विभिन्न विद्याओं में काम आने आने वाले कौशल का सामूहिक लक्ष्य प्राप्त करना है।

शिक्षा से ही छात्रों में जिज्ञासा उत्पन्न होती है, जिज्ञासा से ही छात्र प्रत्येक बात को सूक्ष्मता से ग्रहण करता है और उसमें कुछ करने की इच्छा जाग्रत होती है। जो छात्र को अखण्ड व्यक्तित्व प्रदानकर सकती है। यही जीवन विज्ञान है। जीवन विज्ञान एक ऐसी कला है जो बौद्धिक एवं भावनात्मक विकास में संतुलन लाती है।

हम शिक्षार्थियों में कौशल विकास करते हैं। हम अपने शिक्षार्थियों को अपनी क्षमता की पहचान करने में सहयोग करते हैं और निरंतर प्रयास, धैर्य और ध्यान के माध्यम से लक्ष्य की ओर मार्ग प्रशस्त करते हैं। हम शिक्षार्थियों को कठिन परिश्रम करने के लिए प्रेरित करते है। हमारे महाविद्यालय की समस्त गतिविधियों का उद्देश्य केवल शैक्षिक उपलब्धि हासिल करवाने पर नहीं है, बल्कि शिक्षार्थियों की समाज उपयोगी एवं सामर्थ्य को समझने, परोपकार की ज्योति जलाने, राष्ट्रीयता का विकास करने का हैं।

हम आशा ही नहीं करते पूर्ण विश्वास है कि एक दिन हमारे शिक्षार्थी, हमारे महाविद्यालय का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित कराएगे। हमारा प्रयास हैं कि सभी शिक्षार्थी अच्छे सवप्न देखें और उन्हें पूरा करने के लिए सतत् प्रयास करें।

धन्यवाद

संपादक मंडल

सुरेन्द्र प्रसाद चौधरी
सहायक प्राध्यापक

आदित्य प्रकाश
सहायक प्राध्यापक

एस.एम.टी. आलम कादरी
सहायक प्राध्यापक

अर्पणा कुमारी
सहायक प्राध्यापक

श्वेता कुमारी
सहायक प्रध्यापिका
सहायक प्राध्यापक

हसन आबाद

खुशबू कुमारी

कुसुम कुमारी

क्र..सं.	विवरण	पृ. सं.
01	महिला सशक्तीकरण की सार्थकता डॉ. रोली द्विवेदी	
02	समाज और शिक्षा में संबंध मनोज कुमार	
03	शिक्षार्थी के मानसिक स्वास्थ्य पर चिंता के प्रभाव का अध्ययन मो. निजामुद्दीन	
04	Teaching Learning Through Online Chandra Bhushan Mishra	
05	दरभंगा जिला के नजदीकी गाँव मे रहने वाले लोगो का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का एक अध्ययन : एस.एम. तहसीन आलम	
06	पुरुषार्थो की प्रासंगिकता: नन्देश कुमार ठाकुर	
07	'प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन का तुलनात्मक अध्ययन : सुरेन्द प्रसाद चौधरी	
08	असमर्थी बालकों की व्यावसायिक शिक्षा का आलोचनात्मक अध्ययन। : श्याम किशोर सिंह	
09	दीनदयाल उपाध्याय का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद-एक दृष्टिकोण : आदित्य प्रकाश	
10	पर्यावरण जागरूकता : डॉ.शम्भू कुमार शर्मा	
11	उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण तथा शहरी परिवेश के छात्र-छांत्राओं के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन : संतोष यादव	
12	विशिष्ट शिक्षा एवं इसका समायोजन एक अध्ययन: मिथिलेश कुमार	
13	माध्यमिक स्तर के श्रवण बाधित विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता का अध्ययन : मीना कुमारी	
14	महिला सशक्तिकरण में उनकी बदलती भूमिकाओं का योगदान : श्वेता कुमारी	
15	भारतीय कलाकारो की कोलाज तकनीक का अध्ययन : नरेन्द्र कुमार	
16	आधुनिक शिक्षा में संगीत का महत्त्व : संजीव कुमार सिंह	
17	भारतीय कला का इतिहास : आवृति चन्द्रा	
18	लिबरल आर्ट्स:- नयी शिक्षा नीति का नया आयाम :प्रियंका शर्मा	
19	शिक्षा के अधिकार कानून के परिप्रेक्ष्य में अनुसूचित जाति के लड़कियां में साक्षरता वृद्धि का अध्ययन : शालीनि शौरभ	
20	कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना का वंचित वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन :आरती कुमारी	
21	QUALITY EDUCATION : Shipra Kumari	
22	विभिन्न अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकें में कार्य संबंधी प्रतिबल : मुकेश कुमार	
23	THE EFFECT OF SELECTED YOGIC EXERCISE OF COLLEGE LEVEL CRICK-ET PLAYERS : Partha Ghosh	
24	Digital Revolution of Education : Arpna Kumari	
25	Professional Development : Dr.Pawan Kumar	
26	नई शिक्षा नीति 2020: राम कृष्ण भारती	
27	STRATEGIES TO DEVELOP COMMUNICATIVE COMPETENCE : Hasan Abad	
28	Techno Pedagogical And Ict Competencies Among Teacher : Nand Kishor Kumar	
29	जीवन में अच्छे और बुरे लोगों की परख- सूरज कुमार	
30	स्माजिक व्यवस्था मे संस्कृति को बचाये रखने की जरूरत- खुशबू कुमारी	
31	भारत में नारी शिक्षा- सुष्मिता कुमारी	
32	मानव जीवन- सुषमा कुमारी	

33	महिला सशक्तिकरण- मीनाक्षी कुमारी	
34	सपनों की नई सोंच- प्रभात कुमार	
35	अपना उज्जवल भविष्य- मूर्ति कुमारी	
36	दिव्यांगता- सपना कुमारी	
37	एकलव्य एक आदर्श प्रस्तुति- रूपा कुमारी	
38	प्रेरणा प्रसंग- मीरा झा	
39	Self Confidance- Amarjeet kumar	
40	ऊँ श्री सरस्वत्यै नमः- अरविन्द कुमार चौधरी	
41	आत्म विश्वास- राहुल कुमार	
42	अच्छा स्वस्थ्य- सोनाली कुमारी	
43	आजादी की अमृत महोत्सव- शशि पासवान	

सम्पादकीय

महाविद्यालय पत्रिका "अपराजिता" भाग-3 आपके सामने प्रस्तुत करते हुए हमें अपार प्रसन्नता हो रहा है। हाल के वर्षों में हम सभी विभिन्न प्रकार की जैविक आपदाओं से प्रभावित रहे हैं, ऐसी विपरीत परिस्थिति में भी हम सभी पुनः अपने आप को स्थापित करने में सफल रहे हैं यही हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि हैं।

हमारा महाविद्यालय अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता के कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि हमारे कार्य उच्चस्तरीय हों और हम, लोगों की आशाओं पर खरे उतर सकें। महाविद्यालय के कर्मठ योग्य और निष्ठावान प्राध्यापक, प्राचार्या डॉ. रोली द्विवेदी महोदया के कुशल निर्देशन में सदैव इसके लिए प्रयत्नशील रहते हैं, कि हमारे यहां से समाज को ऐसे कुशल प्रशिक्षु अध्यापक प्रदान किए जाएं जो विद्यालय में नियुक्ति के पश्चात् अपने दायित्वों का निर्वहन सम्यक् तरीके से करें। इसके लिए कई प्रकार के कार्यक्रम भी महाविद्यालय द्वारा आयोजित किए जाते रहे हैं। इसी की एक कड़ी यह महाविद्यालय पत्रिका है।

प्रस्तुत पत्रिका "अपराजिता'' महाविद्यालय के विद्वान प्राध्यापकों एवं छात्रों की सृजनशीलता की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति है। इसमें महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों के मौलिक चिंतन को सम्मिलित करने का प्रयास किया गया है। आशा है पाठकों के लिए यह पत्रिका ज्ञानवर्धन का एक माध्यम बनेगी। पत्रिका के संपादन का गुरुतर दायित्व हमें प्रदान करने के लिए हम महाविद्यालय के सचिव श्री अविनाश कुमार एवं प्राचार्या डॉ. रोली द्विवेदी एवं विभागाध्यक्ष डॉ. ए.पी. सिंह के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी प्रेरणा हमेशा मिलती रही है। साथ ही इस पत्रिका के संपादन, टंकण आदि कार्यों में सहयोग देने वाले अपने सभी सहकर्मियों को हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

हमें आप सभी को यह सूचित करते हुए अत्यंत हर्श की अनुभूति हो रही है कि इस वर्श अपराजिता पत्रिका में एक नवीन उपलब्धि जुड़ रही है इस वर्श से पत्रिका को ई-मैग्जीन के रूप में भी प्रकाशन किया जा रहा है जो आप सभी के लिए महाविद्यालय वेबसाइट पर उपलब्ध रहेगी।

महाविद्यालय के विवेकशील, प्रगतिशील, प्रबंधतंत्र, प्रबुद्ध प्राचार्या, ज्ञानी एवं कर्तव्यनिष्ठ हमारे सभी सहकर्मी वर्ग के सहयोग एवं श्रेष्ठतम कार्य निष्पादन के लिए पूर्णरूपेण कटिबद्ध संपादक मंडल के समर्पित प्रयासों और प्रशिक्षुओं के सृजनात्मक विचारों से जीवंत अपराजिता भाग-3 निरंतर उच्च शिखर पर आरोहण कर रही है, आशा है प्रस्तुत अंक पाठक वृंद की आकांक्षाओं को पूरा करेगा।

महिला सशक्तीकरण की सार्थकता “लोगो को जगाने के लिए महिलाओं को जागृत करना होगा” –जवाहर लाल नेहरू

डॉ. रोली द्विवेदी प्राचार्या

भूमिका

- परिवर्तन संसार का नियम है संसार की प्रत्येक वस्तु एवं नियम परिवर्तनशील है। यदि परिवर्तन के दृष्टिकोण से देखा जाए तो सबसे अधिक परिवर्तन महिलाओ की वर्तमान स्थिति में हो रहा है। इसका मुख्य कारण है कि समय की धारा के साथ महिलाएँ जागरूक हो रही है, उनको समाज में स्थान दिया गया था वह उससे संतुष्ट नहीं थी। जो बंधन पर निर्भरता और असुरक्षा के घेरे उनके चारो ओर बनाया गया था अब वह उस मिथ्या भ्रम को तोड़ना चाहती है और अपनी शक्तियो से विश्व को अवगत कराना चाहती है। वह बताना चाहती है हमारी शारीरिक बनावट भले ही पुरुषों से थोड़ा अलग है किन्तु हम किसी भी चीज में कम नहीं हैं। और देखा जाए तो उन्हे जहाँ भी अवसर मिला है वहाँ पर उन्होने अपने आप को उस स्रोत में श्रेष्ठ प्रदर्शन करके अपनी सूझबूझ का परिचय दिया है। आज ऐसा कोई क्षेत्र हैं जहाँ महिलाओ ने अपने साहस और शक्ति का परिचय नहीं लहराया है।

- **महिला सशक्तीकरण का अर्थ**

किसी व्यक्ति समुदाय या संगठन की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, लैंगिक या आध्यात्मिक स्थिती में सुधार को सशक्तीकरण कहा जा सकता है।

महिला सशक्तीकरण का तात्पर्य महिलाओ को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं लैंगिक तौर पर मजबूत बनाने से है। जिसके कारण वह अपने व्यक्तिगत जीवन से जुड़े सभी फैसले स्वंय ले सकती है परिवार व समाज में अच्छे से रह सकती हैं। समाज में महिलाओं को वास्तविक अधिकार प्रदान करके उन्हें सक्षम बनाना ही महिला सशक्तीकरण है।

- महिला **सशक्तीकरण** पर हुए कुछ शोध कार्य–

दक्षिण एशिया में महिला सशक्तीकरण पर श्रीलता वाटलीवाला ने 1904 में एक अध्ययन किया था वाटलीवाला के अनुसार सशक्तीकरण तो तरह का होता है–

(क) आर्थिक सशक्तीकरण

(ख) पूर्व सशक्तीकरण

सरकार और विभिन्न एजेन्सियो को ऐसा प्रतीत होता है कि समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम या उद्यमशीलता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से विभिन्न प्रकार के संसाधन उपलब्ध कराकर महिलाओं को सबल और अधिकार सम्पन्न बनाया जा सकता है। किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि आर्थिक सशक्तीकरण से पूर्व सशक्तीकरण हो जाए या उनकी हैसियत बढ़ जाए। उदाहरण के लिए धनी परिवारों में महिलाओं के पास समस्त संसाधन और साधन होते हुए भी उन्हे स्वयं किसी भी प्रकार का निर्णय करने का अधिकार नहीं होता है। इसलिए उन्हें सबल और सत्ताधिकार सम्पन्न नहीं कहा जा सकता है।

संसाधनों का अभाव सत्ताधिकार हरण का कारण नहीं बल्कि सत्ताधिकार हरण उसका परिणाम है। इसमें मूल में ऐतिहासिक कारण है जैसे स्त्रियों की निम्न स्थिति प्रतिष्ठा पुरुष प्रधान समाज आदि। यह आवश्यक नहीं कि जो महिलाएँ आर्थिक रूप से सशक्त है वह घर परिवार के निर्णय लेने में भी स्वतंत्र हो। आर्थिक रूप से सशक्त महिला को घर परिवार पर वास्तविक उसमे पतीया पिता का ही रहता है।

जैसा कि वाटलीवाला ने पाया है कि इन दृष्टिकोणों में अंतर हम सैद्धान्तिक रूप से ही कर सकते है। व्यवहार में यह अंतर प्राया धुंधले नजर आते है।

ग्रामीण बांगलादेश में महिला सशक्तीकरण पर शिडनी सुलर और सैयद हाशमी ने अपना अध्ययन कार्य किया इनके अनुसार महिला सशक्तीकरण के छः विशिष्ट घटक है–

(1) निजी व्यक्तित्व का बोध और भविष्य की दृष्टि

(2) गतिशीलता और दृश्य मानता

(3) आर्थिक सुरक्षा

(4) घर परिवार में स्थिति प्रतिष्ठा और निर्णय करने का अधिकार

(5) सार्वजनिक क्षेत्र में प्रभावशाली ढ़ंग से परस्पर व्यवहार करने की क्षमता

(6) गैर परिवारिक समूहों में सहभारिता

भारत में महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता-भारत के अनेक हिस्सों में आज भी महिलाओं को उचित अधिकार प्राप्त नहीं हैं, उन्हे समाज में पुरुषों से कम तर समझा जाता है इसलिए महिला सशक्तीकरण अत्यंत आवश्यक है।

(1) महिला सशक्तीकरण के बिना अन्याय, लैगिक पक्षपात और असमानता को दूर नहीं किया जा सकता है।

(2) यदि महिलाएँ सशक्त नहीं है तो वह अपनी स्वयं की पहचान विकसित नहीं कर सकती है।

(3) महिला सशक्तीकरण उन्हे भयमुक्त कार्य वातावरण भी प्रदान कर सकता है।

(4) महिला सशक्तीकरण के अभाव में महिलाएँ जीवन में सुरक्षा और संरक्षण का आनंद नहीं ले सकती है।

(5) सशक्तीकरण महिलाओं के सामने आने वाले शोशण और उत्पीरन के विरू) एक शाक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करता है।

(6) महिला सशक्तीकरण महिलाओं के लिए कानूनी सुरक्षा प्रदान करता है।

(7) न्याय एवं प्रगतिशील समाज निर्माण के लिए महिलाओं को काम के समान अवसर प्रदान किए जाने की आवश्यकता है।

(8) महिला सशक्तीकरण द्वारा महिलाएँ अपने कर्तव्य और अधिकारों के प्रतिजागरूक रहती है।

- **महिला सशक्तीकरण का महत्त्वः-**

(1) महिलाएँ सम्मान और स्वतंत्रता के साथ अपने जीवन का नेतृत्व करने में सक्षम होती हैं।

(2) महिलाएँ अपनी स्वयं की एक अलग पहचान बनाती है।

(3) सशक्तीकरण महिलाओं का आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को जोड़ता है।

(4) महिलाएँ समाज में सम्मान जनक स्थान प्राप्त करने में सक्षम हो पाती है।

(5) महिलाएँ समाज की भलाई के लिए सार्थक योगदान देने में सहयोग प्रदान कर पाती हैं।

(6) देश के संसाधन उनके लिए उचित और समान रूप से सुलभ होते हैं।

- **महिला सशक्तीकरण का उद्देश्यः-**

महिला सशक्तीकरण का राष्ट्रीय उद्देश्य महिलाओं की प्रगति और उनमें आत्मविश्वास का संचार करना है साथ ही महिलाओं के पूर्व विकास हेतु सकारात्मक आर्थिक तथा सामाजिक नीतियों के माध्यम से एक वातावरण का निर्माण करना, ताकि वह अपनी क्षमताओ को समझ सके। महिलाओं का सशक्तीकरण सबसे महत्त्वपूर्ण चीज है क्योंकि वह सृजनकर्ता होती है। अगर उन्हें सशक्त करेंगे, उन्हें शक्तिशाली बनाएँगे, प्रोत्साहित करेंगे यह देश के लिए श्रेष्ठ होगा।

- **महिलाओ को सशक्त बनाने के कुछ सरकारी प्रयासः-**

भारत सरकार ने बहुत से ऐसे अभियान चलाए हैं जिससे महिला सशक्तीकरण का बढ़ावा दिया गया है। ये योजनाएँ कमजोर और पीड़ित महिलाओं की आवाज उठाने में सहयोग कर रही है-

(1) बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओ योजना

(2) महिला हेल्पलाइन योजना

(3) सुकन्या समृद्धियोजना

(4) सुधार गृह

(5) कामकाजी महिला छात्रावास

(6) महिला ई-हाट

(7) महिलाओ में 33 प्रतिशत आरक्षण

(8) उज्जवला योजना

(9) पंचायती राज योजनाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण

✯ निष्कर्ष

जिस प्रकार देश तेजी से आर्थिक रूप आत्मनिर्भर बनने वाले देशों में सम्मिलित हुआ उसे दृष्टिगत करते हुए भविष्य में भारत को महिला सशक्तीकरण के लक्ष्य का प्राप्त करने पर भी ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। हमें महिला सशक्तीकरण के इस कार्य को समझने की आवश्यकता है क्योकि उसी के द्वारा ही देश में लैंगिक समानता और आर्थिक उन्नति को प्राप्त किया जा सकता है। महिला सशक्तीकरण, वह हथियार है जिसके द्वारा समाज और देश में बहुत कुछ बदला जा सकता है। भारतीय समाज हमेशा ही पुरुष प्रधान देश है, यही कारण है कि महिलाओं को शिक्षा और समानता जैसे बुनियादी मानवाधिकारों से लगातार वंचित रखा गया है। वह हमेशा दमन और घर तक ही सीमित रहें है और बुनिादी शिक्षा ह्राप्त करने से रोका गया है। लैंगिक समानता की धारन पुरुषों और महिलाओं के मध्य समानता की मॉग करती है लेकिन महिलाओं कों इनके अधिकारों से बंचित रखा गया है। भारत जैसे देश के लिए इसके विकास मे महिला सशक्तीकरण की बड़ी भूमिका होगी।

जैविक और नैतिक दोनों सन्दर्भो में महिलाओं के पास एक परिवार के भवष्यि और विकास के साथ–साथ पूरे समाज को विकसित करने के लिए क्षमताएँ है।

✯✯✯✯✯

समाज और शिक्षा में संबंध

मनोज कुमार
सहायक प्राध्यापक

भूमिका

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। शिक्षा उसका अविभाज्य अंग है। समाज का स्वरूप और आदर्श एक जैसा नहीं रहता। वह समय-समय पर बदलता रहता है। समाज के बदलते स्वरूप और आदर्श के कारण शिक्षा का ढांचा और स्वरूप भी बदलता रहता है। हमारे समाज के अनुरूप ही शिक्षा का ढांचा होता है। समाज जीवन बदलने पर शिक्षा बदल जाना भी स्वाभाविक है। प्रस्तुत शोध पत्र में समाज, शिक्षा, समाज के उत्थान में शिक्षा और शिक्षा के सुधार में समाज की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।

शिक्षा मां के गर्भ से ही शुरू हो जाती है। यह सत्य है कि व्यक्ति समाज में रहकर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा ग्रहण करता रहता है। शिक्षा समाज के हर वर्ग को सभी कालों में शिक्षित करती है। शिक्षा एक सामाजिक आवश्यकता है। शिक्षा ही वह विशेष निधि है जो संपूर्ण सृष्टि में केवल मनुष्य को प्राप्त: होती है। जिसके विकास से मनुष्य में विवेक का जन्म होता है। जिसकी वजह से वह उचित-अनुचित, सही-गलत, सत्य और असत्य में विभेद करने में सफल होता है। शिक्षा समाज का दर्पण है, जो समाज के स्वरूप को परिभाषित करती है। शिक्षा का हस्तांतरण एक पीढ़ी से दूसरी पौढ़ी, गुरु से शिष्य में होता रहता है।

किसी जमाने में शिक्षा के क्षेत्र में संपूर्ण विश्व में भारत का नाम अग्रणी था। यहां पर कुल गुरुओं द्वारा धर्म च दर्शन पर आधारित शिक्षा दी जाती थी। इन शिक्षा केंद्रों में गणित, इतिहास, अर्थशास्त्र व ज्योतिष की पढ़ाई पर बल दिया जाता था। कालांतर में यह शिक्षा पद्धति छिन्न-भिन्न हो गई। भौतिक विज्ञान के विकास ने शिक्षा की दशा और दिशा बदल दी।

समाज मनुष्य के सामाजिक संबंधों का नाम है। व्यक्ति समाज में ही रहकर अपना विकास करता है। समाज एक ऐसा संगठन है जिसमें मनुष्यों के व्यवहार और संबंध पाये जाते हैं। समाज के बारे में ओटाव ने लिखा है कि समाज एक प्रकार का समुदाय या समुदाय का एक भाग है, जिसके सदस्यों में अपने जीवन की विधि की सामाजिक चेतना होती है और जिसमें सामान्य उद्देश्यों और मूल्यों के कारण एकता होती है। ये किसी न किसी संगठित ढंग से एक साथ रहने का प्रयास करते हैं। किसी भी समाज के सदस्यों की अपनी बच्चों का पालन-पोषण करने और शिक्षा देने की निश्चित विधियां होती है। समाज तथा शिक्षा का संबंध वायड एच. वोड ने समाज तथा शिक्षा में संबंध के बारे में कहा है- "समाज और शिक्षा का एक दूसरे से पारस्परिक कारण और परिणाम का संबंध है। किसी भी समाज का स्वरूप उसकी शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप को निर्धारित करता है और इस व्यवस्था का स्वरूप समाज के स्वरूप को निर्धारित करता है। "शिक्षा व समाज के बीच में एक गहरा संबंध है। दोनों एक-दूसरे पर गहरा प्रभाव डालते हैं। एक का विकास, दूसरे के विकास का परिणाम व एक की अवनति दूसरे की अवनति का परिणाम होती है। जब भी समाज में शिक्षा की व्यवस्था की जाती है, तब वह सर्वप्रथम अपने आदर्शों और आवश्यकताओं को सामने रखता है। इस संबंध में ओटाव ने लिखा है- "किसी भी समाज में दी जाने वाली शिक्षा समय-समय पर उसी प्रकार बदलती है, जिस प्रकार समाज बदलता है।" शिक्षा समाज के जीवन की संपूर्ण विधि पर आश्रित रहती है। अत: इस विधि के बदल जाने पर शिक्षा का बदल जाना स्वाभाविक है। समाज के विकास में शिक्षा की भूमिका

यह सत्य ही कहा जाता है कि समाज का विकास और उन्नति, शिक्षा के बिना असंभव है। समाज के विकास में शिक्षा की भूमिका के बारे में निम्नलिखित ढंग से दर्शाया गया है: -

1. शिक्षा द्वारा ही बालक का सामाजीकरण होता है।
2. विचारों, आदर्शों और संस्कृति को धीरे-धीरे अन्य बालकों व शिक्षकों के संपर्क में आने पर अपना लेता है और परिवर्तन लाता है।

3. शिक्षा सामाजिक परिवर्तन लाने में सहायक होती है।
4. समाज की परंपराए, रीति-रिवाज का निर्धारण भी शिक्षा ही करती है।
5. शिक्षा सामाजिक कुरीतियों को समाज से अलविदा कहने पर मजबूर करती है या जड़ से उखाड़ फेकती है।
6. शिक्षा सामाजिक कुरीतियों का पर्दाफश करती है।
7. शिक्षा ही समाज के दोषों व कुप्रथाओं पर नियंत्रण करती है।
8. शिक्षा ही सुव्यवस्थित समाज का निर्माण करती है।
9. शिक्षा ही समाज के लोगों में व्यवसाय दक्षता प्रदान करके उनको अलग-अलग क्षेत्रों में कार्य करने योग्य बनती है।
10. शिक्षा ही समाज में आर्थिक विकास के लिए मुख्य भूमिका अदा करती है।
11. शिक्षा ही समाज के लोगों को उनके अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति जागरूक करती है।
12. शिक्षा ही अच्छी राजनैतिक विचारधारा की रक्षा व विकास करती है।
13. शिक्षा ही अच्छे राजनेता पैदा करती है।
14. शिक्षा ही लोकतंत्र की रक्षा करती है।
15. शिक्षा ही समाज के लोगों को वोट के मूल्य व महत्त्व के प्रति जागरूक करती है।
16. शिक्षा ही समाज का राजनैतिक विकास करती है।
17. शिक्षा ही समाज के लोगों को संकुचित विचारों से ऊपर उठाकर उदारवादी बनाती है।
18. शिक्षा ही समाज के अल्पतम और निश्चित साधनों द्वारा अधिक से अधिक सामाजिक कल्याण की विधि को सिखाती है।
19. शिक्षा ही समाज की तमाम मांगों, मान्यताओं और आवश्यकताओं के बदलते स्वरूप के साथ तालमेल बैठाती हुई उनकी पूर्ति भी करती है।
20. शिक्षा ही सामाजिक विरासत को आने वाली पीढ़ियों को हस्तांतरित करती
21. शिक्षा प्रत्येक समाज की गौरवमयी संस्कृति व सभ्यता को नष्ट होने से बचाती है।
22. शिक्षा ही समाज के लोगों को सुखी, संपन्न तथा समृद्धिशाली जीवन व्यतीत करने के लिए विधि विधान सिखाती है।
23. शिक्षा समाज के लोगों में सहयोग, सद्भावना, सहानुभूति, सहनशीलता, आत्मविश्वास, आत्मानुशासन और कर्तव्यपरायणता एवं जनतांत्रिक मूल्यों का विकास करती है।
24. शिक्षा ही समाज के लोगों को चरित्र और नैतिकता की शिक्षा देती है।
25. शिक्षा ही समाज के लोगों को समायोजन का पाठ पढ़ाती है।
26. शिक्षा ही समाज को संस्कारों का पाठ पढ़ाती है।
27. शिक्षा ही समाज के विरुद्ध कार्यों के प्रति जनमत तैयार करती है।
28. शिक्षा ही समाज में अच्छी बातों का स्वागत करती है तथा गलत बातों व संस्कारी पर नियंत्रण करती है।
29. शिक्षा ही समाज की धार्मिक दशाओं में परिवर्तन लाती है।
30. शिक्षा ही समाज के लोगों को प्राचीन इतिहास से परिचित करवाती है और भविष्य में उन्नति के लिए रास्ता दिखाती हैं।
31. शिक्षा ने ही समाज के लोगों की सोच बदलकर औरत को पुरुष के बराबर दर्जा दिया और साक्षरता दर बढ़ा दी है।
32. शिक्षा ही समाज के लोगों के अंधविश्वास को दूर करती है।
33. शिक्षा ही समाज की संस्कृति में परिवर्तन को स्वीकार व अस्वीकार करने की योग्यता दिशा प्रदान करती है।
34. शिक्षा ही समाज के लोगों में कर्मयोग की भावना का विकास करती है।

समाज की शिक्षा में भूमिकाः-

1. समाज दशा और दिशा के अनुसार ही शिक्षा प्रणाली स्थापित की जाती है। समाज की राजनैतिक दशा बदलने के साथ शिक्षा प्रणाली भी बदल जाती है। जैसे स्वतंत्रता के पूर्व अंग्रेजों की शिक्षा पद्धति, स्वतंत्रता के बाद सबके लिए शिक्षा का सिद्धात, वर्तमान में सभी लड़कियों को फ्री एजुकेशन, सर्व शिक्षा अभियान और राइट टू एजुकेशन, कंपलसरी एजुकेशन आदि।
2. सामाजिक परिवर्तनों के कारण शिक्षा प्रणाली में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक ही है। समाज परिवर्तनों के कारण ही समाज, शिक्षा प्रणाली की स्थापना करता है। उदाहरण के तौर पर पूर्व भारतीय समाज में सती प्रथा, बालविवाह प्रथा,

अस्पृश्यता आदि कुरीतियां समाज में व्यापत थी, लेकिन समय के साथ-साथ परिवर्तन आया और इन बुराइयों के विरुद्ध आंदोलन शुरू कर दिए। परिणाम यह निकला कि सभी को शिक्षा में समान अधिकार एवं शिक्षा प्राप्ति के समान अवसर दिए गए। अब शिक्षा प्रत्येक भारतीय को जाति, धर्म, लिंग आदि भेदभावों से रहित होकर मिलने लगी।

3. जनजातीय समाजों ने शिक्षा हासिल करने का अधिक से अधिक प्रयास किया है।
4. समाज की आर्थिक दशा भी शिक्षा प्रणाली पर गहरा प्रभाव डालती है। जो समाज आर्थिक दशा से समृद्धशाली होता है, समाज की शिक्षा प्रणाली प्रगतिशील होती है। क्योंकि समृद्धशाली समाज में शिक्षा केंद्रों का खोलना एवं उनका संचालन करना आसान होता है। उनके भवन, प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, फर्नीचर, अध्यापक, हेडमास्टर, प्रिंसीपल व अन्य सभी शिक्षण सामग्री एवं सहशिक्षण सामग्री की पर्याप्त व्यवस्था के कारण शिक्षा को बालकों तक सुचारू रूप से पहुंचाया जा सकता है।
5. सामाजिक मूल्यों, आदर्शो और आवश्यकताओं का प्रभाव भी शिक्षा प्रणाली पर पड़ता है। समाज अपने मूल्यों, आदर्शों और आवश्यकताओं के अनुसार ही शिक्षण प्रणाली की व्यवस्था करता है।
6. शिक्षा पर समाज की धाल्तमक दशा का भी प्रभाव पड़ता है। समाज, शिक्षा प्रणाली को इस प्रकार गठित करता है ताकि समाज के उद्देश्यों को पूरा किया जाए।

निष्कर्ष

समाज और शिक्षा में बड़ा अटूट संबंध है। जैसा समाज होगा वैसी ही उस समाज की शिक्षा प्रणाली होगी। यदि समाज समृद्धिशाली होगा उसकी शिक्षा प्रणाली भी उसी प्रकार प्रगतिशील होगी। शिक्षा हमेशा समाज के जीवन की संपूर्ण विधि पर आश्रित रही है। अतः इस विधि के बदल जाने पर शिक्षा का बदल जाना स्वाभाविक है। जिस समाज की शिक्षा प्रणाली जितनी प्रगतिशील होती है, वह समाज उतना ही समृद्धिशाली होता है। इसलिए समाज की उन्नति व विकास शिक्षा पर ही आधारित है।

संदर्भ ग्रन्थः-

1. सक्सेना स्वरूप (2005) शिक्षा सिद्धांत, मेरठः आर लाल बुक डिपो
2. सक्सेना सरोज (ई.डी.) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, आगरा साहित्य प्रकाशन
3. शर्मा ओ. पी. एंड खान एन. (ई.डी.). एजुकेशन सिस्टम इन इंडिया, जालंधरः मॉडर्न पब्लिशर

☆☆☆☆☆

''प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन का तुलनात्मक अध्ययन (बिहार राज्य के समस्तीपुर जिला के संदर्भ में)''

सुरेन्द्र प्रसाद चौधरी

सहायक प्राध्यापक

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र का आदर्श उसकी शिक्षण संस्थाओं में ही प्रतिबिम्बित होता है। इनसे हमें राष्ट्रीय एकता की आत्मा के पहचान में सहायता मिलती है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था मे प्राथमिक शिक्षा प्रथम प्राथमिकता की वस्तु है परन्तु प्राथमिक शिक्षा में एक बड़ी संख्या में छात्र अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा पूर्ण किये बिना बीच में ही शिक्षा को स्थगित कर देते है। यह गम्भीर एवं विचारणीय बिन्दु है। यह स्थानीय ही नहीं बल्कि देशस्तर पर हर वर्ष का एक विचारणीय बिन्दु हैं इसलिए शोधकर्ता ने प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन का तुलनात्मक अध्ययन (बिहार राज्य के समस्तीपुर जिला के सन्दर्भ में) नामक शीर्षक को शोध का विषय बनाया है।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में प्राथमिक शिक्षा

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में प्राथमिक शिक्षा-भारतीय प्राथमिक शिक्षा का वर्तमान स्वरूप तथा प्राचीन भारतीय शिक्षा के स्वरूप में एवं व्यवस्था में महान अन्तर है। प्राचीन कालीन प्राथमिक शिक्षा के स्वरूप से आधुनिक प्राथमिक शिक्षा के स्वरूप में विभिन्न परिवर्तन हुए हैं। वैदिक कालीन प्राथमिक शिक्षा, बौदिक कालीन प्राथमिक शिक्षा, मुस्लिम कालीन प्राथमिक शिक्षा तथा ब्रिटिश कालीन प्राथमिक शिक्षा से वर्तमान प्राथमिक शिक्षा मे विभिन्न परिवर्तन हुए हैं। ब्रिटिश कालीन शिक्षा में प्राथमिक शिक्षा के सम्बन्ध में हण्टर कमीशन- 1882, लार्ड कर्जन-1898-1905, हर्टाग समिति-1927-1929 ने प्राथमिक शिक्षा की समस्या पर विचार कर उनकी समस्याओं के समाधान की रूपरेखा तैयार किया। हर्टाग समिति ने प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या पर प्रकाश डाला और कहा कि भारत में एक बड़ी संख्या में छात्र प्राथमिक शिक्षा पूर्ण किये बिना प्राथमिक शिक्षा से हट जाते हैं। वह समस्या आज देश को आजाद हुए 75वर्ष बीत चुके हैं परन्तु इससे पूर्ण रूपेण मुक्ति नहीं मिल पायी है। इसके कारण को शोध का विषय बनाया गया है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

अपव्यय एवं अवरोधन एक ऐसी समस्या है जो प्राथमिक स्तर के 14 वर्ष तक के बालकों के निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के द्वारा शत प्रतिशत प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य ही पूर्ति में बाधा उत्पन्न कर रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में कहा गया है कि (1) 14 वर्ष के आयु के बच्चों का सार्वजनिक नामांकन हो और बीच में कोई अवरोध न हो तथा (2) शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो राष्ट्रीय शिक्षा नीति के इस अवधारणा के अनुसार 14 वर्ष तक के बालकों का नामांकन अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए। ऐसी व्यवस्था हो कि बीच में अपव्यय व अवरोधन न हो। 1986 के नीति के क्रियान्वयन पर बल दिया गया फिर भी अपव्यय और अवरोधन की समस्या बनी हुई है। भारत में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विकास की दृष्टि से यह आवश्यक है कि प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक शिक्षा की समुचित व्यवस्था हो जिससे इस स्तर पर शिक्षा आकर्षक, सरल, रुचिपूर्ण तथा प्रभावी बन सके। इसके लिए शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन को रोकना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

इस समस्या के कारणों का पता लगाना आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण दायित्व है इसलिए इस विषय पर शोध करने की आवश्यकता महसूस की गयी। यह शोध महत्त्वपूर्ण होगा क्योंकि इससे प्राप्त निष्कर्ष से प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने में सहायता मिलेगी। विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होगी इस समय भी वास्तविक स्थिति को समझ कर देशस्तर एवं प्रदेश स्तर पर अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या समाप्त करने में सहायता मिलेगी।

समस्या का कथन- समस्या का कान-उपर्युक्त बातों के सन्दर्भ में वर्तमान अनुसंधान के शीर्षक को निम्नलिखित रूप में रखा गया है- "प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन का तुलनात्मक अध्ययन, (बिहार राज्य के समस्तीपुर जिला के सन्दर्भ में)"

शीर्षक में आये शब्दों की कार्यात्मक परिभाषा

प्राथमिक विद्यालय

प्राथमिक विद्यालय-औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के प्रथम स्तर को प्राथमिक शिक्षास्तर कहा जाता है। बालक की आयु 6 वर्ष होने पर प्राथमिक शिक्षा प्रारम्भ होती है और 11 वर्ष की उम्र अर्थात कक्षा 1 से प्रारम्भ होकर कक्षा 5 तक प्राथमिक शिक्षा चलती रहती है। औपचारिक शिक्षा का विधिवत प्रारम्भ प्राथमिक शिक्षा से होता है पूर्व माध्यमिक शिक्षा से नही। पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा की एक तैयारी मात्र है। अत: वह विद्यालय जिसमें 1 से कक्षा 5 तक की पढाई होती है प्राथमिक विद्यालय कहलाता है

पूर्व माध्यमिक विद्यालय

पूर्व माध्यमिक विद्यालय-पूर्व माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के पूर्ण करने पर प्रारम्भ होती है। जब बालक कक्षा 5 उत्तीर्ण कर कक्षा 6 में प्रवेश करता है तब वह प्राथमिक शिक्षा से पूर्व माध्यमिक शिक्षा में आता है अत: पूर्व माध्यमिक शिक्षा 1 से 14 वर्ष की उम्र तक चलती है कक्षा 6 से कक्षा 8 तक की शिक्षा को पूर्व माध्यमिक शिक्षा कहलाती है। अत: वह विद्यालय जिसमें कक्षा 6 से कक्षा 8 तक की पढाई होती है पूर्व माध्यमिक विद्यालय कहलाता है।

अपव्यय

शिक्षा में अपव्यय का साधारण अर्थ शिक्षा से वांछित लाभ की प्राप्ति न होना है। यदि बालक के शिक्षा पर व्यय किये गये धन व मानव श्रम के बावजूद बालक शिक्षा से लाभ नहीं उठा पाता तो बालक की शिक्षा पर व्यय किये गये धन व मानव श्रम को अपव्यय कहेंगे। हर्टोग समिति (1929) ने अपव्यय की परिभाषा करते हुए कहा है कि 'अपव्यय से हमारा अभिप्राय प्राथमिक शिक्षा को पूरी किये बिना ही बालकों को प्राथमिक स्कूल से हटा लेना है।'

अवरोधन

प्राथमिक कक्षाओं में अनुत्तीर्ण होना एक साधारण बात है। परन्तु शैक्षिक दृष्टि से यह एक गंभीर समस्या है। किसी छात्र का किसी कक्षा में अनुत्तीण होना उस छात्र की शैक्षिक प्रगति में अवरोध का कार्य करता है। जिसके कारण वह अपनी शैक्षिक मात्रा निर्धारित न्यूनतम समय में पूरी नहीं कर पाता है परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के कारण बालक को एक ही कक्षा में एक से अधिक वर्षों तक रहना पड़ता है। छात्रों का इस प्रकार एक ही कक्षा में दो या दो से अधिक वर्षों तक बने रहना है। शैक्षिक अवरोधन है।

संदर्भ ग्रंथ-

1. डॉ. ए.एस. अल्तेकर, प्राचीन भरतीय शिक्षण पद्धति, नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्श 1955।
2. शिक्षा आयोग की रिपोर्ट 1964-66, भारत सरकार, नयी दिल्ली।
3. भारत का संविधान, भारत सरकार विधायी विभाग, राजभाषा खण्ड दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1990
4. डॉ. सारस्वत मालतीरू, भारतीय शिक्षा का विकास और समस्याएँ कैलाश प्रकाशन मन्दिर।
5. स्वामी विवेकानन्द, भाग-5
6. दूबे डॉ. सत्यनारायण भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएँ

☆☆☆☆☆

शिक्षार्थी के मानसिक स्वास्थ्य पर चिंता के प्रभाव का अध्ययन

मो. निजामुद्दीन
सहायक प्राध्यापक

प्रस्तावना

किसी भी देश में उच्च शिक्षा का विकास उस देश के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले विकास का आधार होता है। हमारे देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् उच्च शिक्षा का तीव्र गति से विकास हुआ है और आज विश्व में हम उच्च शिक्षा के क्षेत्र में तीसरी सबसे बड़ी शक्ति हैं। पिछले दशक तक उच्च शिक्षा संस्थान के सफल संचालन के लिए सरकार द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के माध्यम से अनुदान दिया जाता रहा है, लेकिन वैश्वीकरण व विश्व व्यापार संगठन के बढ़ते प्रभाव के फलस्वरूप उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण की प्रक्रिया तेजी से विकसित हुई है। इसके परिणामस्वरूप सरकार ने निजी संस्थाओं को अनुदान देना बंद कर दिया और उन्हें अपने खर्चों के लिए स्ववित्तपोषण की अवधारणा अपनाने को कहा है। अतः वर्तमान में दो तरह की शैक्षिक संस्थाएं दिखाई पड़ती हैं। एक वे, जो अनुदान प्राप्त करती हैं, और दूसरी वे, जो स्ववित्तपोषित है।

अनुदानित संस्थाओं का समस्त व्यय सरकार वहन करती है। छात्रों से नाममात्र का शुल्क लिया जाता है। स्ववित्तपोषण की अवधारणा है कि ''जो व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करे, वही उसका मूल्य अदा करे।''

पुनैया समिति ने 1992 में उच्च शिक्षा के स्ववित्त पोषण पर अपना मत प्रकट करते हुए कहा, कोई भी समाज जो गरीबी व गैर-बराबरी से जूझ रहा हो, वह विश्वविद्यालयों में हो रही फजूलखची के सब्सिडीकरण का समर्थन नहीं कर सकता अथवा सम्पक्ष सबको को उच्च शिक्षा पर हो रहे खर्च से बचने की अनुमति नही दे सकता। इसलिए, उच्च शिक्षा पर हो रहे वास्तविक खर्च का बड़ा हिस्सा उनसे वसूला जाना चाहिए। ''माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 24 अप्रैल, 2000 को गठित समिति मात नए पालिसी फेमवर्क फोर रिफार्म इन एजुकेशन ''में उच्च शिक्षा के निजीकरण पर जोर दिया गया। अम्बानी ''बिड़ला नाम से प्रसिद्ध समिति ने भी शिक्षा को बाजारोन्मुखी बनाने पर जोर दिया।

स्ववित्तपोषित संस्थाओं की संस्तुति करने तथा बढ़ावा देने के पीछे इन समितियों व सरकार की अपनी विवशताएं भी हैं। यद्यपि संविधान में स्वतंत्रता के 10 वर्षों के भीतर ही प्राथमिक शिक्षा को सब तक पहुंचाने का लक्ष्य या फिर भी हम आज इस लक्ष्य से बहुत पीछे है। अतः संस्कार की नीति उच्च शिक्षा पर किए जाने वाले व्यय में कटौती करके प्राथमिक शिक्षा पर खर्च करने की है। जिससे प्राथमिक शिक्षा को शीघ्र ही जन-जन तक पहुंचाया जा सके। देश में उच्च शिक्षा प्रायः दो प्रकार की है-सामान्य शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा।

वैश्वीकरण के इस युग में व्यावसायिक शिक्षा की मांग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और अधिकांश छात्र एक स्तर तक ही सामान्य शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं। परिणाम स्वरूप, सामान्य शिक्षा की तुलना में स्ववित्तपोषित व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने वाली शैक्षिक संस्थाओं की संख्या अप्रत्याशित रूप से बढ़ी है।

अध्यापक प्रशिक्षण इसी प्रकार का एक पाठ्यक्रम है जिसकी मांग बहुत तेजी से बढ़ी है और स्थिति यह है कि इन स्ववित्तपोषित संस्थाओं द्वारा चलाए जा रहे अध्यापक प्रशिक्षण पाठयक्रम में पढ़ने वालों की संख्या ''अनुदानित शैक्षिक संस्थाओं में पढ़ रहे छात्रों की संख्या से कई गुना ज्यादा है। यद्यपि इन स्ववित्तपोषित संस्थाओं की स्थापना व संचालन के लिए समुचित निर्देश व नियम है, किन्तु अधिकांश स्ववित्तपोषित संस्थाओं द्वारा अधिक से अधिक धनोपार्जन करने की प्रवृत्ति ने, इन्हें इनके मार्ग से भटका दिया है। परिणामस्वरूप, इन संस्थाओं के संचालकों द्वारा विश्वविद्यालयों के अधिकारियों व राजनेताओं के सहयोग से नियमों व दिशा निर्देशों का-खुल्लम-खुल्ला उल्लंघन किया जा रहा है। इससे इन संस्थाओं में कार्यरत अध्यापकों के मानसिक स्वास्थ्य व चिंतन पर विपरीत प्रभाव देखने को मिलता है।

किसी देश का भविष्य उसकी आने वाली पीढ़ी पर निर्भर करता है और उसका स्वरूप कैसा हो, इसकी जिम्मेदारी शिक्षकों पर होती है। कोठारी आयोग ने कहा था कि भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है। किसी राष्ट्र की प्रगति व उन्नति उसके अध्यापकों की गुणवत्ता व विकसित दृष्टिकोण पर निर्भर करती है, अतः उनका प्रशिक्षित होना अति आवश्यक है। अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम व्यक्ति में अध्यापन के विभिन्न पक्षों से संबंधित ज्ञान, बोध, मूल्य, व्यवहार आदि को विकसित करता है। यह, व्यवहार में परिवर्तन व परिमार्जन कर, व्यक्तित्व विकास पर बल देता है। अध्यापकों में उपरोक्त गुणों के विकास के लिए अध्यापक प्रशिक्षक का स्वस्थ, सजग, साधन-सम्पन्न व दृढ़ इच्छाशक्ति वाला होना अनिवार्य है।

अनुदानित संस्थाओं में कार्यरत अध्यापक प्रशिक्षकों को सरकार वेतन देती है तथा इन्हें सरकार द्वारा कग्र अन्य प्रकार की सुविधाएं प्राप्त होती हैं जो इनके सामाजिक व आर्थिक स्तर को उच्च बनाती हैं, किन्तु इसके विपरीत स्ववित्तपोषित संस्थाओं में कार्यरत अध्यापक प्रशिक्षकों का वेतन व सुविधाएं बहुत ही निम्न स्तर के हैं। इसके अतिरिक्त लचता की बात यह है। कि इन अध्यापक प्रशिक्षकों की सेवा दशाएं सरकार द्वारा निर्धारित नहीं की जाती, बल्कि प्रबन्ध समिति की कृपा पर निर्भर होती हैं।

अध्यापक-प्रशिक्षक का शोषण इन संस्थाओं द्वारा अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में कहां तक सफल होगा, कहना कठिन है। इस शोषण के परिणामस्वरूप, उसमें तनाव, कुण्ठा, चिन्ता, निराशा आदि नकारात्मक प्रवृत्तिया उत्पन्न हो रही हैं जिनका सीधा प्रभाव उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। मानसिक रूप से अस्वस्थ अध्यापक प्रशिक्षक की कार्यक्षमता व उनके द्वारा प्रशिक्षित अध्यापकों की गुणवत्ता की कल्पना करना अति भयावह है।

अध्यापक के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालने वाले प्रमुख कारकों का वर्णन करते हुए यह कहा गया है कि अपर्याप्त वेतन, नौकरी की सुरक्षा का अभाव, अधिक कार्यभार, आतंकवादी व्यवस्था आदि न केवल शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं, बल्कि उसे मानसिक रूप से अस्वस्थ बना देते हैं।

इन बातों के आधार पर लेखकों द्वारा इस शोध प्रपत्र की समस्या का विकास किया गया, जिसमें अनुदानित व स्ववित्तपोषित संस्थाओं के अध्यापक-प्रशिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर चिन्ता के प्रभाव को देखने का प्रयास किया गया है।

अनुदानित व स्ववित्तपोषित संस्थाओं में अध्यापक प्रशिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर लचता के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन–

अध्ययन के उद्देश्य

1. अनुदानित संस्थाओं में अध्यापक प्रशिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर लचता के प्रभाव का अध्ययन।
2. स्ववित्तपोषित संस्थाओं में अध्यापक प्रशिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर लचता के प्रभाव का अध्ययन।
3. अनुदानित व स्ववित्तपोषित संस्थाओं में अध्यापक प्रशिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर चिता के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

सुझाव

1. अनुदानित संस्थाओं के अनुरूप स्ववित्तपोषित संस्थाओं में भी शिक्षकों की पर्याप्त संख्या, उनका वेतन, वेतन वृद्धि, प्रोन्नति, नियुक्ति की प्रकृति आदि के मानकों को अनदेखा न किया जाए।
2. शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए अध्यापक-प्रशिक्षकों की समस्याओं के समाधान हेतु मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। साथ ही स्ववित्तपोषित संस्थाओं की गोपनीय जांच के लिए प्रत्येक विश्वविद्यालय में एक नियंत्रण और निरीक्षण प्रकोष्ठ होना चाहिए जो कार्यक्रमों की गुणवत्ता पर पैनी नजर रख सके।
3. अध्यापक प्रशिक्षण जैसे क्षेत्र से जुड़ी संस्थाओं को निरन्तर सक्रिय रहकर अपने कर्तव्यों का पूर्ण निष्ठा से पालन करना चाहिए।
4. सामान्य तौर पर यह माना जा सकता है कि जब तक कोई शिक्षण संस्था छोटी रहती है तभी तक उसमें गुणवत्ता व सेवा दशाओं का उचित प्रबन्धन किया जा सकता है, किन्तु जैसे जैसे संस्था का विस्तार होता जाता है गुणवत्ता व सेवा दशाओं का ह्रास स्वाभाविक रूप से हो जाता है। अतः स्ववित्तपोषित संस्थाओं को अपने आकार को अनावश्यक रूप से विस्तृत करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।
5. स्ववित्तपोषित संस्थाओं के संचालकों द्वारा मानक से अधिक वित्तीय लाभ प्राप्त करने पर रोक लगाई जानी चाहिए।
6. सरकार द्वारा अध्यापक शिक्षा को अधिकतम अनुदान दिया जाना चाहिए, क्योंकि आयोग का कथन है कि अध्यापक शिक्षा में निवेश की गई पूंजी अधिकतम लाभांश देती है, क्योंकि यह पूंजी लाखों लोगों के शिक्षा स्तर में होने वाले सुधार से बहुत कम होती है।

☆☆☆☆☆

दरभंगा जिला के नज़दीकी गाँव में रहने वाले लोगों का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का एक अध्ययन

एस. एम. तहसीन आलम कादरी
सहायक प्राध्यापक

सारांश

शिक्षा एक ऐसा हथियार है जिससे समाज के अंधकार को दूर किया जा सकता है तथा मानव के जीवन में प्रकाश का संचार होता है। शिक्षा के अभाव में ना तो समाज का विकास हो सकता है और न ही देश का विकास ही संभव है। शिक्षा राष्ट्र के विकास में महत्ती भूमिका निभाता है। समाज के आर्थिक, सामाजिक तथा लोकतांत्रिक विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा व्यक्ति में रचनात्मक एवं सृजनात्मक दृष्टिकोण का विकास करती है। शिक्षा समाज की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की पूर्ति करता है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता के द्वारा दरभंगा जिला के नजदीकी गाँव में रहने वाले लोगों का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का महत्त्वपूर्ण अध्ययन किया है। इसमें दरभंगा जिला के नजदीकी गाँव को परिसीमित किया है। इन क्षेत्रों के 100 लोगो का चयन न्यायदर्श के रूप में लिया गया हैं, एवं स्वनिर्मित प्रशनावली द्वारा डाटा एकत्रित किया गया जिससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि दरभंगाा जिले के नज़दीकी गाँव में रहने वाले लोगो का बच्चों के प्राथमिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं होता नहीं होता है, एवं पारिवारिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है। उनमें इस शोध के द्वारा उनकी समस्याओं का निदान किया जा सकता है और उनमें जागरूकता लाई जा सकती है।

परिचय

शिक्षा वह प्रकाश है जो अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर कर मानव का जीवन के विभिन्न क्षेत्रों मे पथ प्रदर्शन करती है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ है- मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना। पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना अथवा साक्षरता शिक्षा नहीं है वह तो शिक्षा प्राप्त करने का मात्र साधन है। शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक एवं मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा के सर्वोत्तम अंश की अभिव्यक्ति से है। शिक्षा के द्वारा-मनुष्य का ज्ञान व योग्यता प्राप्त होती है। डॉ. राधाकृष्णन के शब्दों में, शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना चाहिए। इस कार्य के बिना शिक्षा अपूर्ण है। वस्तुत: मनुष्य सही अर्थ में मनुष्य तभी बनता है जबवह शिक्षित है। सही शिक्षा से ही संस्कारों का निमार्ण होता है और सही संस्कारो से ही समाज का निमार्ण होता है।

ठाकुर सिंह एवं श्रीवास्तव (1978) माता-पिता की शिक्षा स्तर कक्षा पहली के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है, जबकि कक्षा 5वीं के विद्यार्थियो के शैक्षिक उपलब्धि माता-पिता की शिक्षा के अतिरिक्त सामाजिक, आर्थिक स्तर और कई कारणों से प्रभावित होती है। ग्राम सेन एवं राईटर 1948 के अनुसार मंद बुद्धि वाले छात्रों की सामाजिक स्थिति उच्चबुद्धि वाले छात्र-छात्राओं की सामाजिक स्थिति बहुत अधिक आशापूर्ण अंतर नहीं था। आनंद 1973 हेबर 1956, बोनी 1955 एवं स्मिथ 1944 विश्वास 1975, बी. राधिका 1987, माथुर 1985 ने अपने शोध के आधार पर निम्न निष्कर्ष दिये है। जिनके अनुसार उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च, तथा निम्न सामाजिक स्थिति वाले छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि निम्न पायी गयी। सेन 1976 के अनुसार अशिक्षित एवं गरीब परिवार के अभिभावक शिक्षा के प्रति उदासीन हैं। निम्न वर्ग के लोग शिक्षा की अपेक्षा शारीरिक श्रम द्वारा धनार्जन को अधिक-महत्त्व देते हैं, जबकि उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले परिवार में शिक्षा के प्रति जागरूकता अधिक है।

अध्ययन का उद्देश्य-

1. दरभंगाा जिला के नजदीकी गाँव मे रहने वाले लोगों का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण ज्ञात करना।
2. प्राथमिक पाठशालाओं में बच्चों को प्रवेश लेने में आने वाली समस्याओं का ज्ञात करना।
3. बच्चों को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली समस्याओं को ज्ञात करना।

निष्कर्ष

दरभंगा जिला के नजदीकी गाँव में रहने वाले लोगों की आर्थिक स्थिति का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पर पड़ता है।

परिकल्पना ३

दरभंगाा जिला के नजदीकी गाँव में रहने वाले लोगों की पारिवारिक सामाजिक स्थिति का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

दरभंगाा जिला के नजदीकी गाँव में रहने वाले लोगों की पारिवारिक सामाजिक स्थिति का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है।

शैक्षिक महत्त्व

1. प्राथमिक विद्यालयो में बच्चों को प्रवेश लेने में आने वाली समस्याओं को ज्ञात किया जा सकेगा।
2. बच्चों को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली समस्याओं को ज्ञात किया जा सकेगाा।
3. बच्चों की प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली समस्याओं का निदान ज्ञात किया जा सकेगा।

References:-

1. शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश 2012, रिसर्च मेथोडोलॉजी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
2. शर्मा, रमा 2008, भारतीय शिक्षा की समस्याएं, एन. आर. बुक्स, नई दिल्ली।
3. ठाकुर सिंह एवं श्रीवास्तव 1978, माता-पिता की शिक्षा का प्राथमिकशाला के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
4. तिवारी 1990, विभिन्न सामाजिक स्तर के बालकों का प्राथमिक स्तर में अध्यनतर विद्यार्थियो की शैक्षणिक उपलब्धि केवल विज्ञान विषय का तुलनात्मक अध्ययन।

☆☆☆☆☆

श्यामकिशोर सिंह
सहायक प्राध्यापक

असमर्थी बालकों की व्यावसायिक शिक्षा का आलोचनात्मक अध्ययन।

प्रस्तावना

आज हमारे देश भारत में असमर्थी बालकों की संख्या विश्व के अन्य देंशों की तुलना में अधिक पाई जाती हैं। असमर्थी बालक प्रत्येक क्षेत्र में सामान्य बालकों की तुलना में पिछड़ जाते हैं। ऐसे बालक सदैव समाज में दया के पात्र समझे जाते हैं। अधिकतर निर्धन माता-पिता की संतान असमर्थतता से ग्रस्त होती हैं क्योकि गर्भाकाल के दौरान माता को उचित पोशण नहीं मिल पाता। सामान्य बालकों की तरह इन्हे भी व्यवसायिक शिक्षा देनी चादिए, ताकि से आत्म निर्भरता पूर्वक अपना जीवन यापन कर सके तथा इन्हें अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों पर निर्भर न रहना पड़े। इसके लिए सरकार को भी अधिक से अधिक व्यवसायिक प्रशिक्षण केन्द्र खोलने चाहिए।

असमर्थी बालकों हेतु व्यवसायिक शिक्षा प्रशिक्षण केन्द:-

1. अली यावर जंग राष्ट्रीय श्रवण बाधित संस्थान:-

   मुबई इस संस्थान की स्थापना श्रवण बाधित बालकों के लिए मुंबई में दिसम्बर सन् 1978 में की गई थी और इस संस्था ने अपना कार्य सन् 1981 से आरंम्भ किया। देश में इसके कई क्षेत्रीय केन्द्र भी हैं।

   बाधित युवकों के प्रशिक्षण के लिए सन् 1962 में हैदराबाद में प्रशिक्षण केन्द्र खोला गया और इस केन्द्र पर श्रवण बाधिता को व्यवसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाता हैं। जैसे:- लकड़ी के कार्य, बिजली का कार्य, सिलाई का कार्य, बुनाई का कार्य, फोटो ग्रफी आदि।

2. **राष्ट्रीय दृष्टिहीन विकलांग संस्थान:-**

   यह संस्था देहरादून में स्थित हैं। यह भी बालकों के सर्वांगीण कल्याण के लिए कार्यरत हैं। इस संस्थान के प्रयासों द्वारा नेत्रहीन व्यक्ति को प्रशिक्षित ही नही किया जाता बल्कि उसे रोजगार के क्षेत्र में पुनर्वासित किया जा रहा हैं। यह संस्थान नेत्रहीनों को प्रशिक्षण देकर रोजगार के लिए तैयार करता हैं।

   उन्हे गतिशील प्रशिक्षण देकर सड़कों व अन्य क्षेत्रों या स्थानों पर चलने फिरने योग्य बनाता हैं। इस संस्थान में टेलिफोन ऑपरेटर, बिजली की बाइंड़िंग, धातुकला आदि में विशेष तौर पर प्रशिक्षित करते हैं।

3. **ठाकुर प्रसाद शोध एवं पुनर्वास मानसिक रूपा से बाधित संस्थान हैदराबाद:-**

   इस संस्थान की स्थापना 1968 में की गई। इस संस्थान के अन्तर्गत निम्नांकित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की व्यवस्था की जाती हैं।

   1. मानसिक रूप से मंदित हेतु डिप्लोमा
   2. छोटे बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक निदान हेतु पाठ्यक्रम।

असमर्थी बालकों को चार भागों में विभाजित किया गया है:-

1. शारीरिक रूप से ग्रसित अथवा विकलांग बालक।
2. मानसिक मंदता से ग्रसित बालक।
3. सामाजिक बाधाओं से ग्रसित बालक।
4. बहु-बाधाओं से ग्रसित बालक।

असमर्थी बालकों पर सामाजिक प्रभाव:-

असमर्थी बालक वे बालक होते हैं, जो सामाजिक, आर्थिक तथा समस्याओं के कारण असमायोजित होते हैं और इनका सामांजस्य कठिन होता हैं। ये किसी के साथ जल्दी समायोजित नहीं होते। बल्कि कभी-कभी इनका व्यवहार आक्रामक,

अपराधियों जैसा या फिर संकोची हो जाता हैं। ऐसे बालकों को हमारा समाज भी शीध्रता से स्वीकार नहीं करता हैं। असमर्थी बालक भी सामान्य बालकों की भाँति खेलना चाहते हैं। प्यार चाहते हैं किन्तु सामान्य बालक उनके साथ खेलने में लज्जा अनुभव करते हैं। ऐसा करने से समाज में असमर्थी बालक स्वंय को हीन समझने लगते हैं।

असमर्थी बालकों पर मानसिक प्रभावः-

असमर्थी बालक के मन में घुटन, भय, चिंता, व्याकुलता आदि समाज द्वारा बहिष्कृत होने के कारण धर कर लेते हैं जिसके कारण बालक का व्यवहार उत्तेजित हो जाता हैं। ऐसे बालकों के व्यवहार में सामान्यतः उत्तेजना दिखाई पड़ती है। शरीर की किसी परेशानी में यह आंतरिक तनाव के कारण क्षमा के पात्र होते है। समाज जब इन्हें ठुकरा देता हैं तो ऐसी स्थिति में मानसिक तनाव उत्पन्न हो जाना एक स्वभाविक प्रक्रिया हैं। असमर्थी बालक बहुत जल्दी भावुक हो जाते हैं।

असमर्थी बालकों की विशेशताएंः-

1. असमर्थी बालक शारीरिक रूपा से अक्षम तथा निर्बल होते है।
2. विकलांग बालकों की मानसिक योग्यता एवं बुद्धि लब्धि सामान्य बालकों जैसी अथवा उनसे अधिक भी होती है।
3. असमर्थतता का दोश बालकों को शिक्षा प्राप्त करने में बाधक होता हैं।
4. असमर्थी बालक सामाजिक कार्यक्रमों से भाग नहीं लेते इनमें एकाकीपन की भावना विद्यमान रहती हैं।
5. असमर्थी बालक सामाजिक दृष्टि से भली-भाँति समायोजन नहीं कर पाते फलतः उनके साथियों तथा समाज के अन्य लोगों द्वारा वे उपहास के पात्र बनते हैं।
6. असमर्थी बालक अपनी असमर्थता कभी किसी न किसी दूसरें क्षेत्र में पूर्ण कर लेते हैं।
   जैसेः- किसी कलात्मक कार्य में प्रवीणता, संगीत में रुचि वाद-विवाद तथा अध्ययन में बहुत आगे होते है।

असमर्थी बालकों की पहचानः-

1. शारीरिक प्रकृति को देखकर भी पहचान की जा सकती हैं।
2. विकलांग बालकों की पहचान उनके व्यवहार से तथा चलने-फिरने, बैढ़ने-उठने से की जा सकती हैं।
3. इसके अतिरिक्त उनके कार्य करने की विधि, कार्य-क्षमता तथा कार्य के परिणाम आदि से भी उनकी पहचान की जा सकती है।

विकलांग्ता के प्रकारों की व्याख्या इस प्रकार से हैः-

1. **समाज में असुविधाजनक बालकः-**
   अधिकांश अध्यापकों को ऐसे बालकों का भी शिक्षण कक्ष में सामना करना पड़ता है जो कार्य के प्रति गंभीर नहीं होते। सावधान नहीं रहते और जीवन में उदासीन होते है। इनका बुद्धि स्तर सामान्य से कम होता है।
2. **संवेगात्मक रूप से विक्षिप्त बालकः-**
   शिक्षण संस्थाओं में सामान्य बालको के रूप में समझा जाता है। विक्षिप्त बालक में कुछ आंतरिक तनाव होता है। जो बालक के मन में घुटन, भय, चिंता व्याकूलता, आदि पैदा करता है। जिसके कारण बालक का व्यवहार उत्तेजित रहता है। ऐसे बालक की प्रवृत्ति तथा व्यवहार सामान्यता उत्तेजना दिखाई पड़ती है।
3. **अस्थि बाधित बालकः-**
   कुछ बालक विभिन्न प्रकार के अस्थि रोगों से बाधित होते है। ऐसे बालकों के शरीर के विभिन्न अस्थियों ठीक प्रकार से कार्य नहीं कर पाती है।
4. **बहुबाधित बालकः-**
   बहुबाधित का तात्पर्य बालक में एक से अधिक बाधिताओं से हैं। उदाहरणार्थ एक बालक दृष्टि बाधित तथा बधिर हो सकता है। अथवा दृष्टि बाधित के साथ-साथ अस्थि रोगों से बाधित बधिर तथा अस्थि बाधिता, मानसिक मंदित व वाणी बधिर आदि।
5. **बालक की विशिष्ट स्वास्थ्य संबंधी समस्याः-**
   इस क्षेणी में ऐसे बालक रखे जाते हैं जिनकी शारीरिक स्थिति सामान्य बालकों की अपेक्षा पर्याप्त रूप से कमजोर होती हैं। ऐसे बालक प्रायः चंचल नहीं होते है तथा उनमें कार्य के प्रति चुस्ती, फूर्ति का भी अभाव रहता हैं। ऐसे बालक प्रायः उदासीन दिखाई पड़ते है।

6. **दृष्टिहीन बालकों के प्रकारः-**

प्रमुख रूप से ऐसे बालक दो प्रकार के होते हैः-

1. **नेत्रहीनः-**

ऐसे बालक जो जन्म से या बाल्यावस्था से पूर्णतः अंधे होते है। इन्हे बिल्कुल दिखाई नहीं देता है।

2. **दुर्बल दृष्टि वालेः-**

दूसरे दृष्टिहीन बालक वे होते है जिसकी दृष्टि दुर्बल होती हैं। इनमें कुछ बालकों की पास की दृष्टि ओर कुछ बालकों की दूर की दृष्टि दुर्बल होती है।

विटामिन 'ए' की मात्रा अधिक देकर बालकों की दृष्टि दोश को दूर किया जा सकता है।

दृष्टि दोश वाले बालक-बालिकाओं की पहचानः-

दृष्टि दोश वाले बालकों में नेत्रहीन बालकों की तो आसानी से ही पहचान की जा सकती है। लेकिन दुर्बल दृष्टि वाले नेत्रहीन बालकों की पहचान के लिए उनकी चिकित्सा जाँच करायी जानी चाहिए। कुछ अभिभावक अपने बालकों की दृष्टि दोश को छिपाना चाहते हैं जो कि बालकों के साथ अन्याय हैं।

7. **अस्थिगम असमर्थी बालकः-**

ये बालक बुद्धि के कार्यों में अन्य बालाकों के समान होते हैं। ऐसे बालक मानसिक मंदित नहीं होते हैं। कोई कठिनाई नहीं होती। ऐसे बालकों की समस्या भावनात्मक अथवा व्यवहारिक होती हैं। इसका कारण मानसिक अघात भी होता हैं। लेकिन इसका मानसिक मंदित तो पूर्ण रूप से नहीं हैं।

8. **मानसिक मंदित बालकः-**

इस श्रेणी में वे बालक रखे जाते हैं जिनकी बुद्धि स्तर तथा सोचने समझने की क्षमता बहुत कम होती हैं तथा वे समाज के साथ समायोजन करने में असमर्थ होते हैं। मानसिक बाधित बालकों की विभिन्न क्षेणियों होती हैं। जैसेः- शिक्षा ग्रहण करने में अयोग्य मानसिक मंदित बालका व बालक है ना स्कूल के द्वारा शिक्षा के विभिन्न विशयों में कम मंदित होते है। ऐसे बालक में सामाजिक समायोजन की क्षमता बहुत कम होती हैं।

समस्या कथनः-

असमर्थी बालकों की व्यावसायिक शिक्षा का आलोचनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की सार्थकताः-

यदि किसी देश की भविष्य का देखना हो तो वर्तमान में उस देश के बच्चों की स्थिति को देखना चाहिए। बच्चे देश के भविष्य होते हैं। यदि हमें अपने देश का पूर्ण विकास करना है तो असमर्थी बालकों की अच्छी शिक्षा का पूवन्ध किया जाए।

अध्ययन के उद्देश्यः-

अनुसंधान एक तर्क पूर्ण बौद्धिक प्रक्रिया हैं। इसका उद्देश्य समस्या की ओर अग्रसर होना हैं। यह समस्या किसी विशिष्ट क्षेत्र से संबंधित हो सकती हैं।

अध्ययन की परिकल्पनाः-

परिकल्पना एक प्रकार की अनुमान पूरक मानसिक क्रिया हैं जिसके माध्यम से दो या दो से अधिक चरों के साथ संबंध निरूपित किए जाते हैं। लेकिन यह साधारण कोटि का अनुमान नहीं हैं। जिसे उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार निपटा जिया जाए। यह एक बुद्धिमता पूर्ण दंग से निरूपित ऐसा प्रखर अनुमान या अंदाज हैं। जिसमें समस्यात्मक परिस्थिति पर विचार करते समय चिंतन शील मस्तिक विकसित करता है।

शोधार्थी ने वर्तमान समस्या से संबंधित पूर्ववर्ती अनुसंधानों और उपलब्ध तथ्यों पर विचार विश्लेषण करने के उपरांत निम्न **परिकल्पनाओं का निर्माण किया हैः-**

1. असमर्थी बालकों तथा सामान्य बालकों को दी जानेवाली सुविधाओं में कोई विशेश अंतर नहीं हैं।
2. असमर्थी बालकों तथा सामान्य बालकों की व्यावसायिक शिक्षा में विशेश अंतर नहीं होता है।

अध्ययन का सीमांकनः शोध कार्य के परिसीमन का एक प्रमुख कारण यह है कि शोध कार्य स्वंय ही काफी विस्तृत हैं। अतः देश राज्य एवं छात्रों को परिसीमित किए बिना इस शोध कार्य का पूर्ण करना संभव नहीं हो सकता। शोधार्थी ने निर्धारित समय में अपना कार्य पूरा करने के लिए निम्न बिन्दुओं का सीमित किया हैंः-

प्रस्तुत लघु शोध दो विद्यालयों में किया गया हैं:-

1. शुभम् सृजन समावेशी विद्यालय मुजफ्फरपुर।
2. मनव विकास मंद बुद्धि विशष विद्यालय मुजफ्फरपुर

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. राधिका, विशिष्ट वर्ग के बालको की शिक्षा, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा
2. शानी, बी. एल., विशिष्ट बच्चों की शिक्षा, टंडन पब्लिकेशन, लुधियाना
3. शर्मा एवं सक्सेना, विशिष्ट शिक्षा का प्रारूपा आर. एल. बुक डिपो, मेरठ।
4. जैन डा. एस. बी., विशिष्ट बालकों की शिक्षा, जिया पब्लिकेशन लुधियाना।

☆☆☆☆☆

Teaching Learning Through Online

Chandra Bhusan Mishra
Asst. Prof.

Introduction

Modern age is the age of technology. There are several equipment around us to make our life easy and smart. In the age of the technology, the traditional ways of teaching-learning Lava lost their significance. The innovative teaching-learning process are expected to excate the teaching process more effectively and efficiently. It has become the need of time that a learner may learn anytime and anywhere. Online is the best option of learning faster and better. We must know that the demand time in the practice of better learning. Technology do many changes in a minate, so it is need that education and technology must go together. E-learning changed the scenario of education. It helps in teaching-learning process to deliver content effectively.

Online teaching-learning brings revaluation

Teaching-Learning through online is a simulated classroom via internet. It allows the learners to attend a class from anywhere in the world. Online education is a learning environment where the teachers and the student are septerated by time and space or both. They communicate via multimedia, Internet and videoconferencing. Online Education is made possible only by the e-antent development and use of ICI. In a online classroom student will be present with his teacher and follow learners, they will not present physically but connected to the classroom by via internet, everyone will be able to stase experience will other participants virtually.

In the recent era of globalization, technological advancement has increased dramatically in every sector including mainstream education. These advances have introduce new educational nomenclature i.e "On line Courses" " Virtual classroom", "virtual universities and cyberspace institution etc. Prafound investment in technology in this decode have given rise to a worldwide explosion of information many educational institutions have been mystified by this information chaos. They are driven by the goal to use newly found access to global data communication. This step will increase enrolment and will award a vast range of degrees through massive investments in distance education programmer.

Throwing light on the concept of on line teaching-learning, Professor marry Turnoff of New Jersey Institution of technology, USA line class is a web-based environment that allows you to participate in live training events without the need to travel. You listen to lectures, participate in late exercises, ask question and receive feedback just as you would do in a conventional classroom except you do it from the convenience of your desktop or anywhere you have an internet and phone connection. It saves the lossle, expense and Travel time to a training site.

In the view of mariceting "Students-customer" to take advantage of "fast universal access", "earn a degree in a short period of time" and other creative approaches that guarantee satisfaction and quick delivery of the degree of chrice. Mrreover, in the fast growing competition in the job mancet, these have been increasing demands for specialists, increasing awareness as well as demand for higher education, shortage of qualified teachers. On line class has taken a lead role in teaching-learning process generically, the Online is a teaching and learning environment tacted within a computer mediated communication system. It consists of asset of group communication and work "spaces" and facilities that are constructed

in software. Online learning environments are lugely diverse in size, capability and services affeered and can cater for individual ranging in ages and special needs.

A online classes environment successfully mixes up different media inputesi.e (a) face to face plus virtual classroom which can vary from adding system use to enrich on-campus courses conducted to traditional means (b) virtual classroom as the role means of delivery, with its use of print media in the form of text books or course notes and (c) multi-media i.e virtual classroom plus video, audio. Thus, there is a move toward multi-media based interactive learning process and computer assisted instructional system. In Online teaching-learning teachers and student interact via the internet. If allows online interactive via the internet. It allows online interactive collaboration between student and teachers. Activites in online classes focus on learner. It is an alternative approach to the traditional instructor based teaching-learning process. Students enroll in courses, do homework and interact with students and teachers. Teachers manage the learning process through a learning management system, address question, give feedback, evaluate, home-work etc.

Online teaching-learning is unlike the traditional classroom. In fact online teaching-learning schedule is whatever time we want it to be.

Online teaching-learning provide a dynamic learning platform to the learner. It has innumerable advantages and the most vital of interaction between teachers and students and no sense of peer process.

Teacher Education and Online classes

Online classes has two modes, namely synchronous and Asynchronous. In synchro us class is online/ live where teacher educator and students can meet on are platform. Teacher educator delivers their lecture through software. Teacher educator gives all students login id so that student will enable to access software. All teaching-learning materials are already upwarded by teacher educator on software white attending lecture students can ask question is teacher educator through chat facility etc. Teacher can solve their problem by giving answer or writing in chat/massaging

Asynchronous made of teaching-learning givers teacher educator and student offline platform. Teacher educator upload all their teaching videos on website. Students can download concern material any-time and from anywhere students can access videos and sent feedback or questions to teachers educator through e-mail or massaging. Teacher educator will give answer of the question through email whenever they read questions.

Conclusion-

NCTE is changing teacher education courses/curriculum/content rapidly. Teacher education courses have been changed drastically. Teacher educators were oriented to draff syllabus/curriculum accordingly. They must able to delivers content through digital mode. We have global completion. Policy makers must focus on the need of student. It should be included in the now Education policy.

Reference

1. Essentials of Education Technology-Innovatens in Teaching-learning. J.C Aggarwal
2. The virtual Compus – Gerold C. and van Dusen.
3. E-Learning in India: Initiatives and Issues:-9

☆☆☆☆☆

नन्देश कुमार ठाकुर
सहायक प्राध्यापक

पुरुषार्थों की प्रासंगिकता

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति मानव जीवन के चार उद्देश्य बताए गए हैं। इन्हें पुरुषार्थ कहा गया है। पुरुषार्थ चार हैं-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन चारों का सम्यक् पालन करने से मानव जीवन सुखी, समृद्ध और कल्याणकारी होता है। समाज में चारों ओर शान्ति और उत्साह का वातावरण बनता है। धर्म, अर्थ और काम को त्रिवर्गश कहा गया है। धर्म को प्राथमिकता दी गई है। अन्य पुरुषार्थों की सिद्धि के लिए मूल में धर्म का होना अनिवार्य है। अन्यथा, अभीष्ट की प्राप्ति नहीं हो सकती।

अध्ययन का उद्देश्यः-

प्रस्तुत शोधपत्र में हमने भारतीय संस्कृति और दर्शन में वर्णित पुरुषार्थों की वर्तमान समाज जोड़ने का प्रयास किया है। इसके द्वारा वर्तमान युवा पीढ़ी अपने को अनुशासित और संयमित रखते हुए अपनी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जा का सम्यक् उपयोग कर सकेगी। हमारा उद्देश्य वर्तमान पीढी को प्राचीन भारतीय परम्परा, रीति-रिवाज और संस्कारों से परिचित कराना है।

शोध-पद्धतिः-

प्रस्तुत शोधपत्र हेतु शोधकर्ता की शोधपद्धति ऐतिहासिक, समालोचनात्मक और व्याख्यात्मक रही है। ज्ञात तथ्यों तथा पूर्ववती लेखकों के विचारों तथा भारतीय संस्कृति के मूल ग्रन्थों का अध्ययन कर उनसे प्राप्त सामग्री का संचयन और उनका वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण किया गया है। शोध अध्ययन का सबसे महत्त्वपूर्ण घटक, अध्ययन की सामग्री और विषयवस्तु होती है। इस विषय के अध्ययन हेतु प्राथमिक स्रोत के रूप में प्राचीन भारतीय धर्मशास्त्रों में सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। द्वितीयक स्रोत के रूप में अनेक भारतीय और अन्य लेखकों के अध्ययन और कार्य भी उपलब्ध हैं। प्रस्तुत शोध में इन सबका सम्यक् उपयोग किया गया है।

साहित्यावलोकनः-

''पुरुषार्थों की प्रासंगिकता'' विषय पर किए गए इस शोध का उद्देश्य तथा शोध पद्धति का विवरण प्रस्तुत करते हुए इस विषय पर लिखे गए साहित्य का अवलोकन, विश्लेषण और मूल्यांकन किया गया है।'श्रीमद्भगवद्गीता' तथा आचार्य वात्स्यायन का कामसूत्र हमारे अध्ययन की प्रमुख स्त्रोत सामग्री है। इसके अतिरिक्त जयशंकर मिश्र की पुस्तक प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास (बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्रेमचन्द मार्ग, राजेन्द्र नगर, पटना-800016 त्रयोदश संस्करण, दिसम्बर, 2013), अभिनव सत्यदेव और डॉ. बाँकेबिहारी मणि त्रिपाठी की पुस्तक प्राचीन भारतीय संस्कृति के मूल तत्व (मूलचन्द एण्ड ब्रदर्स, चौक, फैजाबाद, प्रथम संस्करण, 1000), कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव की पुस्तक प्राचीन भारत का संस्कृति तथा इतिहास (यूनाइटेड बुक डिपो, 21. यूनीवर्सिटी रोड, इलाहाबाद- 211002, चतुर्थ आवृति, 1995) तथा ए.एल. बाशम की पुस्तक अद्भुत भारत (संशोधित हिन्दी संस्करण, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा-282003) आदि सामग्री का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है।

पुरुषार्थों की प्रासंगिकता

मानव जीवन के आध्यात्मिक, भौतिक और नैतिक उन्नति के निमित्त पुरुषार्थों का प्रतिपादन किया गया है। भारतीय विचारकों के अनुसार भौतिक सुख ही सब कुछ नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक सुख अधिक महत्त्वपूर्ण है। भारतीय शास्त्रकारों ने मनुष्य तथा समाज की उन्नति के निमित्त जिन आदर्शों का प्रतिपादन किया उन्हें 'पुरुषार्थ' कहा गया। पुरुषार्थ, मानव तथा समाज के सम्बन्धों की व्याख्या करते हैं, उन्हें नियंत्रित तथा नियमित करते है। भारतीय संस्कृति यह स्वीकार करती है कि मनुष्य तथा समाज की उन्नति के लिए भौतिक सुख सुविधाओं के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त की जा सकती है। और तो और, ये दोनों एक दूसरे की प्राप्ति में साधक है, बाधक नहीं।

भारतीय और पाश्चात्य दोनों विचारक इस बात पर सहमत हैं कि मूल प्रवृत्तियों के मामले में मनुष्य और पशु दोनों एकसमान है। आहार, निद्रा, भय और मैथुन जैसी मूल प्रवृत्तियों मनुष्यों और पशुओं में समान हैं। मनुष्यों को पशुओं से अलग करने वाला केवल एक ही तत्व है और वह है 'धर्म'।

आहारनिद्राभयमैथुन्‌च सामान्यमेतद्‌ पशुभिर्नराणाम्‌।
धर्मो हि तेशामधिकोविशो धर्मेण हीना: पशुभि: समाना।।

'धर्मेण हीना: पशुभि: समाना: से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि धर्म से रहित व्यक्ति पशु के समान होता है। इसी प्रकार एक स्थान पर कहा गया है जिनके पास न विद्या है, न तप है, न दानशीलता है, न ज्ञान है, न शील है, न गुण है और न ही धर्म है, वे व्यक्ति इस पृथ्वी के भार स्वरूप मनुष्यरूप में विचरण करने वाले पशु ही हैं।

इसी प्रकार पाश्चात्य विचारकों में किसी ने मनुष्य को राजनीतिक प्राणी, किसी ने जैविक प्राणी किसी ने औजार बनाने वाला प्राणी, किसी ने सामाजिक प्राणी तो किसी ने आर्थिक प्राणी कहा है। इसीलिए मानव उत्थान के लिए पुरुषार्थो का प्रतिपादन किया गया है। पुरुषार्थ चार है-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। अब हम क्रमश: इनके स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डालेंगे।

1. **धर्म**- भारतीय संस्कृति में धर्म को प्रथम पुरुषार्थ माना गया है। धर्म की व्याख्या अनेक रूपों में की जाती है। धर्म की सर्वोत्तम परिभाषा हमें महर्षि कणाद के 'वैशेषिक सूत्र' में प्राप्त होती है। महर्षि ने धर्म का लक्षण इस प्रकार बताया है-जिससे अभ्युदय (लौकिक उन्नति) और नि:श्रेयस्‌ (पारलौकिक उन्नति या कल्याण) की सिद्धि हो वही धर्म है। मनुस्मृति में वेद, स्मृति, सदाचार और आत्मतुष्टि- ये चार धर्म के स्रोत कहे गये है। वहीं एक अन्य स्थान पर धर्म के 10 लक्षण इस प्रकार बताए गए हैं धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोध न करना।

   महाभारत में कहा गया है कि जो कुछ भी धारण किया जाता है वही धर्म है-धार्यते इति धर्म:। धर्म व्यक्ति को नियंत्रित करता है तथा समाज के प्रति उसके कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह आद्योपान्त मनुष्य के साथ रहने वाला तत्व है। इसी के माध्यम से व्यक्ति अपना सर्वांगीण विकास करता है। इसके महत्त्व को देखते हुए इसे कर्तव्यों का संग्रह भी माना गया है। क्या करना है और क्या नहीं करना है इसकी पहचान धर्म के द्वारा ही होती है।

2. **अर्थ**- द्वितीय पुरुषार्थ के रूप में अर्थ की महत्ता का प्रतिपादन भारतीय मनीषियों ने किया है। अर्थ के अन्तर्गत समस्त भौतिक समृद्धि समाहित है। इसमें न केवल धनोपार्जन बल्कि समस्त प्रकार की सम्पत्ति का संग्रह व उपभोग शामिल है। अर्थ के अन्तर्गत समस्त सुख सुविधा के साधन समाहित हैं। कृषि, पशुपालन, व्यापार और वाणिज्य आदि अर्थ-प्राप्ति के साधन हैं। प्राचीन विचारकों से लेकर आधुनिक विचारकों तक सभी इसकी महत्ता स्वीकार करते हैं। बिना आर्थिक समृद्धि के किसी भी प्रकार की आनन्दानुभूति सामान्यत: नहीं हो सकती। वास्तव में अर्थ या धनही परम धर्म है। धनवान व्यक्ति ही इस दुनिया में वास्तविक जीवन जीते हैं। जिनके पास धन नहीं है वे वास्तव में मरे हुए के समान हैं। जिसके पास धन है वही व्यक्ति कुलीन है। वही शास्त्रों का ज्ञाता है, वहीं गुणों का ज्ञाता है, वही अच्छा बनता है और वही दर्शनीय है। सभी गुण धन पर ही आश्रित होते है।' व्यक्ति की नष्ट न हुई वही इन्द्रियाँ होती है, वही नाम होता है, वही अप्रतिहत बुद्धि होती है और वही वाणी होती है, फिर भी धन की गमी से रहित पुरुष क्षण भर में बदल जाता है, यह बड़ा विचित्र है। अर्थात्‌ यह व्यक्ति और उसका स्वभाव बदल जाता है। प्रसिद्ध नाटककार शूद्रक ने धन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि निर्धन व्यक्ति, दरिद्रता और मृत्यु में से मृत्यु का ही वरण करेगा न कि दरिद्रता का क्योंकि मरने में कम कष्ट होता है और दरिद्रता अनन्त दु:खों को देने वाली होती है। दरिद्रता से व्यक्ति लज्जा का अनुभव करता है. लज्जित व्यक्ति तेजरहित हो जाता है, तेजहीन व्यक्ति तिरस्कृत होता है, तिरस्कार से ग्लानि होती है, ग्लानियुक्त व्यक्ति शोक से संतप्त होता है, शोकाकुल व्यक्ति का विवेक नष्ट हो जाता है, और विवेकहीन व्यक्ति नाश को प्राप्त होता है। इस प्रकार दरिद्रता सभी आपत्तियों की जड़ है।

   शास्त्रकारों ने धनोपार्जन के उपाय भी बताए हैं। साथ ही सावधान भी किया है कि पापपूर्ण तरीके से अर्जित धन नरक का मार्ग प्रशस्त करता है। इसलिए धन इस प्रकार कमाया जाय जो धर्मयुक्त हो और जिससे किसी को कष्ट न हो।

3. **काम:**- काम को तृतीय पुरुषार्थ माना गया है। काम का अर्थ मनुष्य की सहज इच्छाओं और प्रवृत्तियों से है। इसी के वशीभूत होकर व्यक्ति सन्तानोत्पत्ति करता है, गृहस्थ जीवन के विविध आनन्दों को भोगता है। इसी काम से एक दूसरे के प्रति आकर्षण बना रहता है। इसी काम से कला का जन्म होता है तथा सृष्टि का विकास होता है। 'काम' एक व्यापक शब्द है जिसमें मनुष्य की समस्त इच्छाएं, कामनाएं, वासनाएं, आवश्यकताएं और काम प्रवृत्तियाँ समाहित हैं। भारतीय शास्त्रकारों ने धर्म और अर्थ के विरुद्ध काम के सेवन पर प्रतिबन्ध लगाया है अन्यथा समाज में अव्यवस्था

फैल सकती है।' काम का उच्छृंखल आचरण व्यक्ति और समाज दोनों के लिए हानिकारक है।

मनुष्य की पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं- कर्ण, त्वचा, आँख, जिह्वा तथा नासिका शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध ये पाँच क्रमशः इनके विषय है। इन्द्रियाँ अपने विषयों पर स्वतः संचरण करती है। शरीर रूपी रथ में इन इन्द्रियों को अश्व कहा गया है। इनको वश में करने वाले मन को लगाम कहा गया है। मन को बुद्धि द्वारा प्रेरणा मिलती है, यही बुद्धि, रथ का सारथी है। बुद्धि से भी श्रेष्ठ विवेक या परमतत्व-ज्ञान है जो कि स्वयं रथ का रथी है। उसी के अनुसार जीवन संचालित होता है। विषयों का निरन्तर चिन्तन करने से उनमें आसक्ति उत्पन्न हो जाती है, आसक्ति से काम की उत्पत्ति होती है, काम की पुर्ति में बाधा होने पर क्रोध उत्पन्न होता है, क्रोध से विवेकशून्यता (संमोह) आती है. विवेशून्यता से स्मृतिविभ्रम होता है. स्मृति के नष्ट हो जाने से बुद्धि का नाश हो जाता है जिससे व्यक्ति स्वयं नष्ट हो जाता है। इसलिए कल्याण के आकांक्षी व्यक्ति को चाहिए कि वह सर्वप्रथम इन्द्रियों को अपने वश में कर ले। इस संदर्भ में मुझे लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध का वह प्रसंग याद आता है जिसमें दोनों योद्धाओं के आमने-सामने के वार्तालाप में मेघनाद एक बार कहता है कि हे लक्ष्मण! तू मुझसे क्या युद्ध करेगा, मै तो इन्द्रजीत हूँ। इस पर लक्ष्मण नेकहा कि मेघनाद! तू इन्द्रजीत है और मैं इन्द्रियजीत हूँ। परिणाम सर्वविदित है- युद्ध में लक्ष्मण की विजय।

जिस प्रकार कछुआ अपने सभी अंगों को अपने कवच के अन्दर समेट लेता है उसी प्रकार जो व्यक्ति अपनी समस्त इन्द्रियों को अपने वश मे कर लेता है वही 'स्थितप्रज्ञ' कहा जाता है और वही परमशान्ति को प्राप्त करता है। कामनाओं की कामना करने वाले व्यक्ति का कल्याण नहीं होता।

वात्स्यायन ने कामसूत्र के आरम्भ में ही निर्देश दिया है कि धर्म और अर्थ की सिद्धि के उपरान्त ही काम में प्रवृत्त होना चाहिए अन्यथा परिणाम विपरीत होते हैं। कामसूत्र के साधारण अधिकरण के द्वितीय अध्याय में त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ और काम) के सेवन का सम्यक वर्णन किया गया है। यहाँ कामं च यौवनेश कहकर यौवनकाल में ही काम के सेवन की बात कही गयी है। बाल्यकाल में विद्यार्जन, युवावस्था में कामपूर्ति तथा वृद्धावस्था में धर्म और मोक्ष का सेवन करने का आदेश आचार्य वात्स्यायन ने दिया है।'वहीं पर तृतीय अध्याय में आचार्य ने 64 कलाओं को सीखने और उनके अभ्यास का आदेश सभी स्त्रियों और पुरुषों को दिया है। इन कलाओं के नाम यजुर्वेद में भी प्राप्त होते हैं। इस प्रकार शारीरिक और भौतिक सुख की सिद्धि के सम्यक उपाय शास्त्रकारों ने किए हैं। यह जीवन का प्रथम पक्ष है। इसकी तृप्ति से ही व्यक्ति अध्यात्म और आत्मकल्याण की ओर अग्रसर तथा उसमें प्रवृत्त होता है।

4. **मोक्ष**- व्यक्ति के जीवन का परम उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है। विश्व के विभिन्न दर्शनों में इसे विभिन्न नामों से जाना जाता है। जैसे-बौद्ध दर्शन में निर्वाण, जैन दर्शन में कैवल्य, वेदान्त में आत्मसाक्षात्कार, बन्धन-मुक्ति तथा शिवत्व की प्राप्ति आदि। त्रिवर्ग पुरुषार्थों के सम्यक सेवन से मोक्ष की प्राप्ति स्वयमेव होजाती है। गीता में निष्काम कर्म को मुक्ति का साधन बताया गया है-**"तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर। असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः॥"** (गीता 3.19) साथ ही ज्ञानयोग और भक्तियोग की चर्चा भी समान रूप से की गयी है। भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा है- सभी धर्मों का परित्याग कर जो मेरी शरण में आ जाता है उसे मैं समस्त पापों से मुक्त कर देता हूँ। ऐसे भक्त का मोक्ष हो जाता है।

इस प्रकार भारतीय संस्कृति में जीवन के प्रति पूर्ण तत्परता दिखाई देती है। जीवन के समस्त पक्षी और आवश्यकताओं के अनुसार समस्त उपाय विद्यमान हैं। जहाँ एक और अर्थ और काम की सिद्धि के उपाय हैं वहीं धर्म को इनका नियन्ता बनाया गया है जिससे समाज में अव्यवस्था उत्पन्न न हो। मनुष्य और समाज का एक साथ उत्थान ही हमारा लक्ष्य है। समाज के सम्यक विकास के लिए पुरुषार्थ आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि आरम्भ में थे। इनके सम्यक सेवन से व्यक्ति और समाज का स्वयमेव कल्याण होगा।

संदर्भ सूचीः-

1. हितोपदेशम् 1.25
2. येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
   ते मर्त्यलोके भुविभारभूताः मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।। नीतिशतक. 13
3. अरस्तू
4. फ्रायड
5. बेंजामिन फ्रैंकलिन
6. रूसो
7. आल्विन टॉफलर

8. यतोखभ्युदयनि श्रेयस् सिद्धिः स धर्मः।

9. वेदरू स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।

एतच्चतुविधं प्राहुः साक्षात्धर्मस्य लक्षणम्।।

10. धृतिः क्षमा दमोखस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्मलक्षणम।। मनुस्मृति 6.92

11. महाभारत

12. यस्यास्ति वित्त स नर कुलीनः

स पण्डितः स च श्रुतवान् गुणज्ञः।

स एव वक्ता स च दर्शनीयः सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते।। नीतिशतकम्

13. मृच्छकटिकमं 1.11

14. मृच्छकटिकम 1.14 15 महाभारत

16. मनुस्मृति। 4.176 17 कठोपनिषद्

18. श्रीमदभगवद्गीता द्वितीय अध्याय 62.63

19. वात्स्यायन का कामसूत्र- प्रथम अधिकरण

20. कामसूत्र में वर्णित 64 कलाएं-गीत, वाद्य, नृत्य, आलेख्य (चित्रकला), विशेषकच्छेद्य (भोजपत्र को तिलक के आकार का काटना), चावल और फलों से रचना, पुष्पास्तरण, दशनवसनांगराग, मणिभूमिकाकर्म, शयनरचना, जलक्रीडा, जलाताडन, चित्रयोग, माल्यग्रथन,शेखरकापीडयोजना, नेपथ्यकला. कर्णपत्रभंगकला, गन्धयुक्ति, भूषणयोजनकला, ऐन्द्रजाल, कौचुमारयोग, हस्तलाघव, पाकशास्त्र, पानकरसरागासवयोजन, सूचीवानकर्म, सूत्रक्रीडा. वीणाडमरूवाद्यकला, रचना) (अन्त्याक्षरी), दुर्वाचकयोग (कठिन पुस्तकवाचन, नाटकाख्यायिकादर्शन प्रतिमाला प्रहेलिका, काव्यवसमस्यापूरणकला, पटिकावेत्रवानविकल्प, तक्षकर्म, लक्षण, वास्तु रूपपरत्नकला, धातुकला, मणिरत्नाकरदुशन उत्सादन संवाहन केशमर्दन, अक्षरमुष्टिकाकथन, वृक्षायुर्वेदयोग, मेषकुक्कुटलावकयुद्धकला, शुकसारिकाप्रलापन, देशभाषाविज्ञान पुष्पशकटिका निमित्तज्ञान, (गुप्तभाषाज्ञान). यन्त्रमातृका, सम्पादकला, म्लेच्छित-विकल्प आशुकाव्यकला, अभिधानकोशकला, छन्दोज्ञान क्रियाकल्प, छलितयोग, वस्त्रगोपन द्यूतविशेषकला, आकर्षक्रीडा, बालक्रीडनक,वैनयिकीविद्या, वैजयिकीविद्या और व्यायामिकीविद्या। 21 सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुचः।। श्रीमद्भगवद्गीता। 18.66

☆☆☆☆☆

पर्यावरण जागरूकता

डॉ. शम्भु कुमार शर्मा
सहायक प्राध्यापक

भूमिका

पर्यावरण मनुष्य के अस्तित्व का प्रमुख आधार है। पर्यावरण न हो तो मनुष्य का अस्तित्व संभव नहीं है। पर्यावरण मनुष्य के लिए कई प्रकार से उपयोगी होता है, उसके कई घटक होते है जैसे- जंगल, जमीन, वर्षा बहुत ही उपयोगी है। इसलिए पर्यावरण को स्वच्छ नहीं रखा गया तो वह व्यक्ति और समाज के लिए बहुत ही उपयोगी है। इसलिए पर्यावरण को स्वच्छ नहीं रखा गया तो वह व्यक्ति और समाज के लिए बहुत ही नुकसानदायक हो सकता है।

पर्यावरण का अर्थ

पर्यावरण शब्द परि + आवरण के मेल से बना है। परि + आवरण का अर्थ है– चारों ओर से तथा आवरण का अर्थ है 'ढके हुए। अर्थात पर्यावरण वह सब कुछ है जो हमें चारों ओर से ढके हुए हैं और जो हमारे दैनिक जीवन पर प्रभाव डालता है। पृथ्वी पर रहने वाला प्रत्येक प्राणी अपने अस्तित्व के लिए अनेक प्रदार्थों एवं घटनाओं से प्रभावित होता है।

पर्यावरण प्रदूषण:-

विज्ञान सलाहकार समिति ने पर्यावरण प्रदूषण को निम्न रूप में परिभाषित किया है:- "मनुष्यों के कार्यों द्वारा ऊर्जा प्रारूप विकिरण प्रारूप : भौतिक एवं रासायनिक संगठन तथा जीवो की बहुलता में किये गये परिवर्तनों से उत्पन्न प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रभावों के कारण आसपास के पर्यावरण में अवांधित एवं प्रतिकुल परिवर्तनों को प्रदूषण करते है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह विदित होता है कि प्रदूषण की परिभाषा के तीन मुख्य आधार है।

1. मानव कियाओं द्वारा उत्पन्न अपशिष्ट पदार्थ तथा उनका निपटान
2. प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अपशिष्ट पदार्थों की निपटान से उत्पन्न क्षति एवं हानि।
3. इस क्षति का लोगों पर प्रभाव।

प्रदूषण स्त्रेत के आधार पर प्रदूषण को निम्न भागों में बाधा जा सकता है।

I. नाभिकीय प्रदूषण
II. कीटनाशक प्रदूषण
III. ध्वनि प्रदूषण
IV. तापीय प्रदूषण
V. प्लास्टिक प्रदूषण
VI. समुद्री प्रदूषण
VII. धुँआ प्रदूषण
VIII. धुंध प्रदूषण या कुहरा प्रदूषण
IX. रासायनिक प्रदूषण
X. औद्यौगिक प्रदूषण
XI. दवाई प्रदूषण
XII. तेल द्वारा प्रदूषण
XIII. जनसंख्या प्रदूषण
XIV. अम्ल वर्षा प्रदूषण

XV. सार्फ तथा साबुन द्वारा प्रदूषण आदि।

प्रकृति के विभिन्न अवयवों में अवरोध उत्पन्न होने से अनेक प्रकार के प्रदूषणों का जन्म होता है। अपने दैनिक जीवन में मनुष्य को सामान्यत: निम्न प्रकार के प्रदूषणों का सामना करता है।

I. वायु प्रदूषण

II. जल प्रदूषण

III. ध्वनि प्रदूषण

IV. नाभिकीय प्रदूषण

V. मृदा प्रदूषण

पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण शिक्षा का मुख्य उद्देश्य यह है कि इससे व्यक्ति और समाज की जटिल संरचना को समझ सके और उसके साथ सद्भावना बनाए रखें। पर्यावरण शिक्षा समाज को पर्यावरण के सम्बन्ध में जागरूक बनाती है समस्याओं को समझने हल करने और पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए प्रेरित करती है। यह लोगों को पर्यावरण नियोजन में सक्षम बनाति है ताकि वह अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग पर्यावरण को स्वच्छ रखने में दे सके। पर्यावरण शिक्षा पर कोई एक सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। पर्यावरण शिक्षा पर सन्–1970 में हुए सेमीनार में पर्यावरण शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया गया है।

''पर्यावरण शिक्षा दायित्वों को जानने तथा विचारों को स्पष्ट करने की वह प्रक्रिया है, जिससे मनुष्य अपनी संस्कृति और जैव भौतिक परिवेश के मध्य अपने आपकी संबद्धता को पहचानने और समझने के लिए आवश्यक कौशल तथा अभिवृत्ति का विकाश कर सके पर्यावरण, शिक्षा पर्यावरण की गुणवत्ता से संबंधित प्रकरणों के लिए व्यवहारिक संहिता निर्माण करने तथा निर्णय लेने की आदत को भी व्यवस्थित करती है।

अत: आवश्यकता इस बात की है कि हम शिक्षा के द्वारा लोगों को उनके पर्यावरण एवं उसमें होने वाले प्रदूषण के बारे में जानकारी दे। उनमें व्यापक चेतना जाग्रत करें जिससे वे ऐसा कोई भी कार्य न करे जिससे हमारा पर्यावरण अशुद्ध होता है।

☆☆☆☆☆

आदित्य प्रकाश
सहायक प्राध्यापक

दीनदयाल उपाध्याय का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद-एक दृष्टिकोण

भूमिका

कहा जाता है कि भारत विश्व संस्कृति की उद्‌गम स्थली है, यह हिमालय की तलहटियों में से होती हुई संपूर्ण विश्व में फैली-फैली हम संस्कृति को मनुष्य के चित की खेती भी कहते हैं। संस्कृति यदि मनुष्य की चित की खेती है, तो संस्कृति के प्रति भावनात्मक और आत्मिक प्रगाढ़ता व् भक्तिभाव का होना भी स्वाभाविक है। भारतीय संस्कृति मनुष्य के चित को उचित बनाती है, सृष्टि के एकात्मकता से जोड़ती है। भारतीय संस्कृति विविधतता से परिपूर्ण है, परन्तु फिर भी इसमें एकात्मकता के दर्शन सहज ही हो जाता है। विविधता इसका सौंदर्य है। संस्कृति के प्रति भक्तिभाव भी, अपनी परम्परा की सुंदरता है। राष्ट्रभक्ति की भावना का निर्माण करने और उसको साकार रूप देने का श्रेय भी राष्ट्र संस्कृति को ही है। तथा यही राष्ट्र से संकुचित सीमाओं को तोड़ कर मानव को एकात्मकता का अनुभव करवाती है। राजऋषि पंडित दीनदयाल उपाध्याय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रवर्तक हुए। दीनदयाल उपाध्याय ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को सार्वभौमिक व् समग्रतावादी रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा था, "भारत विश्व में महाशक्ति अपनी सांस्कृतिक परम्परा व् राष्ट्रवाद के कारण बनेगा।" उन्होंने कहा था, "भारत को जानने के लिए भारत की संस्कृति को जानना होगा।"

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत आलेख में व्याख्यात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। दीनदयाल उपाध्याय के विचारों और दृष्टिकोण जो समग्र है, पर आधारित यह आलेख है।

उदेश्य

1. आलेख का उदेश्य दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की महत्ता, समग्रता को जानना।
2. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के संबंध में दीनदयाल उपाध्याय के दृष्टिकोण को उजागर करना।

दीनदयाल उपाध्याय के विचार विचार

दीनदयाल उपाध्याय के विचार सनातन के अस्तित्व, निज संस्कृति और सभ्यता के साथ घनिष्ट संबंध रखते हैं।दीनदयाल जी ने भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विचार रखा। उन्होंने कहा, राष्ट्रीयत्व के विकास में संदेश का महल सबसे अधिक होता है। अत: हर युग में स्वत: ही अपनी सम्पूर्ण मातृभूमि के दर्शन हो, ऐसा प्रयत्न किया गया। किसी भी मत अपना सम्प्रदाय का मानने वाले क्यों न हो, उनके सम्मुख हिमालय से कन्याकुमारी तक आसिन्धु -सिन्धुपर्यंत भारत का चित्र रहता था। प्रक संप्रदाय के आचार्यो ने यही प्रयत्न किया कि उनके संप्रदाय के लोग सम्पूर्ण भारत को पवित्र माने। इतना ही नहीं, भारत की इस एकता का प्रत्यक्ष ज्ञान कर सके, इसलिए प्रत्येक संप्रदाय में तीर्थयात्रा की पद्धति प्रचलित हुई। ये तीर्थ तो भारत के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक बिखरे हुए है। सूर्य के बारह मंदिर, गणपत्यों के द्वादश विनायक, शैवों के अठारहो ज्योतिलिंग, शाक्तों के इक्यावन शक्ति क्षेत्र तथा वैष्णवों के अगणित तीर्थ क्षेत्र सम्पूर्ण भारत में बिखरे पड़े हैं।. मर्यादा पुरुषोत्तम राम की दक्षिण यात्रा ने उत्तर-दक्षिण का जो गठबंधन किया, वह जनसाधारण के आचार-विचार और भावना में अटूट हो गए। महाभारतकार ने इसी एकता को दिखने के लिए एक बार नहीं, बार बार भारत के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक अत्यंत भावुकतापूर्ण वर्णन किया है। पुराणकारों ने भारत की भूमि के कण कण की पवित्रता का गुणगान किया है। ''दीनदयाल उपाध्याय ने जिस दृष्टिकोण से भारत भूमि को इसकी विशेषताओं के साथ पिरोकर प्रस्तुत किया है, इस आधार पर हम अनुभव कर सकते हैं कि दीनदयात उपाध्याय की अपनी संस्कृति, राष्ट्र भाषा, धर्म की मौलिकता के प्रति प्रगाढ़ता किसी परिचय की मोहताज नहीं। प्राचीन भारतीय पारम्परिक शब्दों के प्रयोग के बारे में दीनदयाल जी विशेष आग्रह रखते थे। दीनदयाल जी द्वारा प्रयुक्त कुछ परिभाषाओं एवं कल्पनाओ का अधिकृत स्पष्टीकरण 'देशिक शास्त्र' ग्रन्थ में पाया जाता है। 'चिति, 'विराट'

आदि संज्ञाओं का विवरण उसमें मिलता है। अधिलवण अवधारणा भी ऐसी ही एक परिवार नियोजन विषयक (दैशिक शास्त्र की) पारिभाषिक संज्ञा है। अर्थायाम भी देशिक शास्त्र का ऐसा ही एक शब्द है जिसमें सम्पति का आभाव एवं प्रभाव दोनों न रहे. ऐसी अर्थव्यवस्था को उसने "अर्थायाम" कहा गया है। इस ग्रन्थ के लेखक बद्रीशाह ठुलधरिया थे। दैशिक शास्त्र के अतिरिक्त अन्य शास्त्रों से भी कुछ पारिभाषिक शब्द पंडित दीनदयाल जी ने लिए थे और उनका प्रयोग वे अभ्यास शिविरों में करते थे। उदाहरणार्थ 'अदेयमातृकाकृषि' तथा 'अपरमातृक उद्योग' पहले शब्द का पारिभाषिक अर्थ है, ऐसी खेती जो वर्षा पर निर्भर नहीं (नहरों आदि सिंचाई व्यवस्था के कारण) ऐसे उद्योग को जो उत्पादन प्रक्रिया के लिए अन्य देशों पर निर्भर नहीं रहते, उपर्युक्त दूसरी संज्ञा की प्राप्त थी। आधुनिक काल में भी उपर्युक्त होने वाले पुराने पारम्परिक शब्दों एवं संज्ञाओं को फिर से प्रचलित करने की और दीनदयात जी का रुझान था। यह सब दीनदयाल उपाध्याय की कोई नै योजना नहीं है, बल्कि राष्ट्र की सनातन व्यवस्था संस्कृति को ही उन्होंने उगागर करने का एक प्रयास किया है।

राष्ट्रकार्य के व्रती प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्र और राज्य का अंतर भलीभांति समझ लेना चाहिए, चारों और व्याप्त राजनी के कोलाहल में आज राष्ट्र और राज्य के बीच मूलगामी और सूक्ष्म अंतर को समझ पाना कठिन होता जा रहा है। वास्तव में र और राज्य दो अलग अलग सताएँ हैं। बहुत से लोग इस अंतर को नहीं समझ नहीं पाते राज्य के लिए राष्ट्र और राष्ट्र के लिए राज्य ? इस प्रश्न का ठीक ठीक उत्तर पाना है तो हमें इन दोनों के वास्तविक महत्त्व को समझना होगा। पश्चिम के विचारों में राज्य और राष्ट्र में भेद नहीं है। परन्तु भारत की सनातन व्यवस्था में यह स्पष्ट है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का सीधा संबंध भारतीय दृष्टिकोण में राष्ट्र और राष्ट्र संस्कृति की विशेषता और सम्मान से है। राज्य एक राजनीतिक व्यवस्था है, जिसका निर्माण नियमों का पालन करवाने हेतु हुआ है, जिसके पास दण्डशक्ति है, ये राष्ट्र का प्रतिनिधि है। राष्ट्र एक भावना, एक आस्था है। जिस भावना स्था के प्रति हमारा अपार स्नेह है। नागरिकों की आस्था से ही राष्ट्र का निर्माण होता है। हमारी आस्था व भावना के संदर्भ दीनदयाल उपाध्याय जी का एक लेख पठनीय है, हमारी राष्ट्रीयता का आधार भारत माता है।'केवल भारत नहीं माता शब्द हटा दीजिए तो भारत केवल जमीन का एक टुकड़ा मात्र रह जायेगा। इस भूमि का और हमारा ममत्व तब आता है माता का सम्बन्ध जुड़ जाता है। कोई भी भूमि तब तक देश नहीं कहला सकता, जब तक की उसमे किसी जाति का मातृक ममत्व, यानी ऐसा ममत्व, जैसा पुत्र का माता के प्रति होता है, न हो। यही देशभक्ति है। तथापि देशभक्ति का मतलब जमीन के टुकड़े के साथ प्रेम का होना मात्र नहीं है। कई पशु-पक्षी भी तो अपने घर से बहुत प्रेम करते है। जैसे, साँप अपना बिल नहीं छोड़ता, शेर मांद में ही निवास करता है, पक्षी अपने घोंसलों में रात को लोट आते हैं, किन्तु ये देशभक्त है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। मानव भी जहाँ रहता है, वहां से उसका कुछ न कुछ लगाव हो ही जाता है। फिर भी इतने मात्र से देशभक्ति नहीं आती। उन लोगो का प्रेम ही देशभक्ति कही जाएगी, जो देश में 'एक जन' के नाते संब है। पुत्र रूप, एक जन और माता रूप, 'भूमि' के मिलन से ही देश की सृष्टि होती है। यही देशभक्ति है, जो अमर है। "ऐसी देशभक्ति और प्रगाढ़ संबंध तो सनातन संस्कृति में ही दर्शनीय है, और हमारी भारतीय संस्कृति ही इसका एक अतुलनीय उदाहरण है।"

श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है, जैसे मनुष्य का जन्म लेना सुनिश्चित है. ये केवल मनुष्य मात्र के लिए लागू नहीं होती, संस्कृति पर भी लागू होती है। संसार में अनेकों ही संस्कृतियों का उदगम हुआ, और अनेकों ही संस्कृतियां अस्त भी हो गई। परन्तु भारतीय संस्कृति तो सनातन है। ये भारत के जनमानस के विश्वास, संकल्प व धर्म की पूंजी है। जिसे हमने कभी अस्त नहीं होने दिया। जिसका आत्मसात यहाँ की जनमानस ने किया है। यही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अतुलनीय पम्परा है। विश्व धरा पर अनेको ही संस्कृतियों का उदगम व् अंत हुआ, यूनान, मिस्र, रोमा मिट गए जहां से, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ये भारत के जनमानस की अपनी संस्कृति, अपने राष्ट्र के प्रति चेतना है। पश्चिम की संस्कृति के विलुप्त होने का एकमात्र कारण कि उन्होंने अपनी संस्कृति को आत्मसात नहीं किया, संस्कृति व् राष्ट्र के प्रति जुड़ाव को अनुभव ही नहीं किया।

राष्ट्र जीवन मूल्य, जीवन-पति, आदर्शो एवं जीवनधारा के अनुरूप जो भी स्वीकारा जाता है, वह एकरसता के लिए पोषक एवं राष्ट्र को बलिष्ठ बनाने बाला होता है, बेमेल एवं विरोधी बातों को स्वीकार करने से अशांति, उपद्रव व रोग्रस्तता राष्ट्र विनाश के कारक बनते है। अस्तु 'प्रकृति का ये नियम सबको ज्ञात है कि विजातीय द्रव्य के शरीर में प्रवेश करते ही रोग एवं उपद्रव प्रारम्भ हो जाते है। इसलिए स्वस्थ जीवन की पहचान यह मानी जाती है कि वह विजातीय द्रव्यों को आत्मसात करने की सीमा तक ही ग्रहण करें। भारतीय सनातन संस्कृति में कभी भी मानवीय प्रकृति के विरुद्ध कार्य नहीं हुआ, बल्कि एकात्म भाव से ही जीवन धारा प्रवाहित हुई। विशिष्ट परम्पराएँ विकसित हुई।

ऐसे ही अनेकों विशिष्ट परम्पराओं ने भारत की सांस्कृतिक प्रगाढ़ता के प्रति भारत के जनमानस के हृदय से इसे अक्षुण नहीं होने दिया। इन्हीं परपराओं से भारत आज भी विश्व में अपने सांस्कृतिक वैभव के कारण जाना जाता है। राष्ट्र गौरव व् सम्मान से राष्ट्र का जनमानस भी गौरवांभित होता है भारत राष्ट्र की इसी दृष्टिकोण को दीनदयाल उपाध्याय ने सांस्कृतिक

राष्ट्रवाद के रूप में प्रस्तुत किया। राष्ट्र को अपनी इस प्रकृति के साथ जीने को प्रेरित किया। समाज राज्य राष्ट्र के साथ व्यक्ति का संबंध अटूट है। इसलिए प्रत्येक देशभक्त अपने राष्ट्र के गौरव व सम्मान को वैभवशाली देखना चाहता है। परन्तु वास्तव में राष्ट्र वैभव क्या है? क्या व्यक्ति के जीवन का सुखी व सम्पन्न होना राष्ट्र वैभव है? 'कई बार ऐसा तर्क भी दिया जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति अगर प्रगति कर दे तो राष्ट्र की प्रगति हो जावेगी। किन्तु ये महज एक धोखा है। राष्ट्र की सर्वोत्मुखी प्रगति अकेले अकेले व्यक्ति द्वारा नहीं हो सकती। स्वयं व्यक्ति भी अपने आप में कुछ नहीं कर सकता। यदि हम थोड़ी गहराई से विचार करें तो इसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि "मैं" का व्यहवहारिक अर्थ है, "हम"

इसलिए हम शब्द हमें साथ जोड़ने का काम करता है, और सामूहिकता व् एकता राष्ट्र शक्ति व वैभव की एक विशेष स्थिति का नाम है, ऐसे ही भावनात्मक जुड़ाव व् अपनत्व अपनी संस्कृति से होना ही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है, जो अपने देश के कण-कण में विवधताओं के बाबजूद भी दीखता है। अपने देश को गौरवशाली देखने की इच्छा प्रत्येक जीवंत भारतीय के हृदय में उठना स्वाभाविक है। मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में कहे तो, 'जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है, वह नर नहीं, नरपशु निरा है, और मृतक समान है।' अपना राष्ट्र सुखी सम्पन व वैभवशाली बने, अपने संस्कार रीति-रिवाज, जीवन मूल्यों का स्थान हमारे जीवन में बना रहे, ऐसी इच्छा का जनमानस में होना, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है, राष्ट्र प्रेम है।

दीनदायल जी ने एक उदाहरण से राष्ट्र प्रेम, राष्ट्र सम्मान व राष्ट्र के प्रति भावनात्मक संबंध को स्पष्ट किया है, एक सज्जन विदेश की यात्रा करके लौटे है। उन्होंने लेख लिखकर बहुत दु:ख प्रकट किया। मैंने पूछा इतने दुखी क्यों है? तो बोले, क्या बताऊँ, विश्व के सभी देशों में हिंदुस्तान के सम्बन्ध में एक ही धारणा है कि ये भिखारियों का देश है। मैंने उनसे पूछा कि "तुमने तो भीख नहीं मांगी?" "वे बोले नहीं, किन्तु यह कैसे सहा जा सकता है कि भारत भीख मांग रहा है।"

इसका अर्थ ये हुआ कि उन्होंने राष्ट्र को अपना माना और राष्ट्र अपमान को अपना अपमान माना, यही भावना हमें राष्ट्र से जोड़ती है, राष्ट्र के गौरव में हमारा गौरव है, और राष्ट्र अपमान हमारा अपमान है। राष्ट्र का सम्मान हमारा सम्मान है, और ऐसी भावना हर सच्चे भारतीय में होना स्वाभाविक है क्योकि भारत हमारे लिए जमीन का एक टुकड़ा मात्र नहीं, बल्कि राष्ट्र से हमारा भावनात्मक रिश्ता है, भारत हमारी माता है, जिसके अन्न जल कण के साथ हमारा सम्बन्ध है, ये संबंध मातृक संबंध है। राष्ट्र से हमारा अपनत्व भाव ही हमें राष्ट्र के सम्मान और अपमान से प्रभावित करता है।जब नव स्वाधीन भारत की परिस्थितियां, सैंकड़ो चुनौतियों, अंग्रेजों द्वारा बोई गई पारस्परिक द्वेष और घातक फूट की दलदल में धंसे लोगों को उससे उभारना था, उनमें राष्ट्र के प्रति भावना जागृत करनी थी, सदियों की विदेशी गुलामी के कारण घोर मानसिक दासता से लोगों को उभारना था, वैचारिक रिक्तता की चुनौती थी, जनमानस में आत्मसम्मान व् आत्मनिर्भरता की भावना का प्रसार का लक्ष्य था, राष्ट्र की पुरातन प्रतिभा की चिंगारी को जगाना था, इस महत कार्य को साहस व सातत्य के साथ सम्पन करने के लिए एक नूतन भगीरथ की आवश्यकता थी, इस महान कार्य को सम्पन करने का संकल्प जिन महान विभूतियों ने उठाया, दीनदयाल उपाध्याय भी उसी परम्परा के साधक हुए। उनकी इन्हीं महान योगदान के कारण ही वह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रणेता माने जाते हैं।

चारों पुरुषार्थों के समग्र विचार पर दीनदयाल ने विदुरजी व् युधिष्ठर के बीच हुए विवाद का उदाहरण देकर स्पष्ट किया है, 'विदुरजी ने कहा, अर्थ बंधनकारक है, धर्म बंधनकारक है तथा काम बंधनकारक है ही। सबसे बड़ी वस्तु है मोक्ष मोक्ष प्राप्ति के बाद कुछ भी पाना शेष नहीं रहता, फिर कोई कामना भी नहीं रहती। इसलिए निष्काम भाव से मोक्ष पा लेना यही सबसे बड़ा पुरुषार्थ है। विदुर के इस विवाद का अंत युधिष्टर ने किया। उन्होंने कहा कोई भी पुरुषार्थ बड़ा नहीं है। चारों को एक साथ लेकर चलना ही पुण्य है। एक को पाने का प्रयत्न करेगा, वह अधूरा है और एक को प्राप्त करने का प्रयास करने वाला पापी भी है। एक का विचार करना मानव के टुकड़े करना है, किन्तु यह सही है कि मानव जीवन के टुकड़े नहीं किये जा सकते। अत: चतुर्पुरुषाथी का एकात्म व् समग्र विचार करना आवश्यक है।

दीनदयाल उपाध्याय के चिन्तन का आधार भी समग्र है, एकात्म है। दीनदयाल उपाध्याय समाज, राष्ट्र सम्पूर्ण सृष्टि 'भूमंडल' को टुकड़ों में नहीं देखते, बल्कि सबका सामूहिक विचार करते हैं। जो विशुद्ध भारतीय विचार है।

निष्कर्ष राष्ट्र संस्कृति के ऐसे ही अतुलनीय धरोहरों को आत्मसात करने करने की परम्पराओं को संजोने का संकल्प दीनदयाल जी ने अपने जीवन में किया। हमारा राष्ट्र आदिकाल से ही अपने ऐसे असंख्य आदर्शों को संजोता रहा है। राष्ट्र संस्कृति की सुन्दरता और धरोहरों संजोने वाले मनीषियों की वैभवशाली परम्परा के पुन्य आत्मा दीनदयाल उपाध्याय थे, यह अपनी संस्कृति में विकसित संस्कारों की विशेषता है कि अपनी संस्कृति के वैभव को हर सच्चा देशवासी देखना चाहता है, यह विचार हमारे पूर्वजों की अमूल्य धरोहर अपने आज व् भावी पीढ़ी के लिए है। यही हमारी संस्कृति की समृद्धि, सम्पनता व सुंदरता का द्योतक है, यही दीनदयाल जी का कहना था कि भारत अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं के कारण ही विश्व विजेता बनेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः-

1. डॉ. महेश चंद्र शर्मा, एकात्ममानववाद तत्व मीमांसा सिद्धांत विवेचन, प्रभात प्रकाशन, नई दिली, संस्करण 2017. पृ. 26.
2. दत्तोपंत ठेंगड़ी, प. दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन खंड-1 तत्व जिज्ञासा, सुरुचि प्रकाशन, केशव कुंज, झण्डेबला, नई दिल्ली, पृ. 105.
3. रामशंकर अग्रिहोत्री भानुप्रताप शुक्त, राष्ट्र जीवन की दिशा, दीनदयाल उपाध्यय, लोकहित प्रकाशन संस्कृति भवन लखन., 2008. पृ. 49.
4. हरीश दत्त शर्मा, राष्ट्र जीवनी माला, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, "यूजन बुक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृ. 145
5. रामशंकर अग्रिहोत्री भानुप्रताप शुक्त, राष्ट्र जीवन की दिशा दीनदयाल उपाध्यय, लोकहित प्रकाशन संस्कृति भवन लखन., 2008, पृ. 19
6. रामशंकर अग्रिहोत्री भानुप्रताप शुक्ल, राष्ट्र जीवन की दिशा, दीनदयाल उपाध्यय, लोकहित प्रकाशन संस्कृति भवन लखन., 2008, पृ. 21.
7. डॉ. महेश चंद्र शर्मा, एकात्ममानववाद तत्व मीमांसा सिद्धांत विवेचन, प्रभात प्रकाशन, नई दिली, संस्करण 2017, पृष्ट. 5

☆☆☆☆☆

उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण तथा शहरी परिवेश के छात्र-छात्राओं के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

संतोष यादव
सहायक प्राध्यापक

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है सामाजिक प्राणी होने के कारण उसे अपनी मौलिक प्रवृतियों में शोधन एवं मार्गान्तिकरण की आवश्यकता होती है ताकि वह काल एव समाज से सामंजस्य स्थापित कर सके प्रचालित एवं प्रवाहित परम्पराएँ मूल्य आदि। व्यक्ति की प्रवृतियाँ में परिवर्तन हेतु मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। मूल्य ही वह पैमाना है जिस पर तौलकर व्यक्ति किसी सामाजिक तथ्य के उचित अनुचित निर्णय करता है।

मूल्य किसी भी राष्ट्र की प्रगति का आधार स्तम्भ होता है। यह मानव विकास की मूलभूत आवश्यकता है। समाज एवं देश के उत्थान-पतन का उत्तरदायित्व शिक्षा के साथ-साथ मूल्यों के कंधों पर निर्भर करता है। नींब में जितनी गहराई होगी। उसमें भार ग्रहण करने की सुदृढ़ता एव क्षमता उतनी ही अधिक होगी किसी भी राष्ट्र की भौतिक एवं नैतिक स्तर की उच्चता को मूल्यों की कसौटी पर ही परखा जाता है।

मानव जीवन में मूल्यों का महत्त्व बहुत अधिक है। मानव जीवन की प्रत्येक गतिविधि किसी-न-किसी मूल्य से निर्धारित एवं संचालित होता है। मनुष्य मूल्यों को अपने जीवन के प्रारंभिक समय से ही सीखने लगता है और शनैः-शनैः अपने अन्तःकरण में धारण करने लगता है। यदि व्यक्ति की पालन-पोशण उत्तम परिवेश में हुआ है जहाँ उच्च नैतिक मूल्य से जीवन के लक्ष्य प्रतिपादित होते है तो वह उन्हे ही अपने अंतर में आत्मसात कर लेता है।

वर्तमान समय में शिक्षा एवं तकनीकी के द्रुत प्रसार से मूल्यों का यथोचित विकास दिखाई नही पड़ता। आज चारों ओर झूठ, कपट, भ्रष्टता का आलम दिखाई पड़ रहा हैं। आज नैतिक एवं मूल्यवान बने रहना मूर्खता एवं परिहास का कारण बनता जा रहा है।

आश्चर्य तो यह है कि नैतिक मूल्यों एवं जीवन की चाहत तो सभी को है किन्तु लोग इन्हें अपने जीवन में उतार नही पाते। आज मूल्यों के प्रति उपेक्षाभाव रखते हुए भी सभी को अपने आस-पास मित्र, संबंधी, सर्वांग, नैतिक, एवं मूल्यनिष्ठ चाहिए। चाहे स्वयं से मूल्य निभे या न निभे। कम कैसे भी हों हमारे आस पास की दुनिया हमें शांत एवं सुख ही चाहिए। कर्तव्य तो मित्र निभाएं और अधिकार हम मांगं। बलिदान पड़ोसी दे लाभ हमें प्राप्त हो। यह है एक विचित्र विरोधाभास है और सभी अनजाने ही इस स्वार्थ से ग्रसित होते जा रहे है। हमें चिंतन करना पड़ेगा कि हमे सुख, शांति एवं प्रमोद से परिपूर्ण वातावरण तभी हमें प्राप्त हो सकता है। जब मूल्यों की महानता पर हमारी स्वयं के दृढ़ आस्था एवं अविचल धारणा हो। सामाजिक मूल्यों के पथ पर अग्रसर होकर ही किसी व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के चरित्र का निर्माण होता है। सामाजिक मूल्यों के द्वारा ही सामाजिक सुव्यवस्था का निर्माण होता है। इसके अवमूल्यन पर सजग्र रटने की आवश्यकता है। इसकी उपादेयता निर्दिवादित एवं अपरिहार्य है।

समस्या की पश्ठभूमि

व्हिटनी के अनुसार "समस्या की उत्पत्ति उस परिस्थिति से होती है जिसमें हम यह अनुभव करते है कि कुछ बातें ऐसी है जिसके सम्यक समाधान के बिना कठिनाईयों का अस्तित्व बना रहेगा।"

नवीन वैज्ञानिक आविस्कारों, भूमण्डलीकरण तथा अर्थ केन्द्रित जीवन पद्धति के कारण सामाजिक संरचना तेजी से परिवर्तित हो रही है। सामाजिक संरचना में परिवर्तन के कारण सामाजिक मूल्यों में भी क्रमशः तदनुरूप बदलाव दृष्टिगोचर हो रहा है। आज आये दिन अनेक सामाजिक बुराईयाँ जैसे हिंसा, विश्वास घात, हत्या, लूट वैमनस्य आदि ऐसी परिस्थितियों में दिखाई पड़ रहीं है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। ये सामाजिक समस्याएँ ग्रामीण तथा शहरी परिवेशों में कुछ विभिन्नताओं के साथ दिखाई पड़ती हैं। सही मायने में यह देखा जाये तो बहुत से सामाजिक मूल्यों जैसे-वृद्धों का सम्मान, बहुपरिवार, सहयोग, दूसरो के दुःख-दर्द में शामिल होना, सहिष्णुता, भाईचारा आदि के कसौटी पर भी जनसंख्या को ग्रामीण

तथा शहरी रूप में बहुत हद तक पहुँचाया जा सकता है। ऐसी स्थिति में शोध कर्त्ता के मन में यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि-

1. इस स्थिति का कारण क्या है?
2. क्या ग्रामीण तथा शहरी संरचना का मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है?
3. क्या जातीय विभेदों (स्त्री-पुरुष) का सामाजिक मूल्यों भी परिवेशगत निर्धारित होता है?

प्रस्तुतशोध में शोधकर्त्ता ने इन्ही समस्याओं के समाधान प्राप्ति हेतु ग्रामीण तथाशाहरी परिवेश के छात्र-छात्राओं के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है।

शहरी

भारत में ऐसी समस्त वस्तियाँ शहरों में सम्मिलित की जाती है जहाँ

1. न्यूनतम जनसंख्या 50000 या उससे अधिक हो।
2. जनसंख्या धनत्व कम-से-कम 1000 व्यक्तियों का हो।
3. कम-से-कम 75: वयस्क पुरुष जनसंख्या गैर-कृषि कार्यो में लगी हों।

ग्रामीण

भारत की ऐसी बस्तियाँ जो शहरी विशेशताओं से भिन्न है, जहाँ की अधिकांश आबादी कृशि कार्यो में संलग्न है, ग्रामीण क्षेत्रों में शामिल की जाती है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उद्देश्य है-

1. उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण तथा शहरी छात्रों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण तथा शहरी छात्राओं के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र-छात्राओं के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र-छात्राओं के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण तथा शहरी विद्याथियों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

अध्ययन वर्तमान ज्ञान के परिमार्जन एवं नवीनज्ञ के सृजन की प्रक्रिया है। मानव जीवन की विभिन्न क्षेत्रों में होने वाली प्रगति में शोध की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही सुनोजित ढ़ग से समस्याओं के समाधान खोजने की यह एक मनोवैज्ञानिक विधि है।

अभीष्ट शोध द्वारा सामाजिक मूल्यों की परिवेश विद्यमानता को पहचानने में सहायता प्राप्त होगी जिससे-

1. छात्रों में सामाजिक मूल्यों की पहचान, निर्माण तथा विकास किया जा सकेगा।
2. इससे छात्रों की वर्गीकरण में भी सहायता प्राप्त होगी।
3. इस शोध द्वारा सामाजिक मूल्यों पर लिंग का प्रभाव को समझा जा सकेगा।
4. यह अध्ययन छात्रों को परामर्श देने मे सहायता सिद्ध होगा।
5. यह शोध अध्ययन द्वारा सामाजिक अपराधों को रोकने में सहायता प्राप्त होगीं।

अध्ययन की सीमाएँ

समय, धन, प्रतिदर्श एवं मापन यंत्र की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य निम्न लिखित सीमाओं के अन्तगर्त समादित किया गया है-

1. प्रस्तुतशोध में बिहार राज्य स्थित उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों के 12 वीं कक्षाओं के छात्र-छात्राओं का चयन किया गया है।
2. अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के लिए समस्तीपुर जिला स्थित विद्यालयों का चयन किया गया है।
3. प्रतिदर्श के रूप में 12 वीं कक्षा के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के 100-100 विद्यालयों का चयन किया गया है।
4. कुल 100 ग्रामीण विद्यार्थियो में 50 छात्र तथा 50 छात्राएँ चुनी गई है।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

शोध अध्ययन से प्राप्त परिणामों के निष्कर्शों को निर्मित परिकल्पनाओं के दृष्टिगंत निम्नवत व्यक्त किया जा सकता है-

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

शोध कार्य के दौरान किए गए कार्यो मसलन न्यादर्श, क्षेत्र तथा न्यादर्शों आदि का चयन, विश्लेशण आदि के आधार पर एवं अनुसंधान करते समय, समयाभाव, धन, असुविधा आदि कारणों के दृष्टिगत भावी अनुसंधान हेतु अधोलिखित सुझाव प्रस्तुत किया जाता है-

1. यह अनुसंधान कार्य भिन्न-भिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में भी किया जा सकता है।
2. यह अनुसंधान बड़े न्यादर्शों जैसे राज्य, देश आदि के आधार पर भी किया जा सकता है।
3. अनुसंधान हेतु चयनित न्यादर्शों की उम्र एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान रख बेहतर परिणाम प्राप्त किया जा सकता है।
4. चयनित न्यादर्शो की आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति समतुल्य होनी चाहिए।
5. यह अनुसंधान कार्य सवर्ग तथा पिछड़े समुदायों पर भी किया जा सकता है।
6. यह अनुसंधान कार्य शासकीय तथा स्वशासी विद्यालयों पर भी किया जा सकता है।
7. अनुसंधान में वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए।
8. अनुसंधान कार्य पर शोधकर्त्ता की धारणाओं, पूर्वाग्रहों का प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Bharatwaj, Tilakraj.(2001). Education of human values. A Mittal publication, New delhi:2001
2. Gasset, Hensy E., (2011), Statistic in psychology and education, paragon International publisher.
3. Das, R.C., (Nov. 1987), Education in values, Journal of Indian Education.
4. Bernard, M., (1990), study of life role and values of senior undergraduate education student., (Ph.D), in dissertation abstract international, Michgn: University Microfilms International Vol.5l, No. 11, Map 1991, P.3695 A
5. Kumari, K., (1975), A study of relationship among creativity, intelligence, adjustment and value pattern in adolescence, Ph.D., Psy, Agra University.
6. Frankli, B.C., (Aug., 1964), The true aim of education, The Review, 31(2), 57-58

मिथिलेश कुमार
सहायक प्राध्यापक

विशिष्ट शिक्षा एवं इसका समायोजन एक अध्ययन

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के मानव संसाधन से उस राष्ट्र की पहचान बनती है और एक सर्वोत्तम एवं श्रेष्ठ मानव संसाधन का मूलभूत आधार शिक्षा व्यवस्था में निहित होता है। देश या राष्ट्र की प्रगति वहाँ के नागरिकों पर निर्भर होती है और प्रगति की इस प्रक्रिया में वही नागरिक अपना योगदान / सहयोग प्रदान कर सकते है जो कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त किये हुए हो। एक शिक्षित नागरिक ही अपने देश को प्रगति के मार्ग पर आगे ले जाने में सक्षम होते है। शिक्षा के महत्त्व के संबंध में स्वामी विवेकानंद ने कहा, "यदि शिक्षा से सम्पन्न राष्ट्र होता तो आज हम पराभूत मन: स्थिति में न आये होते।"

भारत जैसे विशाल देश में आज भी शिक्षा सबों तक नहीं पहुँच सकी है और ऐसे अनेक स्थान, जहाँ शिक्षा के उपक्रम प्रारम्भ तो हो गए किन्तु उनमें गुणवत्ता नहीं है। परिणामस्वरूप उच्च शिक्षा प्राप्त युवा वर्ग रोजगार की तलाश में भटकाव की स्थिति में है।

पेशेवर शिक्षा

वैसी शिक्षा जिसको प्राप्त करने का मूल उद्देश्य केवल रोजगार को प्राप्त करना हो। विभिन्न सरकारी एवं निजी संस्थाओं के द्वारा डिग्री, डिप्लोमा, सर्टिफिकेट जैसे सभी तकनीकी पाठ्यक्रम इसके अंतर्गत आते हैं। उच्च शिक्षा से जुड़े संबंधित वैसे पाठ्यक्रम जो कि एक विशेष या निश्चित व्यवसाय, व्यापार इत्यादि नियत क्षेत्र की आवश्यकता मांग के (ज्ञान, समझ एवं प्रतिस्पर्धा से संबंधित) अनुसार सीखनेवाले को तैयार करता है पेशेवर शिक्षा कहलाती है। पेशेवर शिक्षा की आवश्यकता / महत्त्व देश की तीव्र आर्थिक विकास में युवाओं की बहुमुखी प्रतिभा, ऊर्जा एवं रचनात्मक क्षमता का उपयोग करने के लिए साक्षरता दर में वृद्धि करने के साथ ही गुणात्मक शिक्षा एवं उन्नयन को भी विकसित किया जाना जरूरी है। जिससे उच्च शिक्षा के तीव्र विकास एवं इसे रोजगारोन्मुख बनाने के उद्देश्य में सफलता मिले। वर्तमान में सरकारी सेवाओं में सीमित पदों के लिए कठिन प्रतिस्पर्धा की तुलना में युवाओं को तकनीकी शिक्षा की सहायता से रोजगार प्राप्त करने में सहूलियत होती है जो पेशेवर शिक्षा की लोकप्रियता की एक अन्य वजह है। केवल इसी प्रकार की शिक्षा के द्वारा हमारे लाखों युवकों को बेरोजगार होने से बचाया जा सकता है। साथ ही बेरोजगार के रूप में युवाओं को अपने अविभावक और राष्ट्र पर पड़ने वाले बोझ से मुक्ति भी इसी के माध्यम से मुमकिन है।

रोजगार

आमतौर पर अनुबंध आधारित दो पक्षों का आपसी संबंध जिसमें काम के लिए भुगतान किया जाता है। भुगतान के बदले में कर्मचारी काम करते है, जो कि उनके काम करने के प्रकार या क्षेत्र पर निर्भर करता है। कुछ ऐसे रोजगार में कर्मचारियों को भुगतान के अतिरिक्त लाभ जैसे स्वास्थ्य बीमा, बोनस भुगतान, आवास इत्यादि प्राप्त होते हैं।

AISHE के वेब पोर्टल के अनुसार, भारत में 993 यूनिवर्सिटी, 39931 कॉलेज और 10725 स्टैंड अलोन संस्थान है। जिनमें 548 सामान्य, 142 तकनीकी, 63 कृषि और एलाइड 58 मेडिकल, 23 लॉ, 13 संस्कृत और 09 लैंग्वेज यूनिवर्सिटी के अतिरिक्त शेष 106 यूनिवर्सिटी विभिन्न कॅटेगरी के है। भारत में पेशेवर शिक्षा के अनेक आयाम हैं जिन्हें एक निश्चित सीमा तक सिमित नहीं किया जा सकता। डिग्री, डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट ऐसे बहुत सारे कोर्सेज इसके अंतर्गत सम्मिलित है जैसे करियर कॉउन्सिलिंग, कम्प्यूटर कोर्सेज, मेडिकल-फार्मा, टीचिंग कोर्सेज, लैंग्वेज कोर्सेज, इंजीनियरिंग कोर्सेज, मैनजमेंट कोर्सेज, योगा कोर्सेज, एक्टिंग-डांस और ड्रामा कोर्सेज, मीडिया, मास कम्युनिकेशन और जर्नलिज्म कोर्सेज, लॉ कोर्सेज, फैशन डिजाइनिंग-इंटीरियर कोर्सेज, मोबाइल रिपेयरिंग कोर्सेज, पी-एच.डी. और रिसर्च, मार्केटिंग सेल्स इत्यादि। मौजूदा समय में पेशेवर शिक्षा से जुड़े संस्थान शिक्षा की गुणवत्ता का विश्वस्तरीय मानक को पूरा नहीं कर पा रहे और जो इस दौर में अपने स्थान को बनाये रख पाए है, उनकी स्थिति संतोषजनक नहीं है।

विश्व स्तर पर शीर्ष विश्वविद्यालयों की रैंकिंग तीन संस्थाओं के द्वारा की जाती है, जो इनकी गुणवत्ता का आकलन / निर्धारण करती है- टाइम्स हायर एजुकेशन (टीएचइ), शंघाई जिओटोंग यूनिवर्सिटी(एसजेटीयू) और कोरेली सायमंड्स (क्यूएस)। इनमें सबसे अधिक लोकप्रियता और मान्यता टाइम्स हायर एजुकेशन संस्था की है, जो पिछले 16 सालों से इसे संचालित करती रही है। वर्ष 2020 की रैंकिंग में 2012 के बाद पहली बार शीर्ष 200 विश्वविद्यालयों में किसी भारतीय विश्वविद्यालय का नाम नहीं है। टाइम्स रैंकिंग में वैसे तो दुनिया की शीर्ष 1300 विश्वविद्यालयों में भारत की 56 नाम मौजूद है, जबकि संस्था की दृष्टि से भारत विश्व में पाँचवें और एशिया में तीसरे स्थान पर है। गौरतलब है कि 2020 की टाइम्स रैंकिंग में भारत का ख्याति प्राप्त संस्थान इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस 50 स्थान नीचे गिर गया है। इस संस्थान कीअलावा, आईआईटी-रोपड़ को 301-350 और आईआईटी इंदौर को 351-400 के समूह में रैंकिंग दी गयी है। पुराने और प्रतिष्ठित आईआईटी-मुंबई आईआईटी खड़गपुर और आईआईटी दिल्ली को 401-500 के ग्रुप में शामिल किया गया है।

टाइम्स की रैंकिंग में शुरू से ही अमेरिकी विश्वविद्यालयों का दबदबा रहा है। इस बार भी शीर्ष की दस विश्वविद्यालयों में सात और शीर्ष की 20 विश्वविद्यालयों में 14 अमेरिका की है। शीर्ष 200 में एशिया से पहला स्थान चीन का है जिसके 24 विश्वविद्यालय इसमें शामिल है।

हाल में देश के रोजगार क्षेत्र में युवाओं कि दक्षता और कौशल को लेकर कुछ सवाल उठे है। सीएमआइई (सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी) के एक सर्वे के अनुसार इस साल अप्रैल 2019 में देश में बेरोजगारी की दर सात फीसद थी। वहीं स्टेट ऑफ वर्किंग इंडिया 2018 के एक सर्वे के अनुसार भारत में उस वक्त बेरोजगारी दर पांच फीसदी थी, लेकिन इसमें भी पंद्रह से उन्नीस साल के युवाओं में बेरोजगारी तीन गुना ज्यादा यानि पंद्रह फीसदी तक थी। शहरी क्षेत्रों में इस आयु वर्ग में बेरोजगारी की समस्या ज्यादा थी। इससे अलग सीएसओ (केंद्रीय सांख्यिकी संगठन) ने दावा किया है कि रोजगार के औपचारिक क्षेत्र में 2018-19 में नौकरियों के एक करोड़ सैंतीस लाख अवसर सृजित हुए। इस समस्या का दूसरा पक्ष और चिंताजनक है जो कि शिक्षण-प्रशिक्षण की गुणवत्ता से संबंधित है। अगर बच्चें और युवा किसी तरह नामी संस्थानों में दाखिला पा जाते है तो भी इसकी गारन्टी नहीं होती कि वहाँ से डिग्री-डिप्लोमा लेकर निकलने के बाद वे इसके आधार पर इतने काबिल हो सकेंगे कि अपने क्षेत्र में हर चुनौती से मुकाबला कर सकें। यह मामला स्कूल, कॉलेजों एवं प्रतिष्ठानों में दी जा रही शिक्षा की खराब गुणवत्ता से जुड़ा है। यही वजह है कि देश के 57 प्रतिशत युवा पढ़े-लिखे होने के बावजूद भी ठीकठाक नौकरी के लिए तैयार नहीं पाए गए।

एनएसएसओ (national sample survey organization) की इस रिपोर्ट के अनुसार पेशेवर शिक्षा लेनेवाले सिर्फ 56 फीसदी नौजवानों को ही रोजगार मिल पा रहा है।

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वन मंत्रलय की आवधिक श्रमबल सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार तकनीकी और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करनेवाले 56.6: नौजवानों को रोजगार मिल रहा है। शहरी क्षेत्रों में यह प्रतिशत 57 तथा ग्रामीण क्षेत्रों में यह करीब 56: दर्ज किया गया है। करीब 70: युवकों एवं 38: युवतियों को ही प्रशिक्षण पाने के बाद रोजगार मिल पाता है। रोजगार नहीं पानेवाले करीब 14: बेरोजगार है जबकि 16: श्रमबल का हिस्सा नहीं है। देश में तकनीकी शिक्षा हासिल करने वाले 2.8 लोग ही है। जिनकी उम्र 15-19 साल होती है।

विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों में छात्र नामांकन के स्तर को 8 भागों में बांटा गया है- पी-एच.डी., एमफिल पोस्ट ग्रेजएट अंडर ग्रेजएट पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा, डिप्लोमा सर्टिफिकेट और इंटेग्रेटेड पेशेवर।

2013-14 में छात्र प्लेसमेंट को प्रतिशत 29 था जो 2017-18 में बढ़कर 42 प्रतिशत हो गया। वहीं उत्तीर्णता का प्रतिशत 2013-14 में 73 रहा जो कि 2017-18 में 100 तक जा पहुँचा है। जबकि दूसरी ओर इंजीनियरिंग कोर्सेज में नामांकन लेनेवाले छात्रों का प्रतिशत 2013-14 में 59 था और 2017-18 में 10 प्रतिशत गिरकर 49 हो गया है। 10 साहित्य समीक्षा

AISHE के हॉल के ही एक जारी किये गए रिपोर्ट के अनुसार, जिसमें देश के सभी 962 यूनिवर्सिटीज, 38,179 कॉलेज एवं 9,190 स्वपोषित संस्थानों को शामिल किया गया है, इंजीनियरिंग एवं तकनीकी शिक्षा में स्नातक की डिग्री पाठ्यक्रम में नामांकन लेनेवाले छात्रों की संख्या में भारी कमी आई है। जहाँ 2014-15 में यह 42.5 लाख था जो कि 2018-19 में घटकर 37.7 लाख हो गयी है।

उच्च स्तरीय शिक्षा के अंतर्गत इंजीनियरिंग कोर्सेज के लिए छात्रों के बीच काफी लोकप्रिय प्रख्यात उच्च शैक्षणिक संस्थान आईआईटी (IITs) एवं एनआईटी (NITs) के नामांकन दर में पिछले कई वर्षो से गिरावट देखी जा रही है। वर्तमान में नामांकन दर में होनेवाली इस गिरावट को पोस्ट ग्रेजुएट स्तर की डिग्रियों में भी नजर आ रहा। इंजीनियरिंग के मास्टर डिग्री के पाठ्यक्रमों, एमटेक (M-Tech) में 2014 में 28 लाख छात्र नामांकित हुए थे, जो कि पिछले वर्ष घटकर 1.3 लाख ही रहा।

AISHE पोर्टल पर लिस्टेड सभी शैक्षणिक संस्थानों में से 962 यूनिवर्सिटीज, 38179 कॉलेजों एवं 9190 स्वपोषित

संस्थानों की सहभागिता के आधार पर प्रस्तुत पिछले हफ्ते का यह सर्वे इंजीनियरिंग की सभी प्रकार की विधाओं में छात्रों की सकल नामांकन दर (प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चौथे वर्ष) का ब्यौरा है।

इसके अनुसार प्रत्येक वर्ष अधिक से अधिक छात्रों का झुकाव कम्प्यूटर इंजीनियरिंग के पाठ्यक्रम की ओर अधिक हो रहा है। पहले छात्रों के बीच लोकप्रिय इंजीनियरिंग के कुछ विशेष प्रोग्राम जैसे मैकेनिकल, सिविल और इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग में नामांकन दर काफी कम हो गयी है। वर्तमान में मैकेनिकल इंजीनियरिंग में छात्रों की संख्या 20 प्रतिशत कम हो गयी है। 2014-15 में यह 9.76 लाख थी जो पिछले वर्ष घटकर 7.82 लाख रह गयी इसी तरह इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग में भी छात्र नामांकन की संख्या 20 प्रतिशत से अधिक कम हो गयी है।

उच्च शिक्षा से संबंधित यह रिपोर्ट, इससे जुड़े प्राप्तियों एवं इस क्षेत्र की मुख्य तथ्यों का ब्यौरा प्रस्तुत करता है। 2018-19 के आंकड़ों के अनुसार भारत में 18-23 आयु-वर्ग के लोगों की संख्या 140 मिलियन है, लेकिन केवल 26 प्रतिशत लोग वास्तव में / वास्तविक रूप में शिक्षा प्राप्त कर रहे है। जबकि विश्वविद्यालयों की संख्या में वृद्धि हो गयी है। 2014-15 में देशभर में जहां 760 विश्वविद्यालय थे जो कि अब बढ़कर 1000 के आसपास चली गयी है।

इन सबसे अलग कुछ आंकड़े चिंताजनक स्थिति कि ओर इशारा करते है। हाल के वर्षो में उच्च शिक्षा की विज्ञान एवं तकनीकी शाखा में छात्रों के रुझान में काफी कमी आई है। पिछले कुछ वर्षो से जहाँ इंजीनियरिंग एवं तकनीकी के स्नातक स्तर के पाठ्यक्रमों में कमी थी ही वहीं अब 2018-19 में विज्ञान स्नातक के पाठ्यक्रम में भी छात्र नामांकन की संख्या कम हो गयी है।

स्नातकोत्तर की डिग्री के तकनीकी शाखा के पाठ्यक्रमों की स्थिति तो और भी खराब है। पिछले पाँच वर्षो की तुलना में आज इनमें नामांकन की संख्या घटकर आधी हो गयी है। 2014-15 में यह 290,000 थी जबकि अब 2018-19 में 140,000 ही रह गयी है।

वहीं दूसरी ओर कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में मुख्य शिक्षक के पदों में लैंगिक अनुपात के परिप्रेक्ष्य में लेक्चरर एवं असिस्टेंट प्रोफेसर जैसे पदों पर महिलाओं की संख्या पुरुषों के काफी करीब आ गयी है। शिक्षण के लगभग 70 प्रतिशत पदों पर महिलाओं का अधिकार है। लेकिन, एसोसिएट एवं प्रोफेसर स्तर के पदों पर अभी भी पुरुषों की संख्या अधिक है।

AISHE के एक रिपोर्ट के अनुसार जो कि पिछले पाँच वर्षो की अवधि में देश की उन सभी संस्थानों, जो उच्च शिक्षा की अंतर्गत अपना योगदान देते है, का एक सर्वे है यह बतलाता है कि इंजीनियरिंग एवं कला पाठ्यक्रमों में नामांकन दर में काफी गिरावट आई है।

देशभर की सभी उच्च शिक्षण संस्थानों की अंतर्गत विभिन्न बीटेक एवं बीई (बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग) पाठ्यक्रमों में पाँच लाख की करीब और कला पाठ्यक्रमों में 6.6 लाख की गिरावट देखी गयी है। बीटेक एवं बीई की पाठ्यक्रमों में 2014-15 की शैक्षणिक सत्र में छात्र नामांकन संख्या 4254919 थी जो कि 2018-19 में घटकर 3770949 रह गयी एवं इसी वर्ष कला पाठ्यक्रमों में नामांकन 9860520 से 9198205 हो गयी।

ईपीएफओ (Employees Provident Fund Organization) की रिपोर्ट के आंकड़ों के अनुसार, 22 से 25 साल के युवा सबसे ज्यादा नौकरी बदल रहे है। बीते वित्त वर्ष में इस आयु वर्ग के 11.24 लाख युवाओं ने नौकरियों बदली दूसरे स्थान पर 29 से 35 साल की आयु वर्ग के लोग थे जिन्होंने नौकरियाँ बदली। साथ ही सर्वाधिक नई नौकरियाँ पानेवाले युवा भी 22 से 25 की उम्र के हैं। एक वर्ष की अवधि के दौरान 36,39,953 लोगों ने ईपीएफओ की सदस्यता प्राप्त की। दूसरे नंबर पर 18 से 21 साल की उम्र में 34.66 लाख इपीएफओ के सदस्य बने।

सेण्टर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनमी की रिपोर्ट के अनुसार देश में 2019 सितम्बर में बेरोजगारी दर 7 फीसदी थी। सेण्टर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनमी 2019 द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक पिछले महीने यानी अक्टूबर में बेरोजगारी दर 8.5 फीसदी रही, जो कि अगस्त 2016 के बाद का सबसे उच्चतम स्तर है। यह आंकड़ा इसी साल सितम्बर में जारी आंकड़ों से भी काफी ज्यादा है।

इसके अतिरिक्त अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के सेण्टर फॉर सस्टेनेबल एम्प्लॉयमेंट के एक शोध पत्र में दावा किया गया कि पिछले छह साल में लोगों को रोजगार मिलने की संख्या में काफी गिरावट आई है। 2011-12 से लेकर 2017-18 के बीच 90 लाख लोगों को अपनी नौकरी गंवानी पड़ी, जो कि भारत के इतिहास में पहली बार हुआ है।

सीएमआईई ने जो डाटा जारी किया था उसके मुताबिक 2016 से 2018 के बीच 1.1 करोड़ लोगों को नौकरी से हाथ धोना पड़ा था। फरवरी 2019 में बेरोजगारी का आंकड़ा 72 फीसदी पर पहुंच गया। वहीं पिछले साल फरवरी में यह आंकड़ा 5.9 फीसदी था।

विश्लेषण और निष्कर्ष

दरभंगा स्थित इस महिला प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना 2004 में की गयी। यह यहाँ का एक प्रसिद्ध इंजीनियरिंग संस्थान है। यह AICTE (आल इंडिया कौंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन) मानव विकास संसाधन मंत्रालय, नई दिल्ली एवं विज्ञान और प्रौद्योगिकी, बिहार सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। इस महाविद्यालय के तकनीकी पाठ्यक्रमों का संचालन ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय से प्राप्त संब)ता के अंतर्गत किया जाता है।

इसके अंतर्गत चार वषीय इंजीनियरिंग में स्नातक एवं तीन वषीय कंप्यूटर एप्लीकेशन में स्नातकोत्तर दोनों ही पाठ्यक्रम / प्रोग्राम उपलब्ध है।

प्रस्तुत पत्र में निर्धारित समस्या को स्पष्ट करने के लिए दो कारकों- आयु और शिक्षा की सहायता ली गयी है। आयु व्यक्ति की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है, जिससे उसकी समझ, निर्णय क्षमता, परिपक्वता इत्यादि सर्वाधिक रूप से प्रभावित होती है। यहाँ समग्र को तीन आयु वर्गों में विभाजित किया गया है- 18-25, 26 -35 और 36 से .पर शिक्षा ज्ञान के अलावा जन सामान्य की योग्यता एवं उनकी क्षमता का संवर्धन कर उसकी विचारधारा का उन्नयन कर सकारात्मक सम्प्रेषण अंकन करती है। शिक्षा के स्तर को दो भागों में विभाजित किया गया है- इण्टर और स्नातक।

निष्कर्ष

शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार ये तीनों एक दूसरे के साथ परस्पर जुड़े हुए है, परिणामस्वरुप एक के अच्छा या बुरा होने से सीधे तौर पर दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। वर्तमान में समस्या मौजूदा शिक्षा तंत्र की है, जो उस स्तर की शिक्षा नहीं प्रदान कर पा रहे है जो अच्छी नौकरी प्राप्त करने या अपना व्यवसाय स्थापित करने में उनकी मदद करे। ऐसे में इस विषय पर गंभीर चिंतन की आवश्यकता है कि अपनी युवा आबादी को किस प्रकार की शिक्षा मिल रही है। शिक्षा प्राप्ति के माध्यम को लेकर शहरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों के शैक्षणिक ढांचे में भीषण विरोधाभास है। ऐसे फर्क और अभावों को शीघ्र ही दूर करना बेहतर होगा।

आज सबसे प्रमुख चुनौती है कि उच्च शिक्षा को कैसे रोजगारपरक बनाया जाये? आज नियोक्ताओं को उनके पास उपलब्ध काम के लिए उपयुक्त योग्य पात्र नहीं मिल रहे हैं। आशय है कि शिक्षा और रोजगार के बीच का मिलन बिंदु खिन छूट सा गया है। इसीलिए जरूरी है कि उच्च शिक्षा कि गुणवत्ता को बढ़ाया जाय और कौशल से युक्त युवाओं को प्रशिक्षित किया जाय।

संदर्भ सूचीः-

1. उपासने, जगदीश सबको शिक्षा अच्छी शिक्षा की ओर बढ़ते कदम, योजना, जुलाई 2018, अंक 7 पेज न. 27
2. AISHEReport 2018&19
3. चतुर्वेदी, हरिवंश रैंकिंग में और पिछड़ी उच्च शिक्षा(हिंदुस्तान, दैनिक पत्रिका, 13 सितम्बर 2019(पेज नं. 12
4. पूर्वोक्त
5. सिंह, अभिषेक कुमार, बेरोजगारी को गहराता संकट(जनसत्ता, दैनिक पत्रिका, 8 अक्टूबर 2019, पेज न. 6, नई दिल्ली
6. पूर्वोक्त
7. जैड़ा, मदनरू हिंदुस्तान, दैनिक पत्रिका, मुजफ्फरपुर संस्करण, 11 अगस्त 2019, पेज न. 16
8. Waghmare, Abhishek' science tech streams in higher education are losing students preference; business-standard.com; 30 Sep 2019.
9. Kunju, Shihabudeen; ndtv.com/aishe 2018-19-report; big fall in students enterning engineering arts courses

माध्यमिक स्तर के श्रवण बाधित विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता का अध्ययन

मीना कुमारी
सहायक प्राध्यापक

प्रस्तावना

संवेग एक जटिल प्रक्रिया है क्योंकि इसमें विभिन्न प्रकार के दैहिक परिवर्तन एवं भाव आदि निहित होते हैं। संवेग में व्यक्ति की उत्तेजनशीलता का स्तर अत्यधिक बढ़ जाता है और प्राणी अपने सम्पूर्ण शरीर में तीव्र उपद्रव की अनुभूति करता है। संवेग में आंगिक प्रतिक्रियाएं होती हैं। सभी प्रकार के संवेगों में कुछ न कुछ आन्तरिक आंगिक परिवर्तन (जैसे-फेफड़ा, हृदयगति, आँत, श्वांस गति, रक्तचाप एवं ग्रंथीय) होते हैं। क्रोध की अवस्था में रक्तचाप का बढ़ना, भूख, प्यास का न लगना एवं श्वांस गति में परिवर्तन हो जाता है। इन परिवर्तनों को दो समूहों में विभक्त किया जा सकता है- जैसे रक्त प्रवाह परिवर्तन रक्तचाप एवं हृदयगति का परिवर्तन एवं श्वसन परिवर्तन।

संवेगात्मक व्यवहार अभिव्यंजक होते हैं, अर्थात् संवेग में केवल आन्तरिक परिवर्तन न होकर वाह्य अंगों (हाथ, पैर, आँख, चेहरे आदि) में भी कुछ परिवर्तन होते हैं जिनके अवलोकन से ही स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्ति संवेगात्मक अवस्था में है। अतः व्यक्ति अपने शरीर के वाह्य अंगों के परिवर्तन से संवेगों की अभिव्यक्ति करता है, जैसे- क्रोध की अवस्था में व्यक्ति का चेहरा लाल, भृकुटी चढ़ी हुई, काँपते होंठ, फड़कती भुजाएँ क्रोध की अभिव्यक्ति के स्पष्ट प्रतीक हैं। संवेग में कोई न कोई आत्मनिष्ठ भाव अवश्य होता है जिसकी अभिव्यक्ति सुखद व दुखद दोनों के रूप में होती है। खुशी संवेग में सुखद भाव व भय संवेग में दुखद भाव की अनुभूति होती है। किसी भी संवेग में सुखद एवं दुखद दोनों भाव एक साथ नहीं होते हैं अर्थात् बिना भाव के संवेगों की अभिव्यक्ति संभव नहीं है।

संवेग की विशेषताएँ-

विकासवादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार संवेगों में कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ पाई जाती हैं जिनके आधार पर संवेगों का स्वरूप स्पष्ट होता है ये विशेषताएँ निम्नवत् हैं-

संवेग विकीर्ण होता है- संवेग की विकीर्णता से तात्पर्य सम्पूर्ण शरीर की क्रियाओं में एक तरह के तनाव व परिवर्तन से है अर्थात् संवेगात्मक तनाव अंग विशेष में न होकर सम्पूर्ण शरीर में उत्पन्न होता है। ऐसा शरीर की आन्तरिक क्रियाओं में घटित होने वाले परिवर्तनों के कारण होता है। प्रत्येक संवेग में तनाव की विकीर्णता का स्वरूप अलग-अलग होता है। क्रोध की अवस्था में व्यक्ति अत्यधिक आवेशपूर्ण हो जाता है जिससे उसके होंठ, पैर, एवं हाथ कांपने लगते हैं, किन्तु कुछ व्यक्ति क्रोध की अभिव्यक्ति आवाज की तीव्रता बढ़ाकर करते हैं तो उनमें किसी प्रकार का दूसरा शारीरिक परिवर्तन परिलक्षित नहीं होता है, जबकि भय, खुशी, उल्लास, उत्साह आदि में तनाव का विस्तार सम्पूर्ण शरीर में होता है।

संवेगों में सततता होती है-

सभी संवेगों में सततता या निरन्तरता पाई जाती है। संवेग के उत्पन्न हो जाने के बाद सम्बन्धित उद्दीपक के हट जाने के बाद भी कुछ देर तक व्यक्ति में संवेग पाया जाता है। सांप को अचानक देखकर बालक में डर संवेग की उत्पत्ति होती है। बालक सांप को देखकर डर जाता है। सांप के दूर चले जाने के बाद भी बालक में सांप के डर का संवेग कुछ देर तक बना रहता है। संवेगों की निरन्तरता का मूल कारण शरीर के आंतरिक अंगों की चिकनी मांसपेशियों की संरचना एवं उनका कार्य होता है। इन मांसपेशियों की बनावट ही ऐसी होती है कि वे जल्दी तो किसी भी उद्दीपक से उद्दीप्त नहीं होती, किन्तु यदि उद्दीप्त हो गई तो पुनः सामान्य अवस्था को ग्रहण करने में समय लगता है। यह समयान्तराल जितना अधिक होता है उतनी ही अधिक संवेगात्मक सततता पाई जाती है।

संवेग संचयी होता है-

संचयीता का तात्पर्य जब कोई संवेग एक बार उत्पन्न हो जाता है तो कुछ क्षण के पश्चात उनसे उत्तरोत्तर बढ़ोत्तरी होती

है। ऐसा इसलिए है कि संवेग से व्यक्ति में एक विशेष प्रकार की मानसिक वृत्ति पैदा होती है, जिससे व्यक्ति की प्रतिक्रिया उस दिशा में बढ़ जाती है।

संवेग प्रेरणात्मक होता है-

संवेग की इस विशेषता को मनोवैज्ञानिकों (विटेकर, 1970) एवं मार्गन, किंग तथा रॉबिन्सन 1981, ने महत्त्वपूर्ण माना है। यह देखा गया है कि जब व्यक्ति में तीव्र संवेग उत्पन्न होता है तो उसका व्यवहार किसी लक्ष्य की तरु उन्मुख होता है, अर्थात् संवेगात्मक व्यवहार किसी न किसी लक्ष्य की तरु निर्देशित अवश्य होता है।

संवेगात्मक विकास में परिपक्वता एवं अधिगम की भूमिकाः-

मानव व्यवहार में जन्म से ही विभिन्न प्रकार के संवेगों की अभिव्यक्ति होती है। सभी प्रकार के संवेगों की उत्पत्ति बालकों में जन्म से नहीं पाई जाती। संवेगों के विकास के संदर्भ में प्रथम विकासवादी अध्ययन वाटसन, 1942 द्वारा किया गया। नवजात शिशु द्वारा उद्दीपन के प्रति की गई प्रतिक्रियाओं के आधार पर वाटसन ने स्पष्ट किया कि नवजात शिशुओं में जन्म के समय- भय, क्रोध एवं अनुराग नामक संवेग उपस्थित रहते हैं। शिशु की श्वास क्रिया का रुक जाना, अपनी पलकों को बंद करना, होठों का सिकुड़ना एवं रोने की क्रिया से डर संवेग की अभिव्यक्ति होती है। हाथ व पैर का पटकना, व शारीरिक अकड़न के रूप में शिशु क्रोध की अभिव्यक्ति करता है। रोते शिशु का चुप होकर मुस्कुराना, अनुराग संवेग का प्रदर्शन होता है। वाटसन के अनुसार बालकों में इन तीनों (डर या भय, क्रोध एवं प्रेम) संवेगों की उत्पत्ति कुछ विशेष उद्दीपन का परिणाम होती है। यथा- डर संवेग की उत्पत्ति शिशु में तीव्र धवनि एवं ँचाई से नीचे गिरने से उत्पन्न होती है। शिशु स्वयं हाथ एवं पैर की क्रियाएं करता है किन्तु जब उसकी स्वतंत्र क्रियाओं में अवरोध उत्पन्न होता है तो क्रोध का संवेग उत्पन्न होता है। शिशु के प्रति सहानुभूति व्यवहार एवं गुदगुदाने की क्रिया से अनुराग संवेग की उत्पत्ति होती है।

संवेगात्मक विमाएँ-

संवेग में वैयक्तिकता पाई जाती है। एक ही संवेगात्मक उत्तेजना के प्रति अलग-अलग व्यक्तियों में अलग-अलग हाव-भाव का प्रदर्शन देखा जा सकता है किसी संवेगात्मक उत्तेजना के प्रति व्यक्ति किस प्रकार के संवेग की अभिव्यक्ति करेगा। यह उसके अधिगम पर निर्भर करता है। किसी उद्दीपक को देखने का दृष्टिकोण प्रत्येक व्यक्ति का अलग-अलग होता है। इसी कारण संवेगात्मक विकास एवं अभिव्यक्ति में भी वैयक्तिकता पाई जाती है। मनोवैज्ञानिक सैन्नोर्ड के अनुसार संवेग में निम्नलिखित विमाएं निहित होती हैं जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

1. उच्च-निम्न- इस विमा पर व्यक्ति के संवेगों की अभिव्यक्ति अत्यधिक उच्च स्तर एवं अत्यधिक निम्न स्तर की पाई जाती है। जैसे कुछ व्यक्ति प्रेम संवेग की अभिव्यक्ति उच्चतम रूप से करते हैं अर्थात् उन्माद की स्थिति उनमें पाई जाती है जबकि कुछ व्यक्तियों में निम्नतम स्तर पर प्रेम की अभिव्यक्ति पायी जाती है।
2. . प्रबल एवं दुर्बल- इस विमा पर व्यक्ति के संवेगों की तीव्रता का ज्ञान होता है कि प्राणी में पाया जाने वाला संवेग अधिक तीव्र हो सकता है व कम तीव्र अर्थात् दुर्बल या कमजोर एक ही उद्दीपन के प्रति कुछ व्यक्तियों में प्रबल क्रोध एवं कुछ व्यक्तियों में दुर्बल क्रोध की अभिव्यक्ति होती है। प्रबल-दुर्बल विमा सभी प्रकार के संवेगों में पाई जाती है।
3. बहुत कम- किसी व्यक्ति में संवेग अधिक मात्रा में पाया जाता है और कुछ व्यक्तियों में अत्यधिक कम या क्षीण रूप में। अपनी संतान की सफलता एवं सुकर्म पर कुछ लोग अत्यधिक खुशी व्यक्त करते हैं तो कुछ लोग अत्यधिक कम या व्यक्त ही नहीं करते। इस प्रकार की विमीय विशेषता अन्य संवेगों में भी पाई जाती है।
4. व्यापक प्रसार-सीमित प्रसार- किसी संवेग का प्राणी पर कितना प्रसार या फैलाव है का ज्ञान इस विमा से होता है। किसी डरावनी वस्तु या उद्दीपक को देखकर भय की उत्पत्ति स्वाभाविक है किन्तु गय के फैलाव में अंतर हो सकता है। किसी बालक, व्यक्ति में भय का फैलाव अधिक न किसी में कम सकता है।
5. नियंत्रित अनियंत्रित अभिव्यक्ति नियंत्रित अनियंत्रित विमा का तात्पर्य यह है कि किसी व्यक्ति में किसी संवेग की अभिव्यक्ति स्वतंत्र या अनियंत्रित रूप में होती है व किसी व्यक्ति में नियंत्रित रूप में। उदाहरणार्थ- क्रोध की स्थिति में कुछ लोगों द्वारा चिल्लाना, तेज आवाज में बोलना तथा आक्रामक व्यवहार करना, अनियंत्रित अभिव्यक्ति माना जाता है, जबकि कुछ लोगों में क्रोध की स्थिति मे मनमसोस कर रहना, मन-ही-मन क्रोध करने का व्यवहार, नियंत्रित अभिव्यक्ति होती है। इसी प्रकार खुशी में कुछ लोग ठहाका मार कर हंसते हैं अनियंत्रित एवं कुछ लोग खुशी की अभिव्यक्ति केवल मुस्कुराकर करते हैं नियंत्रित अभिव्यक्ति है।
6. स्वाभाविक-अस्वाभाविक इस विमा का तात्पर्य है कि व्यक्ति में उत्पन्न होने वाला संवेग स्वाभाविक परिस्थिति में है या स्वाभाविक भयावह उद्दीपक को देखकर भय संवेग की उत्पत्ति स्वाभाविक है, किन्तु संतान की सफलता पर माता-पिता का दुखी होना अस्वाभाविक संवेगात्मक अभिव्यक्ति है। इसी प्रकार किसी व्यक्ति की मृत्यु पर हंसना एवं किसी बालक

के जन्म पर रोना अस्वाभाविक अथवा असंगत संवेगात्मक अभिव्यक्ति होती है। किन्तु कुछ परिस्थितियों में संवेगों की अस्वाभाविक अभिव्यक्ति स्वाभाविक हो जाती है, जैसे किसी मुर्दे को देखकर कब्र खोदने वाले में खुशी का अनुभव एवं अनोखी मुस्कान एक प्रकार की स्वाभाविक अभिव्यक्ति पाई जाती है।

बालक के जीवन में संवेगों का महत्त्वः-

जीवन के विकास में बालकों के लिए संवेगों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों द्वारा बालकों में पाये जाने वाले संवेगों के महत्त्व को प्रमाणिक माना गया है। बालकों की दैनिक क्रियाओं से स्वयं को आनन्द की प्राप्ति होती है। एक तरु बालक को जीवन में हर्ष, खुशी, अनुराग एवं जिज्ञासा नामक संवेगों से सुख की प्राप्ति होती है तो दूसरी ओर क्रोध, भय, डर एवं आक्रामकता, घृणा की अभिव्यक्ति से बालक अपने आपको तनाव से मुक्त रखता है। संवेग जीवन के लिए उतना ही महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक है जितना कि भोजन एवं सांस लेना। मानव एवं पशु में समान प्रतिक्रियाएं पाई जाती है। भय एवं क्रोध आदि की स्थिति में संवेग एक आपातकालीन क्रिया है जो व्यक्ति को दूर भागने या प्रतिकार करने के लिए प्रेरित करती है। लैंगिक प्रक्रिया एवं शिशु के प्रति रागात्मक भाव के रूप में संवेग महत्त्वपूर्ण व्यवहार करते हैं। बालक चेतना या अचेतन रूप से संवेगों की अभिव्यक्ति दूसरों को प्रभावित करने के लिए करता है। छोटे बालक अपनी इच्छाओं की पूर्ति एवं अपनी बात मनवाने के लिए रोने-चिल्लाने व जमीन पर लेट जाने आदि का व्यवहार करता है। क्रोध की अवस्था में बालक का मुठी बांधना, शरीर को अकड़ लेना अपने से छोटे बालकों पर प्रभुत्व प्रदर्शित करने का व्यवहार करता है। आनन्द के सम्बन्ध में हरलॉक (1978) का विचार है कि शारीरिक आधार पर आनन्द प्रकृति की अनुपम औषधि है। जिससे तनाव की समाप्ति एवं आराम की प्राप्ति होती है। जब बालक अपनी संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं की पुनरावृत्ति करता है तो ये संवेगात्मक प्रतिक्रियाएं आदत के रूप में विकसित हो जाती हैं। सुखदायी संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं से बालकों में आदतों का निर्माण होता है।

विवेचनाः-

उपरोक्त अध्ययन के निष्कर्ष से यह ज्ञात होता है कि श्रवण बाधित विज्ञान वर्ग के बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के संवेगात्मक स्थिरता में सार्थक अंतर इसलिए नहीं पाया गया क्योंकि विज्ञान वर्ग के बालक एवं बालिका दोनों ही विद्यार्थियों में संवेगात्मक स्थिरता की दृष्टि से लगभग समान स्थिति प्रदर्शित करते हैं। साथ ही विज्ञान वर्ग विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति वाले होते हैं जिससे उनके संवेगात्मक स्थिरता पर लिंगभेद का विशेष प्रभाव नहीं पाया गया है। इसके साथ इस वर्ग के श्रवण बाधित बालक एवं बालिका विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता उत्तम पाई गई है। जैसा कि उनके संवेगात्मक स्थिरता के प्राप्तांक से स्पष्ट है कि जिनका मध्यमान क्रमशः 62.83 तथा 59.08 है।

निष्कर्ष की शैक्षिक उपयोगिताः-

1 प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष के आधार पर श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शिक्षा हेतु शिक्षकों को आवश्यक मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रशिक्षित किया जा सकता है।

2 प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर श्रवण बाधित व्यक्तियों में अपेक्षाकृत अभिक्षमता को सृजनात्मक बुद्धि तथाअन्य विकासात्मक गुणों का विकास किया जा सकता है।

3 प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा प्रशासकों, संस्थानों एवं प्रधानों को विद्यालय के वातावरण में इन विद्यार्थियों को आवश्यक वातावरण तैयार में मददगार होंगे।

संदर्भ ग्रंथ -

1 पुनर्वास के आयाम- जे. से. फ.ए.आर. डॉ., संस्करण द्वितीय (2005). प्रकाशन-समाकलन, पब्लिशर्स विकलांग समाकलन संस्थान, करौदी, बी.एच.यू., वाराणसी, पृ. सं.- 60-68।

2 सिंह, अरुण कुमार- शिक्षा मनोविज्ञान (2010), नई दिल्ली, प्रकाशन, पृ. सं.-284।

3 सिंह, अरूण कुमार एवं सिंह, कुमार आशीष- आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान (2011), मोतीलाल बनारसीदास, जवाहर नगर दिल्ली, पृ. सं.- 102-109।

4 उपाधयाय, कुमार राजेन्द्र- विकासात्मक मनोविज्ञान (2009), प्रकाशक- मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 286-293।

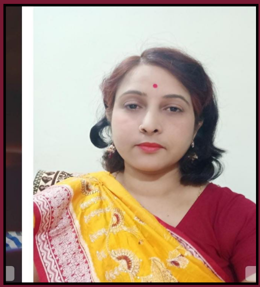

श्वेता कुमारी
सहायक प्राध्यापिक

महिला सशक्तिकरण में उनकी बदलती भूमिकाओं का योगदान

प्रस्तावना

बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से ही महिला सशक्तिकरण की अवधारणा अधिक बलवती हुई है। प्राचीन भारत में यहाँ की सामाजिक व्यवस्था को रामराज्य की संज्ञा मिलती थी अर्थात सभी जीवधारिभों को शोशण मुक्त रखना। स्त्री पुरुष में पूरी समानता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिलक्षित होती थी।

पुरुष प्रधान समाज होने के बावजूद भी स्त्रियों को सरस्वती दुर्गा और काली आदि नामकरणों से सम्बोधित भी किया जाता रहा है। ज्ञान की शक्ति सरस्वती शौर्य की प्रतीक दुर्गा और ऐश्वर्य (धन दौलत) की प्रतीक लक्ष्मी सभी स्त्रियों ही रहीं है।

यह उदाहरण इंगित करता है कि वैदिक काल में स्त्रियों का समाज में पूजनीय स्थान कहा भी जाता हैं कि जिस समाज में स्त्रियों का सम्मान होता है, वह समाज धन, धान्य, ज्ञान और शौर्य से परिपूर्ण होता है। मुगलों के शासनकाल से प्रारंभ होकर और अंग्रेजो के शासनकाल से महिलाओं के सामाजिक प्रस्थितियों में अधिक अंश की गिरावट आयी। जिसका दुष्परिणाम है कि भारत की नारी जो कभी पूजनीय थी।

दूसरे दर्जे के नागरिक के रूप में देखी जाने लगी स्त्रियों के इस दयनीय दशा में सुधान के लिए महिला सशक्तिकरण का नारा और उसके लिए प्रभास में यह आवश्यक हो गया कि महिलाओं की परम्परागत भूमिकाओं में बदलाव लाया जाये। इसी मानसिकता से वशीभूत होकर समाज में स्वतंत्र भारत की सरकार में न केवल प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालयी स्तर तक की शिक्षा अनेक प्रांतो में नि:शुल्क कर रखा है ताकि महिलाए अपनी अर्जित योग्यताओं को बढ़ाकर नयी-नयी भूमिकाओं कों ग्रहण करे हो सकता है कि महिलाओं के इन मानसिकता के कारण भूमिका दन्द की स्थिति भी अवतरित हो फिर भी यह स्वागत योग्य इसलिए होगा क्योंकि अर्जित योग्यता के आधार पर मिली प्रस्थिति और भूमिकाओं के कारण महिला सशक्तिकरण में वृद्धि होगी।

सामाजिक प्रस्थिति दो प्रकार की होती है

1 प्रदत्त सामाजिक प्रस्थिति और

2 अर्जित सामाजिक प्रस्थिति

पुरुष प्रधान परम्परागत भारतीय समा जमं यह एक सामान्य धारणा रहीं है कि धर के बाहर की समस्त आर्थिक गतिविधियों में केवल पुरुष भाग लेगा, महिलाए केवल धर के अंदर ही कामकाज देखेगी।

यह सही है कि धर के अंदर के कामकाज अधिक महत्त्वपूर्ण है फिर भी महिलाओं के इन गतिविधियां के महत्त्व की अनदेखी की जाती रहीं है। यह अक्सर कहते और सुनते पाया जाता है कि महिलाएं परिवार की आर्थिक विकास में कोई योगदान नहीं करती।

घरेलू कामकाज जो अधिकांशत: महिलाओं द्वारा ही सम्पादित होता है उसका वास्तविक मूल्यांकन संभंव ही नहीं है। बच्चों के लालन-पालन और सामाजिकरण से लेकर वृद्धों की देखभाल तक का जिम्मा जो महिलाओं के कंधे के कंधे पर होता है उसका मूल्यांकन लाखों करोड़ो रूपये से भी नहीं किया जा सकता। फिर भी कहा जाता है कि महिलाएं आर्थिक विकास में योगदान नहीं करती।

इस संकीर्ण विचारधारा के विरोध में महिलाओं ने नारी आन्दोलन के रूप में महिला सशक्तिकरण और विविध प्रकार के भूमिकाओं के संचालन का प्रण किया है। जिसका परिणाम है कि अब स्त्रियाँ घर के परम्परागत क्रिया-कलापों के साथ-साथ व्यापारिक प्रतिष्ठानों, शैक्षणिक संस्थाओं, अस्पातालों, सरकारी कार्यालयों अर्थात सर्वत्र अर्जित प्रस्थिति के आधार पर काम

करते हुए देखी जा रही है। यह स्थिति बाध्य कर रहीं है कि लोगो कि मानसिकता यह सोचने पर मजबूर हो कि महिलाएँ भी पारिवारिक, आर्थिक व्यवस्था में सक्रिय भागीदार की भूमिका निभा रही है। महिलाओं द्वारा निर्मित यह परिवेश निसंदेह उनमें स्वावलंबन और सशक्तिकरण की भावना को तीव्रतर कर रहा है।

महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य महिलाओं की आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक, आधयात्मिक एवं लैंगिक स्थिति में सुधार से है जैसा पहले लिखा जा चुका है भारतवर्श में मुगल काल से ही महिलाओं की सामाजिक स्थिति संतोशजनक नहीं रहीं है। अतः यह आवश्यक है कि उनके सामाजिक स्थिति कों जिसके लिए अनेक कारक जिम्मेदार है सुधार लिये जायें।

महिला सशक्तिकरण को एक प्रक्रिया के रूप में अपनाने की आवश्यकता होगी तभी उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक,शैक्षिक आदि पहलुओं में निरंतर वांछनीय परिवर्तन संभव हो सकेगा।

महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ेगा जो आत्मसम्मान वृद्धि में आवश्यक है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में स्पष्ट रूपा से लिखा है कि यह सभी नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय प्रदान करता है साथ ही साथ सभी के विचारों, विश्वासों, प्रतिष्ठा और अवसर, धर्म और उपासना ही स्वतंत्रता प्रदान करता है इसी के आधार महिला सशक्तिकरण का मुख्य आधर भी बनता है। भारतीय संविधान के विभिन्न अनुच्छेदों में महिलाओं को मुख्य धारा से जोड़ने का संकेत मिलता है उदाहरण स्वरूप संविधान का अनुच्छेद 14 राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में समान अधिकार और अवसर पर बल देता है।

संदर्भ सूचीः-

1 देवेन्द्र इस्सर, स्त्री मुक्ति के प्रश्न, संवेदा प्रकाशन मुम्बई, मेरठ, पृ. 117

2 कुरुक्षेत्र, महिला सशक्तिकरण अंक मार्च 2015, पृ. 25

भारतीय कलाकारों की कोलाज तकनीक का अध्ययन

नरेन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक

प्रस्तावना

भारतीय कलाकारों ने भी सौंदर्य निपुणता एवं वारीकी के साथ वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला एवं शिल्पकला के क्षेत्र में उत्तम कृतिओं का निमार्ण किया जो ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक, धार्मिक, परम्पराओं से है क्योकि कलाएं परम्पराओं की निर्वाहक होती है। समकालीन कला का उदय 19वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी के माधय निर्मित कला के लिए संदर्भित किया जाता है। उसी समय पाश्चात्य कलाकारों ने अपनी रचनात्मक कला कृतियों को कोलाज माध्यम से निर्मित किया। ये धनवादी कलाकार 'पाब्लो पिकासों' व जार्जब्राक के संयुक्त प्रयासों से संभव हो सका है।

समकालीन कला में कुछ नवीन तत्व थे जो पाश्चात्यकला के स्वरूप की झलक दिखाई देती थी क्योकि अमूर्तकला और अतियथार्थवाद आदि का प्रभाव भारतीय कला पर भी असर दिखने लगा। इस शैली में संभावनाए दिखाई देने लगी और उसमें हो रहें परिवर्तन से प्रभावित होकर इस तकनीक नये प्रयोगों द्वार अपनी पहचान राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर बनायी।

कोलाज शैली:-

कोलाज शैली का जन्म (1912-1914) में हुआ। आधुनिक स्वरूप में कोलाज कला का श्रेय पाब्ले पिकासों और जार्जब्रक को जाता है। ये क्यूक्जिम अविष्कारक धनवादी चित्रकार माने जाते है।

कोलाज शब्द का अर्थ:-

कोलाज शब्द की उत्पति फ्रांसीसी भाषा के "कोलर" शब्द से हुई है। जिसका अर्थ होता है। 'चिपकाना' विभिन्न अनुपयोगी वस्तुओं अथवा कागज को गोंद या अन्य चिपकाने योग्य पद्धति से कोई कलात्मक आकार या रूप प्रदान करना ही कोलाज है।

कलाविदों के अनुसार:- परिभाषा डॉ. ममता चतुर्वेदी

"कला जीवन का अनुकरण मात्र ही नहीं है बल्कि वह मौजिक सृजन है, पुननिर्माण है सृष्टि है।"

2. कोलाज शैली की तकनीक:-

कोलाज(बवससंहम) तकनीक जिसमें विविध चीजों के संयोजनों से नवीन कृति का निर्माण होता है। जैसे:- मैग्जीन के रंगीन पेपर, रंगीन हैंडमेड कागज, फोटोग्रा"स, काँच के टुकड़े, लकड़ी आदि अनउपयोगी वस्तुओं का उपयोग शामिल है। यह किसी समतल भूमि, मोटे बोर्ड, पेपर पर कोलाज आकृतियों का सृजन किया जाता है।

वुड कोलाज:- इसमें लकड़ी के टुकड़ो को बोर्ड पर चिपका कर नवीन संयोजनों का सृजन किया जाता है। साथ ही किसी भी बेकार मान ली वस्तुओं से भी कोलाज बनाते है।

केनवास कोलाज:- इस प्रकार के तकतीक ब्रिटिश कलाकार 'जान वाकर' ने 1970 में अपनी पेंटिग में किया था जिसमें उसने पूर्व में निर्मित केनवास पेंटिग के छोटे-छोटे टुकडों को केनवास चिपकाकर नवीन चित्र का सृजन किया 1960 के आसपास अमेरिकन कलाकार 'जान पेंक' जैसे कलाकारों ने अपनी पूर्व निर्मित केनवास चित्रों को कई छोटे-छोटे हिस्सों में काटकर पुन: उन्हे नये संयोजन के रूप में चिपका कर नई कृति का निर्माण करते थे।

डिकूपेज:-

यह कोलाज की ऐसी तकनीक है जिसे क्राप्ट के रूप में परिभाशित किया गया है। इस तकनीक से निर्मित कृतियों की अनेक प्रतियां बनाई जा सकती थी। इसमें किसी वस्तु पर अलंकरण के निर्मित चित्रों को काट कर चिपकाया जाता है। और उसपर वार्निश या वाश कर सुरक्षित किया जाता है। 20वीं शती के पूर्वा) में इसका उपयोग अंकन की अपेक्षा अमूर्त आकृतियो का अंकन अधिक किया गया है।इस प्रविधि में पिकासो और हेनरी मातिस ने अनेक कृतियों का सृजन किया 'मातिस' की

कृति 'ब्लू न्यूड द्वितीय' प्रसिद्ध) है।

कोलाज शैली एक ऐसी विधि है जिसमें रंग, ब्रश, का प्रयोग नहीं होता है। लेकिन प्राचीन समय में चित्रकार प्राकृतिक रंगों जैसे:- टेसू के फूलों से लाल रंग, हल्दी से पीला रंग, कोयला से काला रंग बनाया जाता था। कोलाज तकनीक में कलाकार उपयोगी-अन्नपयोगी वस्तुओं से सुन्दर कृतियों का निर्माण कर कोलाज चित्रों का सृजन किया जाता है। जो देखने में आकर्शक लगते है। जिससे हमें आनन्द की अनुभूति होती है। कोलाज भी कला के क्षेत्र में नवीन शैली नहीं है। मेरा मानना है कि कोलाज कला का मूल बीज लोक परम्पराओं में निहित है ये कला भारतीय परम्पराओं में पहले से ही है।

उदाहरण:-

वृन्दावन शोध संस्थान से प्राप्त साक्ष्य के अनुसार 'सांझी कृष्ण' पेंटिंग कला की एक परम्परा है जो कि उत्तर भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश में में फली-फूली है। यह भगवान श्री कृष्ण की मातृभूमि, व्रज या वृंदावन में है, जहाँ साझी पेटिग की यह कला अपने चरम पर पहुँच गई है। यह कला चित्र क्षेत्र की लोक संस्कृति में निहित है। 15वीं और 16वीं शताब्दी में वैष्णव मंदिरों की महिमा की गई है।

मथुरा की साझी कला वास्तव में एक शिल्प शैली है जिसमें कटे हुए कागज के अति सुंदर डिजाइन और जटिल चित्र रूपांकन है। शिल्पकार इस प्रक्रिया को पूरा करने के लिए विशेश रूप से डिजाइन की गई कैची का उपयोग करते है। सांझी चित्र में कृष्ण के अलावा मोर बैलगाड़ी घोड़ा, गाय, तितलियाँ और पेड़ स्टेंसिल पेपर पर बनाए गये है। ये कला कोलाज विद्या के चिन्ह दर्शित होते है। अत: हम कह सकते है कि ये कला पश्चिम देशों से पहले हमारे यहाँ विद्यमान थे इससे पता चलता है कि ये कला हमारे यहाँ से आई है।

3. समकालीन भारतीय कलाकारों की तकनीक (कोलाज):-

कोलाज चित्रण में भारतीय चित्रकारों ने अनेक प्रयोग किये जिसमें शांतिनिकेतन के कला गुरु विनोद बिहारी मुखर्जी ने कागजो के सुन्दर कोलाज का निर्माण किया जो एक अनुठा और अनुपम कला है।

उमा शर्मा:-

उमा शर्मा उन प्रभावशाली कलाकारो में से है जिन्होंने अपनी कोलाज कला की एक नवीन शैली विकसित की और कोलाज कला में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की इनका जन्म 1950 में मथुरा में हुई। उमा शर्मा जी बताती है कि कोलाज कला का संयोजन करते समय जिन सामग्री का उपयोग करते है जिसमें सर्वप्रथम पेपर की कतरन, न्यूज पेपर में प्रयुक्त विज्ञापन आदि का उपयोग शामिल है। वह अपनी कलाकृति में जैसे मंदिर के आकार को दर्शाने के लिए यह बोर्ड, कैनवास पर सर्वप्रथम कल्पना के अनुसर आकृति के निर्माण करने के लिए सीधे न्यूज पेपर को कृति के अनुसार चिपकाती है फिर अनुभव के आधार पर गोंद की सहायता से उस पर सुन्दर कलाकृति का सृजन करती है। यह यथार्थवादी कोलाज तकनीक में चित्रण करती है। उन्होने कोलाज विद्या में चित्रण करते समय इनको ब्रजधाम "इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड" में इनकी कोलाज कृति आज भी दिल्ली में सुरक्षित है। उनकों "उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा विशिष्ट "कला सम्मान" से सम्मानित किया गया है। इनकी मुख्य कृतियों में "वांसुरी बजाते कृष्ण" स्वामी शरणानंद महाराज जी, मथुरा, वृन्दावन के सभी घाटों में विश्राम घाट आदि चित्रों का चित्रण कोलाज विद्या में अनोखा संयोजन के द्वारा अपने भावों को कोलाज विद्या में प्रदर्शित कि है(इनको कोलाज कला से बहुत लगव है। आज भी नया आयामद ने में योगदान दे रही है।

जी सुब्रमण्यम:-

जी सुब्रमण्यम विशिष्ट कलाकारों में से एक है। सुब्रमण्यम जी का जन्म 1952 ई में थांडबंकुलम् में हुआ था जो तमिलनाडू में है। इन्होने अपनी कोलाज के माध्यम से सुन्दर अलंकरण कर अपनी एक उत्कृष्ट पहचान बनाई। इनके कोलाज चित्रण में त्रिआमामी विस्तार दिखाई देता है। जी सुब्रमण्यम मिश्रित मिडिया माध्यम में काम करते है। कोलाज तकनीक के अंतर्गत रंगीन कागज पत्रिकाओं के छोटे-छोटे टुकड़े करके अपनी आकृति के अनुसार कैनवास पर सर्व प्रथम स्कैच बनाते है फिर इंकवाश का प्रयोग करके पूरे कैनवास पर कागज से अपनी बनाई गई आकृति पर गोंद की सहायता से चिपकाकर कोलाज की अनूठी कृतियाँ को संयोजन कर मन में नई उमंग भर देते है। इनकी मुख्य कृतियों में बुद्ध कृष्ण, गणेश, हनुमान आदि की पौराणिक धार्मिक चित्रों का चित्रांकन कर अपनी कृति को कलात्मक रूप होकर अपने भावों की अभिव्यक्ति करते है।

जी सुब्रमण्यम को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। जिनके 1998 में तमिलनाडु राज्य ललितकला अकादमी पुरस्कार, ए. आई. ए. सी. अवाई, आल इंडिया फाईन आर्ट्स एवं क्रा"ट्स सोसाइटी, नई दिल्ली (2000)। यह एक कर्मठ कलाकार के रूप में उभरे है। उनकी कोलाज कलाकृति जीवन में आंनद या अनुभव कराती है।

अन्य कोलाज कलाकारों में उत्कृष्ट चित्रकार में अमृत लाल बेगड जी का नाम आता है। इनका जन्म 3 अक्टूबर 1928 को जबल पुर, मधय प्रदेश में हुआ था इनकी शिक्षा 1948 से 1953 तक शांति निकेतन में हुई वहा उन्होने कला का अध्ययन

किया। इन्होने नर्मदा पद यात्र का चित्रांकन करते रहे और जल रंग छोड़कर कोलाज माध्यम अपनाया, रंगीन पेपर, मैग्जीन, कागज की करतण का उपयोग किया है। इनकी धर्मयुग नामक प्रसि) पत्रिका में उनका कोलाज वृतान्त के साथ (1978) में प्रकाशित हुए। ये वातावरण के अनुरूप कोलाज चित्रों का सृजन करते थे। उनकी प्रमुख्य कृतियों में स्त्री ओर तोता है।

कोलाज कला में सतीश कुमार गुजराल भी है इनकी कृति 'दुर्गा' (1967) में सृजन किये। अतः इन सभी समकालीन कला में निहित रहकर नवीन विद्या में रेखा चित्रों को अलंकरण द्वारा भारतीय चित्रकारों ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4. उद्देश्य

आधुनिक समकालीन भारतीय कलाकारों की कोलाज तकनीक का अध्ययन में प्रस्तुत विशय के उद्देश्य मुख्यतः इस प्रकार है।

- समकालीन कला में कोलाज का अध्ययन
- कोलाज की विभिन्न तकनीको का अध्ययन
- भारतीय कलाकारों पर कोलाज का प्रभाव एवं दृष्टिकोण।
- कोलाज की विशेशताओं पर प्रकाश डाला जाएगा।
- कोलाज चित्रण एवं उपयोगिता।
- आधुनिक कला के प्रमुख चित्रकारों का कोलाज चित्रण के संदर्भ में आलंकारिक अंकन।
- कोलाज चित्रण में नवोदित चित्रकारों की कला कृतियों का सृजनात्मक प्रभाव।
- अनुपयोगी वस्तुओं से सुंदर कृतियों का निर्माण कर कोलाज चित्रों का सृजन करना।

5. निष्कर्ष

आधुनिक एवं समकालीन कलाकारों की कोलाज तकनीकी का अध्ययन कर मैने सभी निहित तथ्यों को एकत्रित किया है इसका विश्लेशण कर मैं इस निश्कर्श पर पहुँचा है कि कोलाज विद्या एक सृजनशील व कलात्मक शैली है। इसमें मानव अपनी आंतरिक भावों विचारों की अभिव्यक्ति कोलाज के माधय से दर्शा सकता है। कोलाज विद्या कला का एक श्रेष्ठ शैली है। इसलिए इस विद्या के नवाचार हमेशा कला को विकसित करता है। जन जागरूकता लाने के लिए पर्यावरण एवं सामाजिक घटनाओं को हम कोलाज के विद्या में चित्रांकन कर प्रदर्शित कर नई चेतना ला सकते है। समकालीन कलाकारों की कार्य शैली में विभिन्न विविधताएँ देखने को मिलती है। जैसे- उमा शर्मा जब कोलाज तकनीक का प्रयोग करती थी तो वह कैंची, रंग, ब्रश आदि के प्रयोग नही करती थी। जी सुब्रमण्यम भी अपनी कोलाज चित्रों को बनाते समय सर्वप्रथम स्केच के वाद इंकवाश फिर रंगीन पत्रिकाओं के छोटे-छोटे टुकड़े द्वारा अपनी कल्पना के अनुसार गोंद की सहायता से चिपकाकर कोलाज चित्रण करते है। जिससे कोलाज विद्या के विकास उनकी विशेशताएँ उद्देश्यों, सृजनात्मकता व कलात्मक दृष्टिकोण से सभी समकालीन कलाकारो का योगदान महत्त्वपूर्ण है। कोलाज तकनीक विद्या को महत्त्वपूर्ण ऊँचाई तक ले जाने के लिए उच्चस्तर पर निरंतर प्रयास जारी है।

संदर्भ ग्रंथः-

Agarural, G.K (2011), Modern Aligarh:-

Latit kala Prakashan (155-158), Balwant, Samkaleen Bharateey kala Rajasthandyk सैद्धान्तिक (लक्ष्मी नारायण नायक)

संजीव कुमार
सहायक प्राध्यापक

आधुनिक शिक्षा में संगीत का महत्त्व

प्रस्तावना

संगीत में एकदिव्य शक्ति है, मानव ही नहीं पृथ्वी पर पूरे जीवों को प्रभावित करता है। संगीत में शुद्ध विचार, शुद्ध भावना, शुद्ध क्रिया तथा शास्त्रीय अध्ययन के द्वारा प्रदर्शन किया जाता है। यह भी कहा जाता है कि संगीत के माध्यम से ईश्वर की अनुभूति की जा सकती है। एक तरीके से माना जाए तो शिक्षा का महत्त्व और संगीत का महत्त्व मिलता- जुलता पड़ता है। जैसे- संगीत में रागप्रदर्शित करने के लिए समय, मौसम, गीत का भाव, सौंदर्य, सुर, ताल, लय, वादी स्वर, संवादी स्वर, राग के चलन इत्यादि का ध्यान रखा जाता है।

संगीत सीखने के लिए या संगीत अध्ययन के लिए विशेष भाषा का ज्ञान या प्रांतीय भाषा का ज्ञान जरूरी नहीं होता है। यह एक भावनात्मक पद्धति है और वैज्ञानिक भी है। संगीत एक विशेष प्रकार का कौशल है। शिक्षा के महत्त्व के बारे में हम जानते हैं कि शिक्षा मनुष्य के भीतर अच्छे विचारों का निर्माण करता है। मनुष्य के जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है। एक तरीके से कहा जाए तो संगीत के बारे में संगीत अध्ययन के आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि संगीत से भी मनुष्य के भीतर शुद्ध विचार का निर्माण होता है।

शिक्षण के क्षेत्र में संगीत का प्रभाव हमेशा से ही आकर्षक रहा है। कहा जाता है शिक्षा ही मोक्ष के प्राप्ति का साधन है, इसमें संगीत को जोड़ कर देखा जाए तो शिक्षा का उद्देश्य और सरल बन जाता है। शिक्षण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में गीतों का महत्त्व निर्विवाद स्वीकार्य है। गीतों के माध्यम से किसी विषयवस्तु को सरलता से न केवल अभिव्यक्त किया जा सकता है बल्कि कहीं अधिक बोधगम्य भी बनाया जा सकता है। गीत वातावरण की नीरसता, भारीपन, एकरसता, ऊब और भारीप नको दूर कर सरसता, समरसता, उमंग और उत्साही परिवेश का निर्माण करता है। सीखने सिखाने की प्रक्रिया को रोचक और ऊर्जावान बनाता है।

संगीत समकालीन संस्कृति की धड़कन है, समाज और राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है। संगीत के द्वारा भौगोलिक सीमाएं नदी, तालाब, पर्वत, घाटी, जंगल, कोहरा, सदी, गमी, वर्षा, पवन, फूल और पशु पक्षी प्राणवान हो उठते है।

संगीत के माध्यम से एकाग्रता आती है और सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान भी संभव है। संगीत एक साधना है जिसमें समाहित होकर व्यक्ति अपना जीवन आत्मिक और सात्विक विकास करता है। संगीत की शिक्षा से आत्मविश्वास बढ़ता है। संगीत की परंपरा वैदिक काल से पूर्व से है।

सामवेद के मंत्रों का उच्चारण स्वस्वर होता था। संगीत हमारे जीवन व सम्पूर्ण प्रकृति में समाया हुआ है। अगर हम किसी विषय वस्तु को संगीत तरीके से समझते हैं तो हमारे मन मस्तिष्क पर ज्यादा असरदायक होता है। आज आवश्यकता है कि हम शिक्षा को संगीत से जोड़ने का कार्य करें क्योंकि संगीत से मानसिक और शारीरिक तंदुरुस्ती बनी रहती है। हमारी शिक्षा का सर्वांगीण विकास के लिये संगीत एक महत्त्वपूर्ण साधन है, जिससे हम शिक्षण प्रणाली को सरल और रोचक बनाते है।

संगीत में ध्वनि का यानी आवाज साधना अधिक की जाती है, जिससे शिक्षा को गीत का रूप दे कर छात्र-छात्राओं के बीच रख सकते है। अगर भारतीय शिक्षा पद्धति को अध्ययन किया जाए तो पहले शिक्षा गुरु मुख विद्या थी यानी गुरुकुल पद्धति। इस पद्धति में गुरु जी गीत गाकर या कविता का रूप देखकर शिक्षा को आकर्षक बनाकर रखते थे इसीलिए विद्याथी गुरु जी को भगवान से ज्यादा पूजते थे। गुरुजी मंत्रों को संगीत से जोड़कर मन्त्रदीक्षा देते थे। उस समय में जो विद्याथी गुरु जी के साथ रह जाते थे। वे विद्वान और अनुभवी हो जाते थे। आज अगर शिक्षा को संगीत से जोर दिया जाए तो शिक्षा में क्रांति आ सकती है।

सारांश

यह शोध लेखन आधुनिक शिक्षा में संगीत का महत्त्व पर आधारित है। शिक्षा को मनोरंजक तथा आनंदमय बनाने के लिए संगीत कला को शिक्षा से जोड़कर पूरे मानवजाति को शिक्षा की ओर मोड़ सकते हैं। आधुनिक युग में संगीत से मानव जाति को आनंद की अनुभूति होती है। संगीत गायन, वादन और नृत्य तीनों कला होने के कारण भाव तथा विचार का आदान प्रदान करने में आसान मालूम पड़ता है।

संगीत में प्रांतीय तथा संस्कृति निहित होती है। संगीत को शिक्षा से जोड़ने से प्रांतीय तथा देशों के संस्कृति के बारे में आसानी से प्राप्त किया जा सकता है, जिससे शिक्षा का उद्देश्य तथा मानव का जीवन शिक्षा का उद्देशय तथा मानव का जीवन सफल बनाया जा सकता है।

उद्देश्य-

शिक्षा में संगीत को समाहित करने का उद्देश्य यह है कि शिक्षा ग्रहण करने में कभी बोझिल ना लगे मानसिक रूपा से भी सवस्थ रहे, क्योंकि हम अपने जीवन को आनंद की प्राप्ति के लिए जीते हैं। इसलिए शिक्षा हमारे जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण है और इसे प्राप्त करने के लिए संगीत का सहारा लेकर और सुगम बनाते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि संगीत के द्वारा शिक्षण प्रणाली को आसान बना सकते हैं

1 शिक्षा को आकर्शक बनाना तथा आधुनिक युग से शिक्षा को जोड़ना।

2 शिक्षा को आसान तथा मनोरंजक बनाना।

3 अलग-अलग भाषा, जाति, धर्म वाले छात्र छात्राओं को आपस में भाईचारा बनाना, क्योंकि संगीत का प्रयोग हर भाषा जाति धर्म के लोग करते हैं।

निष्कर्षः-

1. शिक्षा में केवल किताबी ज्ञान ही नहीं अपितु संगीत का होना आवश्यक है।
2. शिक्षा में संगीत के रहने से मन .बता नहीं है और मस्तिष्क में भारीपन महसूस नहीं होता है।
3. संगीत के साथ शिक्षा ग्रहण करना से हम अधिक ऊर्जावान और मनोरंजन के साथ ग्रहण करते हैं।
4. संगीत से प्रकृति, मौसम, समय इत्यादि का बोध अच्छे से कराता है।
5. शिक्षा के द्वारा सर्वागीण विकास के लिये संगीत आवशयक है।
6. संगीत के बिना शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण संभव नहीं है।
7. शिक्षण प्रणाली को संगीत से जोड़कर रखना चाहिए।
8. शिक्षा में संगीत के रहने से शिक्षा चौमुखी विकास होता रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. संगीत का अध्ययन
2. संगीत विशारद ग्रंथ का अध्ययन
3. आधुनिक शिक्षाका अध्ययन
4. गुरुकुल शिक्षा पद्धति का अध्ययन

भारतीय कला का इतिहास

आवृति चंद्रा
सहायक प्राध्यापक

प्रस्तावना

भारतीय कला का इतिहास अत्यंत प्राचीन काल का हैं। इसमें अनेक प्रकार से चित्रकारी के प्रारंभिक उदाहरण प्रागैतिहासिक कलाके है। जब मानव गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी किया करता था। भीमबेट की चित्रकारी किया करता था। भीमबेट की गुफाओं में की गई चित्रकारी 5500 ई. पू. चित्रकारी का कथा है।

प्राचीन काल में कला का अपना और बहुत महत्त्व दिया जाता था। शानदार स्थापत्य कार्य उत्कृष्ट मूर्तियाँ और मंचित्र है। भारतीय सम्राटों ने इतिहास को प्राचीन मधयकालीन और आधुनिक में वर्गीकृत किया जा सकता हैं। प्राचीन भारत में कला सिंधु घाटी सम्यता से लेकर प्राचीन दक्षिण भारतीय राज्यों की विशाल ओर भव्य मंदिर वास्तुकला से लेकर तांबे और टेराकोटा की मूर्तियाँ शामिल हैं। भारत में कला की विरासत का प्रागैतिहासिक शैल चित्रों से लगाया जा सकता हैं। गुप्त काल में बौ) गुफाओं जो कला दिखाएँ गई है जो गुफाओं का निर्माण में जो दिखाया गया हैं वे अजंता एलोरा और एजींटा जैसा कला हैं। इसे युग को स्वर्ण युग के रूप में जाना जाता है। कुशाण साम्राज्य ने कला और वास्तुकला के मधुरा और गांधार स्कूलों पर अपने संरक्षण को दिखाया गया हैं। भारतीय चित्रकारी के प्रारंभिक उदाहरण अनेक प्रकार से कला युग तक चलता आ रहा हैं। प्राचीन साम्राज्यों ने मंदिर वास्तुकला और मुर्तिकला के विकास में योगदान दिया। समाज और तत्कालीन समकालीन शिल्प कौशल की कहानियाँ को बयां करते है। भिति चित्र चोल काल की पहचान है।

वास्तुकला भिति मूर्तिकला औपचारिक छवि-निर्माण शाहजहाँ के शासन काल के दौरान मुगल पेंटिग अपना गौरव की .चाई पर पहुंच गई है। राष्ट्रवाद के आलोक में भारतीय कला ने अपनी जड़ों की ओर लौटने का प्रयास किया। इस प्रकार कला के क्षेत्र में परिदृश्य एक बार फिर कायापलट हो गया। रवींद्रनाथ टैगोर गगनेद्रनाथ टैगोर और जैमिनी राय जैसे कालाकारो ने आधुनिक भारत में कला को पुनर्जीवित किया था। समकालीन भारत में एक ऐसी कला शामिल है जो अनिवार्य रूपा से वैश्वीकरण प्रभावों से विकसित हुई हैं। भारतीय कला आज विभिन्न शैलियों और विशयों का समामेलन हैं सामाजिक परिवर्तनों के प्रभाव ने भारत में कला को आकार देने में समान रूप से योगदान किया है।

कला शब्द अपने आप में एक व्यापक अर्थ लिये हैं। भारतीय कलाकारों ने कहा की उत्पति संस्कृत की 'कलू' धातु से मानी हैं जिसका अर्थ निम्ननानुसार हैं। कम् + आनन्द लाती/इति/कला अर्थात् आनन्द लाने का नाम कला है। आचार्य भरत ने पहली शदी के लगभग कला शब्द का प्रयोग शिल्प, कौशल एवं हुनर से किया गया।

भारतीय कला की विशेशता:-

भारतीय कला में अभिव्यक्ति की प्रधानता दिखाई देती है। कलाकारों ने अपनी कुशल का प्रदर्शन शरीर का यथार्थ चित्रण करने अथवा सौन्दर्य को उभारने में नही किया हैं। इसके स्थान पर आन्तरिक भावों को उभारने का प्रयास की अधिक हुआ हैं। सबसे सुन्दर उदाहरण हैं भारतीय शैली में बनी बुद्ध मूर्तियों में देखने को मिलता हैं।

कला की खोज

होमो निएंडरथलिस द्वारा बनाई गई पहली पेंटिग आदिम पुरुषों द्वारा बनाई गई थी। इस प्रकार से पहले चित्रकार और मूर्तिकार थे।

कला का इतिहास

कला का इतिहास लगभग 15वीं से 20वीं शताबदी के मधय के दौरान विकसित हुआ। प्रारंभिक कला का इतिहासकारों ने यूरोपीय परंपरा पर जोर दिया इसके ग्रीक और रोमन मूल और अकादमिक कला के आदर्शो का पालन करते हुए शुरू किया गया था।

पेंटिग का इतिहास प्रागैतिहास में चित्र कला का उदय से हुआ और जब खाना बदोश इंसान चट्टानों की दिवारों पर चित्रों का उपयोग करते थे। हाल में खोज में पाया गया कि अब तक की खोजी गई सबसे पुरानी पेंटिग इंसानों द्वारा बनाई गई 42000 साल पहले बनाई गई थी। सुन्दर समय में मनुष्य के जीवन की शुरूआत और विलुप्त संस्कृतियों के सच्चे प्रमाण हैं। स्पेन के मलागा में नेरजा की गुफा में हाल में 42000 साल से अधिक पुरने चित्रों की खोज की गई हैं।

कला और शिल्प कला सहयोगी ललित कला शिल्पकारी कला, कला आज कल लोगों का शौक और हौबी का सरल उपाय है। तरह-तरह के चित्रकारी को उभारने के लिए कला को लोगों ने वेहतर कुछ भी नहीं हो सकता है। अपने कला को उभारने के लिए कला से बेहतर कुछ भी नहीं हैं। इसके तहत हमलोगों ने किसी भी चीज को बेहतर कलाकारी का नमूना पेश कर सकते हैं। कला का हुनर कला कौशल, शिल्प कारीगरी, कला कृतियाँ चित्र, मूर्ति का आदि देखने को मिलता हैं। अभी के दौरे में बच्चों को कला के प्रति कुछ रुचि होने लगी हैं जिसमें वाटर कलर, चौक से ड्राइंग, क्ले से चित्रकारी हैंडीक्राफ्त, पेपर वर्क, सेरामिक पेंटिग इत्यादि कला में आने से बच्चों में पेंटिन में रुचि जागरूक होता नजर आ रहा हैं। जिसे 'कला' के रूपमें जाना जाता है। उसे मानव समाज और दुनिया का अध्ययन करने के लिए एक प्रकार की कला का महत्त्वपूर्ण अंग हैं भारतीय कला के अनुसार भारतीय परम्परा को कला उन सारी क्रियाओं को कहते हैं जिसमें कौशल अप्रेक्षित होता हैं। सामान्य तौर पर विशय को कला के टुकड़े में क्या माना जात हैं विशय कला के सबसे आम विशयों मे लोग उसे चित्रण, वस्तुओं की व्यवस्था प्राकृतिक दुनिया परिदृश्य और अमूर्त गैर-उद्देश्य शामिल होता है कला में सामाजिक वृद्वि करती हैं। कला अधिक मूर्त रूप प्राप्त है।

कला के माध्यम से अनेक कलाकार का आत्मिक विकास होता है। जैसे: नृत्य कला, काव्य कला, मूर्ति कला, संगीत कला आदि के माध्यम से कलाकार को अपने ह्रदय और प्रकृति को देखकर अनेक प्रकार से झोकने का अवसर मिलता है। ऐसे में कलाकार का दायित्व हो जाता है कि वह अपनी आत्मा का विकास समुचित रूप से करें। यहि कला का उद्देश्य होता हैं। कला शब्द की उत्पति संस्कृत भाषा से सुख देने वाले मनुष्य के मन में उत्पन्न भावनाओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम हैं। भारतीय कक्षा का इतिहास में शानदार स्थापत्य कार्य उत्कृष्ट मूर्तियाँ और चलचित्र हैं। कला मानव जीवन की एक सहज प्रवृति व अभिव्यक्ति हैं। मानव अपनी अन्य सहज प्रवृतियों के साथ-साथ पत्थर, कोयला एवं पेंन्सिल आदि जो हाथ लगे उसी से दीवारों, मिट्टी एवं कागज आदि पर रेखाओं द्वारा अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति अंकित करने लगा हैं। कला एवं मानव का संबंध आदिम काल से हि बहुत सहजता से बना हुआ है। मानव अपनी प्रारंभिक काल में अपने आस-पास के वातावरण से प्रभावित होकर की गई दृश्य अभिव्यक्तियों के रूप में कला मानक के साथ निरंतर रूप से जुड़ी रहीं हैं। जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास होता गया वैसे-वै ूला के माध्यम, स्वरूप एवं तकतीक भी बदलती रही और कला के नये-नये स्वरूप एवं माध्यम विकसित होते रहें।

आदिम कला जो पत्थरों से प्रारंभ हुई थी उसने विभिन्न चरणों में गुफा चित्रों, कागज, लकड़ी एवं मिट्टी, छापा कला, तैलरंग चित्र, छायांकन आदि विभिन्न माधयमों से होते वर्तमान कम्प्यूटर युग तक का सफर तय किया हैं। सामान्यत: जब भी कला की बात की जानी है तो मन मे किसी संग्रहालय या कला दीर्धाओं में प्रदर्शित किये गये चित्रों या मूर्तियों का विचार आता है लेकिन कलों के विविध कार्यो को सम्मिलित करती हैं जैसे- रेखांकन, चित्र मूर्ति, दस्तकारी, वास्तु कला, छापा कला, ग्राफिक डिजाइन, फोटोग्राफी, नृत्य, नाटक एव संगीत के साथ- साथ उसके अनुसार उस काल में कुशलतापूवर्क किये जाने वाले प्रत्येक कार्य को कला माना जाता हैं।

शुक्राचार्य के अनुसार किसी भी कलाकार के सृजन की मुख्य विशेशता उस शक्ति में हैं जो मन को भीतर की तरु एव ध्यान की ओर जाती हैं। भारतीय कला को दर्शन माना गया हैं। यूरोप में भी कलाओं के लिए 'शिल्प' के समानार्थी शब्द का प्रयोग होता हैं। 4 वीं से 16 वीं शताब्दी में शब्द का प्रयोग दस्तकारी के लिए किया जाता था। यह सर्वमान्य है कि कला के अनेक रूपाकार दृश्य-इन्द्रियों से उत्पन्न हुए हैं। प्राचीन गंन्थों में कल को हस्त कौशल चमत्कार प्रदर्शन या वैचित्र्य से बढ़कर ऊँचा दर्जा नहीं प्राप्त था परन्तु वर्तमान में कला की जो परिभाषाएँ की जा रही हैं वे पूर्व की अपेक्षा भिन्न हैं।

भारतीय कला के दर्शन के अनुसार कला सत्यम् शिवम्-सुन्दरम् है जिसे रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने शब्दों में कहा हैं। कि "जो सत्य है, जो सुन्दर हैं, वही कला हैं।" इनके अनुसार कला का कार्य मानव के लिये सत्य और सौंदर्य की एक सजीव सृष्टि करना हैं।

"कला शिल्प कौशल की प्रक्रिया द्वारा सुखद एवं सुन्दर सृजन हैं।"

प्रियंका शर्मा
सहायक प्राध्यापिका

लिबरल आर्ट्स:- नयी शिक्षा नीति का नया आयाम

भूमिका

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्पराए इस बात का अभिज्ञान देती है कि एक व्यापक और एकीकृत शिक्षा प्रणाली जीवन व्यवसाय और समाज में प्रभावी एवं नागरिक दायित्व बोध का विकास करती है। जिसके लिए लिबरल आर्टस नये जमाने की नयी विद्या के तौर पर उभरा है। जो विज्ञान, तकनीक, इंजिनियरिंग और गणित के साथ-मानविकी तथा कला को एकीकृत करनेवाला दृष्टिकोण है।

इस व्यापक सभन्वित लिबरल दृष्टिकोण में सीखने की आनंददायी प्रक्रिया के साथ आलोचनात्मक उच्च स्तरीय चिंतन, ग्रहन शिक्षण, विशय-वस्तु की संचार कौशल सब एक साथ शामिल रहते हैं। यह भविष्योन्मुखी रोजगार के परिदृश्य को समझने में विशेश सहायक है और युवाओं को मेशेवर ढ़ग से तैयार करता है। उन्हे पेशेवर भूमिकाओं के साथ पेशे के अन्दर-बाहर अन्य सामाजिक राजनैतिक भुमिकाओं के निर्वहन हेतु सक्षम बनाता है। यह समसामायिक समस्याओं के समाधान में तो सहायक है ही, भविष्य के दिशा-निर्धारण में भी मार्गदर्शक बनता है।

लिबरल आर्ट्स में मुख्यधारा के साथ-साथ पत्रकारिता, एक्सटेंशन, जनसंपर्क लेखन, विधि, राजनीति, सामाजिक कार्य, प्रबंधन और मार्केटिंग जैसे कैरियर साथ-साथ लेकर चला जा सकता है। शोध, विश्लेशण, सलाह, सोशल मीडिया, विज्ञापन, जनसंपर्क, शिक्षण और सामाजिक दायित्व के क्षेत्र लिबरल आट्र्स के दक्ष स्नातकों को अनेकानेक संभावनाएं प्रदान करती हैं।

नई शिक्षा नीति का यह नया आयाम शिक्षा को सत्त विकास और एक ज्ञानवान समाज के निर्माण की ओर उन्मुख करने में मद्द करेगा विज्ञान, भाषा और गणित पर विशेश जोर देने वाली यह नीति बच्चों में लेखन कोशल बढ़ाने वाले नवाचार पर विशेश जोर देती है। कहानी सुनाना, नाटक खेलना, समूह चर्चाए करना, लेखन और चित्रों के जरिए अध्ययन और संवाद की नई शिक्षण संस्कृति विकसित करना नई शिक्षा नीति का लक्ष्य है। बहुभाशिक और बहुविशयकता को अध्ययन का आधार बनाने से लिबरल आर्टस का परिप्रक्ष्य मजबूत बनेगा।

जैसे-जैसे टैक्नोलॉजी में अर्टिफिशियल इंटेलिजेंस समाज को संचालित करने की तरु बढ़ रही है। वैसे-वैसे इमोशनल इंटेलिजेशिया भविष्य के समाज की महती जरूरत बनेगा जिसके लिए लिबरल आर्टस जैसे शिक्षा के नए क्षेत्र महत्त्वपूण र्ा बनेंगें। लिबरल आर्ट्स सोचने, आलोचना करने और दूसरों को अपने पक्ष में राजी करने की क्षमता बढ़ाने की कला है। लिबरल आर्ट्स हमारे लिखने पढ़ने, बोलने और तार्किक ढ़ंग से सोचने के कौशल को बढ़ा देते हैं। लिबरल आर्ट्स का लाभ लेकर भारत अपनी युवा शक्ति को सृजनात्मक जनशक्ति के रूपा में बदलकर ज्ञानभय समाज की दिशा में बढकर नयी शिक्षा नीति के सहारे नयी संदी को भारत की सदी बना सकता हैं लिबरल आर्ट्स कल्पनाओं को विचार में विस्तृत ही विवेक का विकास करते है। तथा विवेक विज्ञान की दिशा में बढ़ाता है। अंतत: विज्ञान ही प्रोद्यौगिकी और प्रयोगों के सहारे सभ्यता का विकास सुख-सुविधाओं और एक सुन्दर संमरस संसार बनाने का रास्ता खोजता है। यही मानव कल्याण की समुचित दिशा भी है। जिसमें उदार विद्याए बहुत काम आयेंगी।

शिक्षा के अधिकार कानून के परिप्रेक्ष्य में अनुसूचित जाति के लड़कियों में साक्षरता वृद्धि का अध्ययन

शालिनी सौरभ
सहायक प्राध्यापिका

भूमिका

शिक्षा के क्षेत्र में नारी शिक्षा खासकर अनुसूचित जाति के लड़कियां में साक्षरता की स्थिति बहुत ही दयनीय है। भारत एक लोकतांत्रिक देश है इसके लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को बनाए रखने के लिए हम सभी को एक जुट होकर कार्य करना होगा। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 46 में अनुसूचित जाति के लोगों के लिए शिक्षा का विकास सम्मिलत है।

प्रस्तावना

एक संसाधन अवसर तथा मूल्य के रूप में शिक्षा अपरिहार्य है। भारतीय संविधान के प्रावधानों के अनुरूप सभी जाति के लोगों के लिए शिक्षा उपलब्ध हो, इसके लिए भारत सरकार संकल्पित है। 46 वें संविधान संशोधन के द्वारा 2002 में दो समिति बनाग्र गग्र (1) शिक्षा आयोग (2) से किया समीति। पुन: इस संशोधन को संशोधित कर अनुच्छेद-45 में शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 बना। यह बच्चों के नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का नियम कहा गया। इस युगांतकारी घटना को भारतीय इतिहास में प्रथम बार राज्य द्वारा शिक्षा के अधिकार को अपनाया गया।

उद्देश्य

- इस शोध का मुख्य उदेश्य है अनुसूचित जाति के लड़की की साक्षरता दर बढ़ाना।
- कहाँ तक और किन-किन कारणों से साक्षरता दर नही बढ़ती है इसकी कारणों का पता लगाना।
- कैसे साक्षरता दर बढ़े इसके उपाय खोजना।
- कितने प्रतिशत इस जाति के बच्चे शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू होने से पढ़ना शुरू किया है इसका पता लगाना।
- वर्तमान एवं पूर्ण के जनगणना के आधार पर साक्षरता दर का आकलन करना।

निष्कर्ष

शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू होने से लड़कियों की शिक्षा का स्तर आगे बढ़ा है। खासकर उन वर्गों में जो पिछड़े हुए है। अनुसूचित जाति की लड़कियाँ विद्यालय बहुत ही जागरूक होकर जा रही है। वह अपने आस-पड़ोस के विद्यालय में जाकर शिक्षा प्राप्त करने की भरसक कोशिश कर रही है। भले ही शैक्षिणिक लबदु के उस स्तर को नहीं प्राप्त कर सका जहाँ उसे प्राप्त करना चाहिए लेकिन फिर भी यह साक्षरता का स्तर बहुत ही संतोषजनक है।

संदर्भ ग्रंथ

1. मंगल एस. के शिक्षा मनोविज्ञान
2. लसह, अरूण कुमार-आधुनिक असमान्य मनोविज्ञान
3. सुखियाख एस . वी.- विद्यालय प्रशासन, संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा।

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना का वंचित वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

आरती कुमारी
सहायक प्राध्यापिका

भूमिका

शिक्षा समाज रूपी व्यवस्था का अभिन्न अंग है। जीवन की सफलता का आधार वास्तव में शिक्षा में निहित है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का अधिकतम विकास करके उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि की जाती है। शिक्षा ही व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक व संवेगात्मक शक्तियों का विकास करती है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का पुष्प खिल उठता है उसी प्रकार शिक्षा रूपी प्रकाश को पाकर मानव जीवन भी खिल उठता है। प्राचीन काल से आज तक सदैव शिक्षा को सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास की दृष्टि से एक सम्मानजनक स्थान दिया जाता है। वंचित वर्ग से तात्पर्य समाज के उन धार्मिक परिस्थिति के कारण उन्नति नहीं कर सके। हमारे देश का सामाजिक ढाँचा जन्मजात जातियों पर आधारित है। अनुसूचित जातियों व पिछड़ी जातियों के शैक्षिक पिछड़ेपन के कुछ

कारण निम्नवत है : –

1. समाजिक रूढ़िवादिता कुरीतियाँ तथा निर्धनता।
2. माता–पिता की निर्धनता।
3. शिक्षा के महत्त्व को न समझना।
4. अध्यापकों का नकारात्मक दृष्टिकोण
5. घर के पास स्कूलों का न होना।
6. स्कूलों का अरुचिकर होना।

इन कारणों से अनुसूचित जाति के अनेक बालक या बालिकाएँ या तो स्कूल ही नही जाते अथवा कुछ दिनों के पश्चात स्कूल जाना बंद कर देते है।

अध्ययन की आवश्यकता: –

जेण्डर भेद को खत्म करने के लिए शिक्षा एक सशक्त माध्यम है। अत: बालिकाओं के जीवन को उन्नत बनाने के लिए तथा उनकी क्षमताओं के उचित

विकास के लिए सरकार ने अनेक योजनाएँ चला रही हैं जिनसे उनके शैक्षिक स्तर पर काफी प्रभाव पड़ता है।

इन्ही प्रभावों का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता को अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस हुयी।

1. जिले में संचालित कस्तूरबा गाँधी की वास्तविक स्थिती जानने के लिए।
2. राज्य सरकार व केन्द्र सरकार द्वारा इन विद्यालय में दी जा रही सुविधाओं को बारे में जानना।
3. अध्ययनरत बालिकाओं की शौक्षिक स्थिती जानने के लिए।

समस्या का चयन :

वर्तमान समय में शिक्षा के स्तर में गिरावत दिखाई दे रही हैं। खासकर यह स्थिति समाज के वंचित वर्ग में शोचनीय है और वंचित वर्ग में भी बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। साधनों के अभाव मे वंचित वर्ग के लोग अपने बच्चों को शिक्षा ग्रहण कराने में अपने आप को असमर्थ पातें है। इस समस्या का अंत करने के लिए सरकार ने के. जी. बी. वी. योजना को आरम्भ किया, जिसमें वंचित वर्ग की बालिकाओं को आवासीय सुविधाओं के साथ शिक्षा प्रदान की जाती है। के. जी. बी. वी. योजना का बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति पर कितना व क्या प्रभाव पड़ रहा है इसी प्रभाव का अध्ययन करने के लिये प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया है।

समस्या का परिभाषा-

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय वह योजना है जिसे भारत सरकार ने अगस्त 2004 मे शरू किया। इस योजना के अंतर्गत कठिन क्षेत्रों में रहने वाली बालिकाओं के लिए उच्च प्राथमिक स्तर पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यक समुदाय की बालिकाओं के लिए आवासीय विद्यालय खोले गये। 1 अप्रैल 2007 से इस योजना को सर्व शिक्षा अभियान में एक पृथक घटक के रूप में सम्मिलित किया गया है। कस्तूरबा गाँधी जी महात्मा गाँधी जी की पत्नी थी, जो भारत में 'ब' के ही शहर काठियावाड़ के पोरबन्दर नगर में हुआ था कस्तूरबा गाँधी ने पाँचवी तक शिक्षा ग्रहण की थी। ग्रामीण क्षेत्रों में तथा समाज के अपेक्षित समुदायों में आज भी जेण्डर भेद तथा असमानता बनी हुयी है यदि हम विद्यालयों में नामांकन पर एक दृष्टि डाले तो शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर पर बालिकाओं का नामांकन बालकों की तुलना मे कम है।

परिकल्पना- परिकल्पना का अर्थ :

परिकल्पना शब्द का अर्थ एक अपकथन से होता है जो समस्या के समाधान की अवधारणा होती है व शोधकर्ता उसकी पुष्टि करने का प्रयास करता है। जब किसी सम्भावित सिद्धांत की प्रदत तथा प्रमाणों के आधार पर पुष्टि की जाती है तब उसे परिक्लपना की संज्ञा दी जाती है। शोध की समस्त क्रियाएँ परिकल्पना पर केंद्रित होती है।

निष्कर्ष

उपयुक्त अध्ययन से यह कहाँ जा सकता है कि कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना से वंचित वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति ही नही बालक हर वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति ऑकड़ों से बहुत ही पिछे है लेकिन सरकार ने समय-समय पर बालिकाओं की शिक्षा के लिए बहुत ही योजनाओं का कार्य किया जिसके कारण पहले की अपेक्षा बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में अपेक्षाकृत सुधार हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. डा. आर. ए. शर्मा शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोधप्रक्रिया
2. पारसनाथ राय-अनुसंधान परिचय

QUALITY EDUCATION

Shipra Kumari
Asst. Prof.

What ever progress our society has made over the centuries is because of education. Being the foundation stone of society, Education brings reform,helps in progress and paves way for innovation.

Quality education specifically entails issues such as appropriate skills development, gender parity, provision of relevant school infrastructure, equipment, educational materials and resources,scholarships or teaching force.

CURRENT SCENARIO OF QUALITY EDUCATION IN INDIA

The educational system in India is transforming itself from focusing on universalisation of access to education to access to quality education in line with the Sustainable Development Goals (SDG4 in particular).As per the national sample survey,the literacy rate of persons of age 7years and above at the All indi level stood at 77.7 percent.

The 2030 Agenda for Sustainable Development adopted by India in 2015 aims to "ensure Sinclusive and equitable quality education and promote lifelong learning opportunities for all" by 2030.

India has made remarkable strides in recent years in attaining near universal enrollment in elementary education through initiatives such as the Sarva Shiksha Abhiyan (now the samagra shiksha) and the Right to Education Act.However,the data for higher grades indicate some serious issues in retaining children in the schooling system.The GERfor grades 6-8 was 90.9%,While for grades 11-12 it was only 56.5%,which indicates that a significant proportion of enrolled student drop out after Grade 8.As per the 75th round household survey by National sample survey office (NSSO) in 2017-18,the number of out of school children (OOSC) in the age group of 6 to 17 years is 3.22 crore.In this context,the education policy is attempting to reduce the dropout rate and achieve a 100% GER from preschool to secondary levels by 2030.

NEP focuses on reforming and revamping all aspects of the education structure, including its regulation and governance to create a new system that is aligned with the aspirational goals of 21st century education.

The education system,however has always been constrained by infrastructure,teachers, technology,policy,budget etc. The policy also aims to provide quality textbooks at the lowest possible cost namely, at the cost of production/printing in order to mitigate the burden of textbook prices on the student and on the educational system.

Similarly,to maintain the high quality of education a National Assessment centre PARAKH (Performance Assessment Review and Analysis of knowledge for Holistic Development) as a standard setting body under **MHRD** that fulfills the basic objectives

of setting norms,standards, and guide lines for student assessment and evaluation for all recognised school boards of India, guiding the state Achievement survey (SAS) has also been proposed in NEP.

In the coming years,there is a pressing need to focus on the digital delivery of education.It is proposed to develop a National Digital Education Architecture (NDEAR) to support teaching and learning activities including educational planning,governance, and administrative activities of the centre and the states/Union Territories.Considering this new paradigm ,the actual budget of Rs279 crores for digital India e-learning in the year 2020-21 has been increased to Rs421 crores in the present budget.

SCHOOL EDUCATION AND LITERACY

In financial year 2022-23 the corpus of Prarambhik Shiksha Kosh(PSK) is kept at 10000 crore in the scheme of PM-POSHAN.Under Samagra Shiksha Abhiyan Scheme,the corpus of PSK and Madhyamik and Uchchtar Shiksha Kosh(MUSK),is 28000 crore and 5000 crore respectively.

The central Budget may examine the state Governments' budget provisions on education before making budget allocations for the education sector.

CONCLUSION

Quality improvement in education is strongly emphasised in the New Education Policy as an essential requirement for building a competitive work force that is at par with global standards. Accordingly, the flagship policy has induded several reforms aligned to this thinking.

However, the ultimate implementation aspects of such initiatives will depend on the efforts of the state Governments.

In this context, a conditional financing model may be useful to meaningfully incentivise fund utilisation and implementation.

विभिन्न अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में कार्य संबंधी प्रतिबल

मुकेश कुमार
सहायक प्राध्यापक

प्रस्तावना

मानव को सुखद एवं सम्पन्न जीवन व्यतीत करने हेतु शारीरिक व मानसिक दोनों ही दृष्टि से स्वस्थ्य होना आवश्यक है। इसलिए कहा गया है- 'तंदुरूस्ती हजार नियामत है।'

हमारे जीवन शैली में जटिलताओं के बढ़ने के साथ-साथ प्रतिबल का स्तर भी असमान्य रूप से बढ़ता जाता है। कभी-कभी शारीरिक स्वास्थ्य पूर्णत: ठीक होने के बावजूद मनुष्य अस्वस्थ दिखाई देता है। इसका कारण उसका स्वंय का मानसिक जगत होता है। हमारा मानसिक जगत परस्पर विरोधी भावनाओं, इच्छाओं तथा कामनाओं का एक वृहद संग्रहालय है। जब चिंताग्रस्त, निराशावादी व हीन भावना से परिपूर्ण आवश्यक भयों से युक्त तथा मानसिक संधर्शो से ग्रसित व्यक्ति वाह्य वातावरण के साथ सामंजस्य नहीं कर पाता है। ऐसी परिस्थिति में व्यथ्ति के सम्मुख अनेक प्रकार की बाधायें उपस्थित हो जाती है। परन्तु अनेक बाधाओं के रहते हुए भी व्यक्ति का अपनी आवश्यकाताओं की प्रति तो करनी ही पड़ती है। ऐसी स्थिति में ही समायोजन की मांग या 'प्रतिबल' उन्पन्न होते है।

'प्रतिबल' शब्द का प्रयोग कठिनाई, मुश्किल, प्रतिकूल परिस्थिति, कष्ट, तकलीफ आदि कोदर्शाने के लिए किया जाता था। सत्रहवीं शताबदी में 'प्रतिबल' शब्द का प्रयोग 'हुक' महोदय ने शरीर विज्ञान के संदर्भ में किया, लेकिन इसकी वैज्ञानिक व्याख्या बीसवीं शताबदी के प्रारम्भ में की गई।

वह घटना या स्थिति जो हमारे शरीर अथवा मन की संरचना में किसी प्रकार की बाधा या डर उत्पन्न करती है, प्रतिबल कहलाती है। वास्तव में प्रतिबल एक विशेश तरह की प्रक्रिया है जो कि हमारे प्रतिबल देने वाले वातावरण के प्रतिक्रिया स्वरूप घटित होती है। प्रतिबल हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। छात्रा की भविष्य की सभी सम्भावनायें चाहे वे शैक्षिक उपलब्धि हो या भविष्य में व्यवसाय चयन की, सभी जिम्मेदारियों शिक्षक का ही होता है। शिक्षक के सही मार्गदर्शन व दिशा-निर्देशन में छात्र सही दिशा-निर्देश पाकर अपना भविष्य उज्जवल बना सकता है। इसलिए एक शिक्षक को छात्र का भविष्य निर्माता कहा जाता है।

किन्तु अनेक ऐसे कारण है जिनके कारण शिक्षकों में कार्य संबंधी प्रतिबल उत्पन्न करते है जिनका विपरीत असर शिक्षण कार्य पर पड़ता है। फलस्वरूपा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर दिनो-दिन गिरता जाता है।

हाल ही में एक शोध में देखा गया है। कि सामान्य दिशाओं (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण) की तरह प्रतिबल की भी चार दिशाएँ Eustress, Distress, Hypostress vkSj Hyperstress gSA

प्रतिबल का अर्थ स्पष्ट करने के लिए अनेक विद्वानों ने इसकी परिभाषायें प्रतिपादित की है, जिनमें कुछ प्रमुख परिभाषाये निम्नांकित है:- 'कोलमेन' के अनुसार- '' कोई भी परिस्थिति जो व्यक्ति पर दबाव डालजी है तथा जिसके कारण व्यक्ति के समायोजन करना पड़ता है, यही प्रतिबल है।''

'नार्मन टेलैण्ट' के शब्दों में-

'' प्रतिबलसे ऐसे दबाव का बोध होता है, जिससे व्यक्तित्व के पर्याप्त रूप से कार्य करते रहने की योग्यता एक प्रकार से संकट ग्रस्त हो जाती है।''

समस्या की उत्पत्ति

शिक्षक अध्ययन-अधयापन का प्रमुख अभिकरण है, शिक्षक ही विद्यार्थियों का भविष्य व चरित्र निर्माण करता है। किन्तु वर्तमान समय प्रतिर्स्पधा का युग है। इस होड़ में शिक्षक निराशा, भय, चिन्ता, हीन भावना व मानसिक संधर्ष से ग्रस्त हो रहे है। जिससे उनके मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। फलस्वरूप शिक्षकों की कार्य क्षमता भी प्रभावित होती है। अत:

हमारे मनमें यह विशय समस्या के रूप में उभरा जिसका समाधान इस शोध प्रबंध में प्रस्तुत करने का हम प्रयास करेगं।

अध्ययन की आवश्यकता एवंमहत्त्व

वर्तमान समय में भारत में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी मानसिक रोग से ग्रसितहैं। ये रोग अनेक कारणों से होते है और प्रतिबल उनमें से एक प्रमुख कारण है। जिसका सम्पूर्ण विश्व के लोगों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इस से अवगत कराने हेतु हमने शोध में कार्य संबंधी प्रतिबल को समस्या के रूपा में लिया है।

अध्ययन का उद्देश्य

शोध का मुख्य उद्देश्य इस प्रकार निम्नांकित है-

1. विभिन्न विद्यार्थियों के शिक्षकों में कार्य संबंधी प्रतिबल का अध्ययन करना।
2. विभिन्न विद्यालय के महिला शिक्षकों के कार्य संबंधी प्रतिबल का अध्ययन करना।
3. विभिन्न विद्यालय के पुरुष शिक्षकों में कार्य संबंधी प्रतिबल का अध्ययन
4. विभिन्न विद्यालयों में पुरुष व महिला शिक्षकों में कार्य संबंधी प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध विधि-

किसी भी क्षेत्र में सुधार लाने व जानकारी प्राप्त करने के लिए उस क्षेत्र की तात्कालिक परिस्थिति की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। शोध में वस्तुनिष्ठता, वैधता और विश्वसनीयता लाने के लिए वैधानिक विधियों में हमने प्रतिदर्श सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।

शोध उपकरण-

अनुसंधान कार्य की सफलता उपयुक्त उपकरण के चयन पर निर्भरक रती है।

हमने प्रस्तुत शोध में मनोवैज्ञानिक परीक्षण को दत्तसंकलन कर चुना जायेगा।मनोवैज्ञानिक परीक्षण स्वंय होते है। इनसे प्राप्त फलांक कफी स्थिर होते है, उनमें विश्वसनीयता एवं वैधता निहित होती है।

शोध निश्कर्श-

- जीवन में घटने वाली बड़ी घटनाओं की अपेक्षा दैनिक जीवन में आनेवाली समस्यायें अधिक रोगकारी प्रभावित होती है।
- पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षकों में प्रतिबल अधिक पाया गया, मुस्लिमों में हिन्दुओं की अपेक्षा, ग्रामीण छात्रों में शहरी छात्रों की अपेक्षा, हॉस्टल व लॉज में रहने वाले छात्रों में, स्वंय के घरों में रहने वाले छात्रों की अपेक्षा अधिक प्रतिबल पाया गया।
- प्रधानाध्यापकों का शिक्षकों के साथ समायोजन उनकी प्रशासकीय प्रभावकारिता के संबंध में सार्थक नहीं पाया गया।
- सी. बी. एस. ई. एवं शासकीय विद्यालयों तथा धार्मिक विद्यालयों के समस्त शिक्षकों में कार्य संबंधी प्रतिबल क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं देखा गया।

भावी शोध हेतु सुझाव-

आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है, समय परिवर्तन शील है, मनुष्य के सामने जैसे-जैसे समस्या आती-जाती है, वैसे-वैसे उनके समाधान के लिए शोध होते रहते है। प्रतिबल के क्षेत्र में अनेकों शोध देश -विदेश में हो रहे है। प्रस्तुत समस्याओं का अध्ययन आगे-आने वाले छात्रो द्वारा आगे बढ़ाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. आस्थाना विपिन, मनोविज्ञान तथा शिक्षा में मापन तथा मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
2. भटनागर सुरेश, शिक्षा अनुसंधान, विनोद पुस्तक मंदिर, आभरा
3. राय पारसनाथ, अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
4. माथुर डॉ. एस. एस.,स्वास्थ्य मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
5. भटनागर, डॉ. मिनाक्षी, शैक्षिक व मानसिक मापन, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ

THE EFFECT OF SELECTED YOGIC EXERCISE OF COLLEGE LEVEL RICKET PLAYERS

Partha Ghosh
Asst. Prof.

Introduction

yoga practice has been documented for over 2000 years(NCCAM, 2009) and was originally a branch of Indian philosophy . Indian philosophy remains thecornerstone of the modern yoga for known as a Ashtanga Yoga. The Holistic practice of yoga includes ethical, physical, emotional and mental disciplines as well as the attainment of enlightenment (Burkett, 2006).

Yoga hasmany psychological and philosophical benefit. Numerous studies have asserted that yoga practice improves flexibility and strength.

The psychological benefits of yoga may, in part, result from yoga's meditative components. Based on discussions and the descriptions of meditation in Yoga literature meditation is a self- regulating practice that focus on training attention and awareness over a period of time.

Benefits of physical activity :-

Yoga also includes a physical component that, according to research, has many positive effects. Physical activity has been defined as any bodily movement produced by skeletal muscles that result in energy expenditure. Numerous studies have found a link between physical activity and improvements in physical and psychological health.

In addition to the many physiological benefits, several studies havevarious cognitive function. Therefore although physical activity has been demonstrated to have a positive effects on various cognitive function, activity requiring coordinated movement may have an even greater effect.

Objective of the study :-

The present study was navigated through following objective;

1. To determine weather participations in Yogi exercise helps to improve cricket players.
2. To determine whether to include yogik exercise in the training program for cricket player

Significations of the study :-

The present study will be of a great significance in the following ways :

The result of the study will help formulating the basic form playing the yoga program towards development physical fitness of young cricket player.

The result of the study will help to include the yoga programmes in the coaching schedule for cricket player.

Benefitions of yoga :- the physical activities and meditation have been shown to positively affectattention, it is possible that yoga, which combines both coordinated physical activity and meditative components, will also likely influence attention. As an increasing number of Americans practice yoga , the potential relationship with attention could have far-reachingimplications. According to the National Health statistics Reports, there was a staticallysignificant increase in the number of adults practicing Yoga in a United State between 2002 and 2007.In addition, 75% of all health clubs offered yoga classes in 2001. Even popular American magazines, from Time to Glamour, have incorporated articles detailing yoga practice and their purported benefit.

Asana Following asana or schedule for the present study. Prone and supinepositionswere practiced in Yoga 1 group and long sitting and standing position were practice the yoga 2 group. Students were instructed to maintain each yogasana at last for a period of 30 second.

Prone

1. Shavasana
2. Dhanurasana
3. Bhujangasana

Supine

1. Ardha-halasana
2. Halasana
3. Sarvangasana

Technique queen of performing yogasanas

1. Shavasana

Shavasana means the posture of a dead body. also called Yoga Nidra or yogic method of sleep. It is one of the most valued and highly desired asana of the yoga system. This asana necessary the relaxed condition of both the body and the mind.

Technique

- Lie flat on the back with the arms deside the body, at a distance of 6 inches form the body, plams facing upwards fingers in natural curling position.
- The head and spine should be in a straight line.
- Eyes should be closed and the entire body should be kept relaxed.
- A personal mantra maybe repeated with every in inhalation and exhalation.

Remember

- There must not be tension in any part of the body . Release the tension by shaking the part whereonefeels tension .
- Loosenthe legs,hands, plams, and fingers completely.
- Concentrate on the breathing pattern. Try to feel warm whileexhaling and cool while inhaling in this nostrils.

Cautious

- If one has back injure or discomfort he should do this pose with the knee bent and feet on the floor or support the bent knees on a bolster.
- Those who have been forbiddenfor supine position by Doctors due to some reasons should not practice it.

Dhanurasana

Holding the toes with the hands, stretching them up to the ears, assuming the shape of a bow is called Dhanurasan. The word “dhanu”is Sanskrit means a bow .In this asana the body takes the shape of a bow.

Technique

- Lie flat on the stomach and inhalecompletely, keep hands close to the sides of the body.
- Bend the knees and hold the ankles with the hands, people having abdominal disorders, may hold the toes instead of the ankles so that only the upper part of the body beyond naval area is more stretched for better benefits.
- Keep the arms straight
- Try to maintain the weight of the body on lower abdomen , the shape of the body will be like sa stretched bow.
- Rest in makrasan for little breathing and then repeat the pose for 3-4 Times.
- Hold the position for a long as one feels comfortable practice up to 5 times.

Remember

- One should not try to bring the toes near the ears forcefully if it is difficult.
- Gradually increase the practice .
- It is desirable to practice half – dhanursana posture before one practice full dhanurasan.
- Rise the hand backwards completely with chest .
- One should not bend elbows.

Caution

- People having peptic ulcer, thyroid, endocrine glands disorders , high blood pressure , heart ailments and back problem should not practise without guidance of a trainedteacher.

Bhujangasana

Bhujangasana known as the cobra pose is one of the standard pose in the Surya Namaskar sequence.The term has been coined from Sanskrit words bhujanga means Cobra or Snake and asana means pose.

Technique

- Lie flat on the abdomen with the legs straight , feet together and the soles of the feet upward .
- Place the plan of the hand flat on the floor, below the slightly to the side of the shoulders.
- while inhaling, slowly raise the head , neck, shoulders ,chest and then the abdomen without raising the pelvis.
- Keep the elbow slightly bent instead of straightening the arms, if one is not flexible.
- Relax the lower back muscles.
- Practice 2 to 3 rounds.

Remember

- Fingers Must remain together .
- One should not jerk to raise the body .

- Navel or its lower parts Must not be raised.
- Put minimum weight on hands divide the weight on Spine and arms.

Cautiou

People with neck, back or wrist, problems should be extremely careful while practing, if one has neck problem he can keep the hand straight and avoid looking up.

Supine

Ardha–halasana

Lie down on yoga mat on the back with the legsstretched out.

Bring the heels and toes of both legsclose together.

Relax the body.

Stretch the arms on both sides with the palms facing the floor.

Press the palms down.

Now inhale and raise your right leg slowly until it is 90 degrees or then as high as possible. Keep the leg straight and make sure that it's does not bend at the knee. Continue inhaling while holding the legstraight at the height one feels comfortable. Begin to exhale and bring the leg down slowly back to the floor, complete the exhalation.

Repeat the same process with the left leg.

Do three cycleof the above alternative legs.

Then 60 degree and finally till both the legs makes an angle of 90 degree with the floor, take care that the knees are not bent.

Complete inhalations

Do the same three times with both legs in quick succession.

Halasana

Description

The practitioner line on the floor, lifts the legs ,and then places them behind the head. Experienced practitioners may enter halasan from a standing position by tucking chin tochest, placing hand on the floor , walking the feet towards the hands and bending at the elbows to lower shoulder to the floor.

Cautious

This asana can put significant strain on the cervical spine , which does not normally undergo this type of stress and can casual injury if not performed properly. Practicing this pose without leg support can lead to injury. To provide support for the legs , practitioners may use props such as blocks. As alternatives, simply lying on the back and raising the legs into a hamstring stretch, or doing a seated forwards bend maybe appropriate.

Summary conclusion and recommendations

Summary

The propose of this study was to find out the efficiency of schedule yogaprogramme on college student of college level pcricket players. The subjects were 60 male students of St Paul Teachers Training College birsinghpur, Samastipur ,Bihar ,under Lalit Narayan Mithila universityDarbhanga, duration 2019 to 20 session.Their age rangedfrom 20 to 25 years .The average age of the subject was 22.3 year.

The subject equal assign to 2 groups using random sampling procedure.

Conclusion:-

On the basic of the analyse of data, within the limitations of the present study, the following conclusions may be drawn :Yogicexercises as a combination of Pranayam and asanas for a period of twelve weeks durationwas effective in developing in age between 22 to 25 years college level students.

Recommendation:-

- In the light of conclusions drawn , the following recommendations may be made
- Yogic exercise ,used in this study maybe adopted by teachers of physical education , coaches and trainers for improving there skill
- Yogic exercise use in this study may be adopted by teachers of physical education, coaches and trainer for improving their fitness level
- Similar studies may be undertaken with the age group the sex othe than those employee in this study.

Reference

Mukhatliee, Chahal and Gir., (1977).

[he itnpaet of yogic exercise on the Indian I (ocke. x teatil inner of the third svorld cup held in 197S"

Nagendra. H. R. , and Nagarathna, R (1986). An integrated approach ot yoga therapy for bronchial asthrna: A •e-S4-tnonth . Journal tnonth prospective study.Journal ot .. '31'3-137

Narayan. R.. Ranmat, A

Khanolkar.M.. katuat. S. I Desai. S. R . and l) hlitue. R K 1990' "Quantitati \ e evaluation of muscle relaxation induced by Kundaliniith the help of EMG integrato"r. Indian Journal of Physiology and Phartnacology 34. 27')281.

Novak and Lepicavaka.s (1989). " he effect of Kapalabhati by tneans of periodical airinsulation in to the left and to the right nostril".

Oken, B.,Zajdel, D.. Kishiyama, S., Flegal, K.. Dehen. C.. and Haas.

Randomized, controlled, six-month trial of yoga in healthy seniors: Effects on cognition and quality of life. Alternative Therapies in health and medicine 4()--'oak, J.P. BholeM.v., (1983-84). "pulse rate during and after Bhaya Kumbhaka different conditions of abdominal '"all". Yoea Mimannsa xolx,Xl..14 Partap.V..Berrettini,W.H. and Smith G.. (1978).

"Arterial Blood Gas pranayanl. :practice Percept Mot. Skills 46(1)

Arpana kumari
Asst. Professor

Digital Revolution of Education

As we know that **“change is the rule of nature”**. Our life is transform gradually day by day from ancient time to Present time as Vedic Period to Information Age because of human effort and intelligence .Learning start from birth to death as a consequences of ongoing interaction between people and their environment . Human Transformed their living style with Culturally, Economically, Geographically and Globally by the virtue of learning will. Learning focuses on the acquisition of different type of knowledge supported by perceived information which leads to the development of new capacity , understanding , imitation, skill , values , attitude and performance . Education ,Teaching As well As Learning is continuous and developmental Process that transform our nature ,culture and civilization according to time and condition .If we review the history of teaching-learning method ,sources and equipment , we see a great change with time .Teaching –Learning started to gurukul system from ancient time and transform in digital classroom and E - Learning till now on the cause of human effort , Learning and research etc. Rapid development of education system. Education 4.0 moved from the current 2.0 education to 3.0 / 4.0 –

Education 1.0 - Centuries of memorization practise

Education 2.0 – Learning through Internet

Education 3.0 – Consumption of knowledge and labour

Education 4.0 – Enable education to create change

In present Scenario, Education 4.0 is the combination of internet , multimedia , Artificial Intelligence , extensive information and research ,Internet of things , Virtual Reality that transforming the educational process . Education 4.0 is an institute of believed that promotes intelligent and smart thinking in education. Education 4.0 promotes education differently , mainly by consuming technology –based tools and resources . the students will not learn to use textbook , pens and lecture of teachers in traditional classroom . Education 4.0 allows remote students to access the Internet and enroll in courses through a variety of open online courses ,video chat , voice call to learn more dynamic material about the shame student .

Advantages of education 4.0 –

- It is beneficial for teacher and educator for better meet the specific need of students.
- Teacher can ultimately teach student ,not classes to use tools and techniques that promote this personalized learning goal.
- This leads to better learning outcome for student and better educational outcome.
- Education 4.0 permits teacher and educators by providing best method &techniques to facilitate work.

- Computer training and blended learning methods are needed to improve learning and skills by exchanging classrooms, MOOCs and discussion forums.
- This is the most important goal of Education 4.0 for all educational institutions: to encourage students and improve students' learning outcomes.
- Education 4.0 treats students as beneficiaries as before. Using technology, students can connect in a better way with many other stakeholders in the system, better communication with teachers, parents and management.
- Student learning outcomes are directly proportional to the level of implementation of Education 4.0. Education 4.0 also helps improve learning as most of the tools and methods that support Education 4.0 will help you learn more effectively and effectively than traditional teaching methods.
- Education 4.0 does not apply only to teachers, trainers and students, even administrators and non-educators, such as administrators, can get the benefits from Education 4.0.
- Education 4.0 is based on the optimum use of technological tools and resources. These tools, such as school management systems, are frequently developed to increase the efficiency of educational institutions and overcome the financial liability of work and management.
- Reduce the administrative burden by automating many processes while modernizing specific process and teaching method .

Conclusion–

The ideas of Education 4.0 are formed by components that are modified and adapted to the educational process. Making this idea a reality at school requires a holistic approach, where "the whole" is something more than the sum of its components. Hence, Education 4.0 at school is a comprehensive system subject to certain regularities which should not be assessed from the perspective of the regularities that govern such components. Education 4.0 is a kind of vision of the school in the future that can contribute to educational changes. With the use of artificial intelligence, these changes also extend to students with special educational needs, who will be accurately and continuously diagnosed in terms of their progress and educational achievements.

References –

- Atzori, L., Iera, A., Morabito, G. (2010). The Internet of Things: A survey. Computer Networks, 54, 2787-2805.
- Blossfeld, HP., von Maurice, J. (2011) Education as a lifelong process. Z Erziehungswiss, 14, 19–34.
- Brosch, A. (2008). Text-messaging and its Effect on Youth's Relationships. The New Educational Review, 14, 91-101.

Professional Development

Dr. Pawan kumar
Asst. Prof.

A profession can be defined as an occupation which requires some specialized study and training, and the purpose of which is generally to provide skilled services and guidance in lieu of a definite fee or remuneration. However, some professionals may provide services without asking for payment. A profession is a calling and it implies acquisition of a fund of knowledge, range of skills and their application for the service of humanity. The service rendered by a professional may be direct as in the case of teachers and doctors or indirect as it is in the case of teacher educators i.e. teachers of teacher trainees. Further, this service may be rendered to a limited segment of the population, for a limited period of time or phase of life. This service is not rendered to the entire learner population undergoing graduation or post-graduation courses, but, it is rendered to those who have aptitude for the profession. It is rendered for a limited period of time in the sense that an individual is expected to go through training before taking up the profession and then, is expected to update his/her knowledge and skills after a regular interval of time.

Characteristics of a Profession

A profession indicates certain specific characteristics. They are:

(i) A profession demands possession of a body of specialized knowledge and extended practical training.

(ii) A profession renders an essential social service.

(iii) A profession demands continuous in-service training of its members.

(iv) A profession has a clearly defined membership of a particular group, with a view to safe-guarding the interests of the profession.

(v) A profession involves a code of ethics.

(vi) A profession assures its members a professional career

Characteristics of Teaching Profession:-

(i) It essentially involves an intellectual operation.

(ii) It draws material from science.

(iii) It transforms raw material into a practical and definite end.

(iv) It possesses an educationally communicable technique.

(v) It tends towards self-organization.

(vi) It essentially performs a social service.

(vii) It has a lengthy period of study and training.

(viii) It has a high degree of autonomy.

(ix) It is based upon a systematic body of knowledge.

(x) It has a common code of ethics.

(xi) It generates in-service growth.

Need And Importance Of Professional Development :-

"Professional development of teachers is not an event, rather it is a continuous process", this is a common statement written in most of the documents dealing with professional development of teachers. There is no doubt that teaching is a profession and has certain professional obligations. Sometimes these obligations are written in terms of code of conduct or many times these are mere conventions, Teaching profession has changed a lot. In India, NCF-2005 has brought radical changes in teaching-learning process. This has influenced role of teachers also. Many such policy changes have influenced teachers' role. Can you identify few such changes in first 15 years of 21st century, which have influenced the role of teachers in an elementary or secondary school ?

A definition of Professional Development for teachers is given below:

"The process by which … teachers review, renew and extend their commitment as change agents … and by which they acquire and develop critically the knowledge, skills, planning and practice… through each phase of their teaching lives" (Day, 1999: 4)

Teacher's Professional Development "is the body of systematic activities to prepare teachers for their job, including initial training, induction courses ,in-service training and continuous professional development within school settings." (OECD, 2010)

Need of professional development for teachers can be summarized under following points:

- Expanding knowledge domain of subjects
- Due to changing pedagogy.
- Increasing involvement of media.
- Focus of use of ICT.
- Enactment of policies and schemes.
- Meeting demands of society and nation.

IN-SERVICE TEACHER TRAINING AS PROFESSIONAL DEVELOPMENT :-

Role of in-service teacher training was highlighted by Secondary Education Commission (1952-53) under the chairmanship of Dr. A. Lakshman Swami Mudaliar which advocated:

"However excellent the programme of teacher-training may be, it does not by itself produce an excellent teacher. It can only engenderthe knowledge skills and attitudes which will enable the teacher to begin his task with a reasonable degree of confidence and with the minimum amount of experience. Increased efficiency will come throughexperience critically analyzed and through individual and group efforts at improvement. The teacher training institution should accept its responsibility for assisting in this in-service stage of teacher-training.Among the activities which the training college should provide or in which it should collaborate are: (1) refresher courses, (2) short intensive courses in special subjects, (3) practical training in workshop, (4)seminars and professional conferences. It should also allow its staff where possible to serve as consultants to a school or group of schoolsconducting some programme of improvement. (p. 139)".

The Education Commission (1964-66) also recommended that "school complexes" with a nodal school shouldering the responsibility for the continuous professional development

of all teachers working in the schools, should be established. State Institutes of Education (SIEs) have come up in various states as outcome of these recommendations. Report of the National Commission of Teachers-I (1983-85) titled "Teacher and Society", also recommended that every teacher must attend in-service training of 3 weeks' duration once in a block of five years and it should be linked with career promotion. The National Policy of Education (NPE 1986/92) mentioned categorically that "teacher education is a continuous process, and its pre-service and in-service components are inseparable."

Clarifying the role of in-service teacher education as professional development activity, The Acharya Ramamurthi Review Committee (1990) explicitly advocated that "in-service and refresher courses should be related to the specific needs of the teachers. In-service education should take due care of the future needs of teacher growth; evaluation and follow up should be part of the scheme."

The Report by NCERT (August, 2009) on "Comprehensive Evaluation of the Centrally Sponsored Scheme on Teacher Education" has set out the immediate tasks which form agenda as under:

The Report states that "Block and Cluster Resource Centers were establishedduring DPEP in some selected districts after which these centres were expanded across the country aspart of the SSA programme, for improving the quality ofelementary education. Thus, the staff duties and responsibilities are presently based on the SSA Framework of Implementation and its objectives. But due to successful implementation of SSA programme the enrolment at secondary stage has increased. Besides this, universalisation of secondary education is also under active consideration. Keeping this in view, there is an urgent need to change the role and functions of BRCs and convert these into Block LevelInstitutions of Teacher Education (BITEs)."

CONTINUOUS PROFESSIONAL DEVELOPMENT (CPD) :-

CPD is the process by which teachers acquire, develop and strengthen their skills and know-how to become more effective. It is an ongoing process and is in response to the professional environment, which is ever changing.

- Updating knowledge
- Improving classroom practices
- Dealing with emerging challenges
- Professional networking

राम कृष्ण भारती
सहायक प्राध्यापक

नई शिक्षा नीति २०२०

परिचय

21 वीं सदी के 20 वे साल में भारत में नई शिक्षा नीति आई है। भारत में सर्वप्रथम 1968 में नई शिक्षा नीति बनाई गई थी उसके बाद 1986 में बनाई गई जिसके बाद नई शिक्षा नीति को 1992 में संशोधित किया गया। लगभग 34 साल बाद 2020 में पुन: नई शिक्षा नीति को लेकर बदलाव किया गया है। जिसमें शिक्षा संबंधित बहुत से नियम का बदलाव किया गया है। वही हाल में मानव संसाधन प्रबंधन मंत्रालय ने शिक्षा नीति में बदलाव के साथ-साथ अपने मंत्रालय का नाम भी बदल दिया है, मानव संसाधन प्रबंधन का`अब शिक्षा मंत्रालय के नाम से जाना जाएगा।

National Education Policy तहत शिक्षको के लिए व्यवसायिक विकास को जरूरी कर दिया गया है और शिक्षको के लिए सर्विस ट्रेनिंग का आयोजन भी किया जाऐगा।

- **उद्देश्य:-**

  नई राष्ट्रीय एजुकेशन नीति (NEP) का मुख्य उद्देश्य भारत को विश्व स्तर पर शैक्षिक रूप से महाशक्ति बनाना तथा भारत में शिक्षा का आधंनिक करण कर शिक्षा की गुणवता को उच्च करना है।

- नई शिक्षा नीति 2020 के तहत 2030 तक शैक्षिक प्रणाली को निश्चित किया गया है वर्तमान में चल रही 10 + 2 के मॉडल के स्थान पर 5 + 3 + 3 + 4 की शैक्षिक प्रणाली के आधार पर पाठ्यक्रम का विभाजित किया जाएगा। नई शिक्षा नीति 2020 के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकार शिक्षा क्षेत्र सहयोग के लिए देश की 6: जीडीपी के बराबर शिक्षा क्षेत्र में निवेश करेगी।

  New National Education Policy का उद्देश्य शैक्षिक क्षेत्र में भारत को वैश्विक महाशक्ति बनाना है भारत के लिए नई शैक्षिक नीतियों के माध्यम से सम्पूर्ण भारत में शिक्षा का उचित स्तर प्रदान करना है जिससे शैक्षिक क्षेत्र की गुणवता उच्च हो सका भारत में बच्चों का तकनीकी तथा रचनात्मकता के साथ-साथ शिक्षा की गुणवता के महत्त्व से अवगत कराना नई शिक्षा नीति का उद्देश्य है जिससे शिक्षा की गुणवता में सुधार हो सके।

- **National Education Policy (NEP)**

  5 + 3 + 3 + 4 Structure की भूमिका:-

  नई शिक्षा नीति स्वतंत्र भारत के तीसरी शिक्षा नीति है जिसमें बुनियादी तौर पर बदलाव किया गया।

  नई शिक्षा नीति के तहत शैक्षिक क्षेत्र को तकनीकी से भी जोड़ा जाएगा जिसमें सभी स्कूलो में ज्यादा से ज्यादा डिजिटल इंस्ट्रूमेंट दिए जाएंगें।

  मानव जीवन में सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए नई शिक्षा नीति को लागू किया गया है।

  छठवी कक्षा से बच्चों को व्यवसायिक शिक्षा दी जाएगी।

  नई शिक्षा नीति के अंतर्गत छात्रों को छठवी कक्षा से ही कोडिंग सिखाई जाएगी।

  नई शिक्षा नीति के भीतर अब पढ़ाई में कई प्रकार के अन्य विकल्प बच्चों को दिए जाएँगे। अब 10 वीं कक्षा में अन्य विकल्पों को रखा जाएगा। जिसमें छात्र कोई स्ट्रीम ना चुनकर अपनी इच्छा विशयों को चुन सकेगा।

  नई शिक्षा नीति के तहत वर्शो से चल आ रही 10 + 2 के शैक्षिक पैटर्न को बदलकर 5 + 3 + 3 + 4 के नए शैक्षिक पैटर्न को चुना गया हैं जिसमें 3 साल की फ्री New Education Policy स्कूलो शिक्षा बच्चों को दी जाएगी।

- **नई शिक्षा नीति के तथ्य:-**

नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 के अंतर्गत शैक्षिक पाठ्यक्रम को लचीला बनाए जाने की हर संभंव कोशिश की जा रही है यदि कोई छात्र किसी शैक्षिक कोर्स में रूझान नहीं रखता है तो उस शैक्षिक कोर्स के बीच में दूसरा कोर्स पढ़ना चाहता है तो वह अपने पहले कोर्स से निश्चित समय अवधि तक रूक कर दूसरा कोर्स पढ़ सकते है।

- ☛ नई शिक्षा नीति भीतर 2040 तक सभी उच्च शिक्षा संस्थानों को बहू विशयक शैक्षिक पाठ्यक्रम संस्थान बनाने का उद्देश्य रखा गया है।
- ☛ नई शिक्षा नीति के तहत सरकारी तथा प्राइवेट संस्थानों को एक समान माना जाएगा।

- **न्यू एजुकेशन पॉलिसी 2020 के लाभः-**
  - ☛ नई शिक्षा नीति के माध्यम से शैक्षिक क्षेत्र में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है।
  - ☛ नई शिक्षा नीति में 2025 तक प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा ती नतक के सभी छात्रों के लिए संख्यात्मक ज्ञान तथा साक्षरता की योजना तैयार की जाएगी।
  - ☛ नई शिक्षा नीति में 2030 तक अधयापन के लिए इण्मक की डिग्री को 4 वर्श की न्यूनतम डिग्री योग्यता में सम्मिलित कर दिया गया है। 2030 तक इण्मक का कोर्स 4 साल का हो चुका है।
  - ☛ स्वास्थ्य नीति के तहत छात्रो के स्वास्थ्य पर भी ध्यान दिया जाएगा जिसके साथ छात्रों के लिए स्वास्थ कार्ड भी बनाये जाएंगें।
  - ☛ नई शिक्षा नीति के माधय से शिक्षकों को समय-समय पर उनके कार्य प्रदर्शन के आधार पर प्रहोन्नति को भी रखा गया है।

- **निष्कर्श**

वर्तमान शिक्षा प्रणाली वर्श 1986 की मौजुद शिक्षा नीति मे किए गए परिवर्तनों का परिणाम है। इसे शिक्षार्थी और देश के विकास को बढ़ावा देने के लिए लागू किया गया है। इस नीति के तहत वर्श 2030 तक अपने उद्देश्य को प्राप्त करने का लक्ष्य है।

- **संदर्भ ग्रंथः-**

जारी हुई नई शिक्षा नीति के बाद भारत की शिक्षा नीति में यह पहला परिवर्तन है।

- ☛ अंतरिक्ष के कस्तरीरंगन की अधयक्षता वाली समिति की रिपोर्ट सं
- ☛ कोठारी आयोग (1964-1966) से
- ☛ माधयमिक शिक्षा आयोग (1952) को डॉ. लक्ष्मणस्वामी मुधलियर से

STRATEGIES TO DEVELOP COMMUNICATIVE COMPETENCE

Hasan Abad
Asst. Prof.

Abstract

Language is used for self expression, verbal thinking, problem and creative writing but it is used essentially for communication. In India, for the communication purpose our first language is Hindi But today in professional world English is used as the first language. Therefore in most of the government and the private school, colleges and institute. English language is the medium of communication. But the students belonging to rural colleges in India face problem with this language. Student lack in good speaking fluency they hesitate while speaking in English and all these things become the cause of communication breakdown. These things make the learners victim of lack of confidence in there. To cure there types of problems there should be some proper planning in the syllabus of these colleges. This paper explores the strategies the develop communication competence among the under privileged student of rural areas. As discussed above about the problems of the learners, there are some plan, which can be used designing the syllabus.

Introduction

Communicative competence is a linguistic term for the ability not only to apply the grammatical rules of a language to form correct utterance , but also to know when to use these utterances appropriately . The tem was coined by Dell Hymes in 1966 , reacting against the inadequacy of Noam Chomsky's distinction between competence and performance . The concept of communicative competence is both comprehensive and complex . Serious attempts have been taken by the teachers to develop the level of communicative competence in their learners . In order to develop the communicative competence , the teachers need to adopt specific methods or approaches which normally support the learners to improve their language .

Four aspects of communicative competence :

(i) Linguistic or grammatical competence : the use of grammar , and the knowledge of the rules of morphology , syntax , sentence and phonology .

(ii) Sociolinguistic competence : a language user's knowledge about the culture where the actual communication occurs .

(iii) Discourse competence : one's ability to create coherent written text or conversation and the ability to understand them .

(iv) Strategic competence : verbal and non- verbal communication strategies for compensate communication breakdown.

Strategies to develop communicative competence in Indian learners through Linguistic or grammatical approach :

" Grammar is an indispensable part of any particular language , considering that the

systematic rules of the language play the most important role for mutual intelligibility and , in relation to this , for building social relationship via verbal communication . " 1

In his book , A Student's Grammar of the English Language , S.G Baum has given the above definition of the grammar . He suggests that the most beneficial way of helping learners improve their command of grammar in communication is to use students ' language as the basis for discussing grammatical concepts .

So there are some plans based on grammatical approach which can be use by teachers to improve their learners ' communicative competence , such as :

A - Regular classes of English grammar :

Teachers should take regular classes of English grammar , so that the students can learn the correct use of language . The content of these classes should be based on these points :

1. Teaching concepts on subject , verb , sentence , clause , phrase .
2. Teaching style through sentence combining and sentence generating .
3. Teaching sentence sense through the manipulation of syntactic elements .
4. Teaching punctuation and mechanism for convention , clarity and style .

These points are talking about 5 main aspects of grammatical mechanisms of English language , which are , phonetics , phonology , morphology , syntax , and semantics .

Phonetics-" It relates with the physical production perception of the inventory of sounds used in producing language . It talks about the articulation system of words ." 2

Phonology- The mental organization of physical sounds and the patterns formed by the way sounds are combined in language .

Morphology - The identification , analysis and description of meaning in a language . One will know the inflectional and derivational morphology present in the language , such as affixes of words : c.g. re - write can be derived but no re - rich .

Syntax- It relates with structure and formation of sentence e.g .: my hair needs washing is acceptable but not my hair needs wash .

Semantics-" It is talked about understanding the meaning of the sentences . This is also how a user of language is able to understand and interpret the non- literal in a given utterance ". There are three distinctions , drawn here :

(i) Meaningful and non - meaningful sentence E.g. The accident was seen by thousand , is meaningful but the accident was looked by thousands , is not .

(ii) Same structure but different meanings E.g. The cow was found by the stream , but not , the cow was found by the farmer .

(iii) Different structures but still be able to relate the meanings E.g. The police caught the thief , and , the thief was caught by the police , are caring same meaning . So these are the main basics of the English grammar , which , a teacher should teach to his or her students while teaching the grammar to them . It will be helpful to learners to attain the motto of communicative competence .

B - Assignment on writing in English

Writing is a complex and challenging activity for many students but it can be useful to learn the target language of learners . Teachers can give the task of assignment writing to their learners with the use of English language and should focus on the grammatical use of language that is essential for the clear communication .

Grammatical instruction is most naturally integrated during revising , editing , and reading phases of the writing process . At the completion of their assignment , teacher can employ various strategies to help student in learning grammatical concept as language

choice that can enhance their writing purpose . For improving writing skill , teacher can help students revise for effective word choice . For example : teacher may ask students to read their writing aloud to another student . This strategy help both the partner and the writer to recognize when , too many sentences begin with same words , such as , " It is " or " There are " . Both the partner and the writer can discuss ways to vary the sentence beginning . This strategy will also be beneficial to improve vocabulary of learners .

C- Regular Group Discussions

This strategy can also be worthy for learners to improve their communicative skills . Teachers can condu group discussions regularly . For example , teacher should give any common topic to all the students and every student will free to give his or her individual views on the related topic . Generally learners feel complex whether speaking in isolation but in common discussion they will speak without any stress . It will improve their speaking fluency and duration of speaking continuity , and then chances of communication breakdown be short .

D - Create opportunities for students

(a) Practice of Proofreading

Teachers can help students become better proof-readers through peer editing groups . Based on the writing abilities of their students , teacher can assign different proofreading task to specific individual in each group For example , one person in group might proofread for spelling errors , another person for fragmentation of sentence , and another for punctuation errors . As students develop increasing skill in proofreading , they become responsible for more reading tasks . Collaborating with classmates in group will help students improve their own grammar skills as well as understand the importance of grammar as a tool of effective communication .

(b) Practice of Sentence Combing

Second thing which a teacher could do to help his or her students is , the sentence combining strategy Teacher should teach the style of sentence combining and sentence generating ; in the grammar class . It is a strategy of joining short sentences in to longer , more complex sentences . As students engage in sentence combining activities , they learn how to vary sentence structure in order to change meaning and style . This strategy will be worthy for learners to improve their writing skills . As in the book of , General English , in the course of B.A. Part 1 , edited by Dr. R.N. Sharma and Dr. Rakesh Ravi told about the sentence combining and sentence generating that , " the value of sentence combining is most evident as students recognize the effect of sentence variety (beginning , lengths , complexities) in their own writing " .4

E - Co - curriculum activities

The atmosphere of co - curriculum activities will also enhance the communication skill of the students . There are number of activities , which can help learners to increase their language learning . Such as :

(i) -Using Games to promote Communicative Skill

The use of games can be a powerful language learning tool . On the surface , the aim of all language games is for students to " use the language " , however , during game play learners will achieve their target of communicative perfection . Games offer students a fun - field and relaxing learning and practicing new vocabulary , students have the opportunity to use language in a non - stressful way . Game oriented activities will create a meaningful context for language use . In a game oriented context anxiety will reduce and speech fluency will generate , thus communicative competence will be achieved . The benefits of using

games in language learning can be summed up in these points :

Games :

a - Are learner centered .

b - Promote communicative competence .

c - Reduce learning anxiety .

d - Create a meaningful context for language use .

e - Foster participatory attitude of the students .

f - Create spontaneous use of language .

Teachers can invent many classroom language games to help their learners , for example the instructor can give some task such as : their favourite personality , their favourite place, latest gadget etc. Then the student will describe their task in 10-15 sentences to complete it. This game will encourage learners ' productive skill and elicits their speech fluency.

(ii) Debate competition

Teachers should organize alternate debate competition to help their students . They can give anyone burning issue of the society or issues related with the any branch of knowledge for the topic of debate . There should be the rank division at the end of the debate as first, second , and third , so that , the learners take this initiative and it will encourage them to come on the stage . It will make them confident and fluent in target language .

(iii) Story - telling and Poetry - reading

The student can be asked for story telling in the class . The content of the story may be comic but it should end with moral teaching . The learners can also ask for poetry- reading in English language , with this strategy they will know the importance of intonation and the use of pitch variation in communication .

Conclusion

So these are some strategies which , one can apply on one's students or can use while designing the syllabus for the under privileged students To sum up , officially English has a status of the assistant language , but in fact it is the important language in India . After Hindi it is the most commonly spoken language in India and probably the most read and written language in India . Today everyone is aware of t importance of English in the modern era . In order to succeed in one's life , one has to be acquainted with English very well . But the students of the rural colleges in India are still facing problems with this language . Present paper disclosed the strategies which may be beneficial for these under privileged learners to achieve their target of communicative competence .

References

Baum , S.G (2001) . A Student Grammar of English Language . New Delhi : Person Education (Singapure) Pvt . Ltd.

Balasubramanian , T (1996) . A Textbook of English Phonetics for Indian Students . Madras Mackmillan India Ltd.

Sharma R.N. , Ravi . Rakesh , (2008) . General English .Agra : Ranjana publication.

NAND KISHOR KUMAR
ICT LAB ASSISTANT

TECHNO PEDAGOGICAL AND ICT COMPETENCIES AMONG TEACHER

After Thirty Four Years Since The Launch Of The National Policy On Education In 1986 A New Education Policy -2020 Has Been Announced And Is Currently Under Implementation .With The Arrival Of NEP-2020 There Has Been A Vital Shift In The Indian Education System Aligned With The Aspirational Goals Of 21st Century .The Policy Complete Overhaul Focus On Learner Centric Approach .It Proclaims To Transform India Into A Global Knowledge Superpower. The Vision Of The NEP-2020 Is In Sync With Goal 4 Of UN Sustainable Development Goal (SDG -4).Which Seeks To Insure Inclusive And Equitable Quality Education&Promote Lifelong Learning Opportunities For All .

There Are Many Expectations From The 21st Century Teacher .This Teacher Has Two Be A Blend Of Both The Old And The New .Teaching Has Been A Very Noble Profession So Teachers Have Been Respected Everywhere Since Ages .The 21 St Century Teacher Is Facing Many A Challenge Such As To Be Up To Date With The Latest Information By Becoming Tech Savy .At The Same Time A Teacher Has To Be A Techno Pedagogue.

1. Communicate By Using Digital Technologies:
2. Flexibility To Adapt And Embrace To New Technology
3. Go Paperless
4. Online Education And Apps
5. Use Social Media
6. Use Digital Assessment
7. Go Global:
8. Keeps Learning All Life Long
9. Making Classroom As World Theatre

Use of Blogs and Portals to Communicate With Students

जीवन में अच्छे और बुरे लोगों की परख

Suraj Kumar
Office.Com. Asst.

अक्सर हम कई बार ऐसे लोगों के बीच आ जाते है जहाँ हम अच्छे और बुरे लोगों में फर्क नहीं समझ पाते है, यह जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना है। ऐसे में कुछ बुरे लोग हमें भी अपने जैसा बनाने की कोशिश में लगे रहते है और ऐसा करके उन्हें काफी आनंद भी मिलता है। ऐसे लोग ना तो खुद ही आगे बढ़ते है और ना किसी को आगे बढ़ने देते है।

अच्छे लोगों की क्या खासियत होती है ?

अच्छे लोग आपको आगे बढ़ने की सलाह देने के साथ-साथ आपकी प्रेरणा के स्रोत्र भी बनते है। कई लोग अपने जीवन स्तर में काफी सुधार कर चुके होते है, क्योंकि उनके साथ कुछ गतिविधियाँ थी जो उन्हें कुछ अच्छे लोगों से सीखने को मिली। ''अपने साधनों का सही उपयोग कहाँ और कैसे करना है ये वो भलीभांति समझ सकते हैं''।

अक्सर कई लोग उन लोगों के बीच बैठना पसंद करते है जो सिर्फ उनकी झूठी तारीफ करते है, लेकिन आप बस एक बार उनसे अपने लिए मदद की उम्मीद करके देखिएगा तो, आप खुद समझ जायेंगे की वो हमारे हितेषी है या नहीं।

नींम कड़वा जरुर होता है पर ज्यादातर बिमारियों में नीम हकीम भी होता है, कुछ लोग नीम की तरह होते है, लेकिन वो ही आपके सच्चे हितेषी भी होते है।

ऐसे लोगों से हमेशा आपको फायदा ही मिलता है क्योंकि उनको जब आपकी बुराई करनी होती है तो वो आपके पीठ पीछे नहीं बोलेंगे बल्कि वो आपके सामने ही आपकी बुराई कर देंगे। उनकी बातें बिल्कुल खड़ी होती है।

बुरे लोगों की बात करूँ तो वो नकारात्मक पहलुओं को तुरंत पकड़ते है और जब हम उनके साथ रहना शुरू करते है तो हमारे अन्दर भी वो ही नकारात्मकता का भाव पनपने लगता है। हमारी सोच भी उन्ही के जैसी होने लगती है, क्योंकि एक दुसरे में घुलने-मिलने के लिए हमें भी उनके जैसा ही बनना पड़ता है। ये मानव की प्रकृति है कि वो नकारात्मकता की ओर जल्दी ही आकर्षित हो जाता है। जिसका प्रभाव उन्हें तब दिखाई पड़ता है जब कोई उनकी आशाओं को रोंधकर उनसे आगे निकल जाता है।

कई बार तो इतनी देर हो चुकी होती है की मुकाम हाथ से पूरी तरह निकल जाता है। जो लोग मीठा बोलते है आपको उनसे सतर्क रहने की जरुरत हो सकता है कि वो आपके हितेषी ना हो मैं ये नहीं कहता की सभी लोग एक जैसे ही होते है पर कुछ लोग आपकी परवाह करने वाले भी होंते है।

''मनुष्य के लिए बुरी संगत उस कोयले के सामान है,
जो गर्म हो तो हाथ जला देता है, और ठंडा हो तो हाथ काला कर देता है।''

मनुष्य की आदतें और उनके प्रति बर्ताव और उनकी सोच यही सब इंसान को अच्छा या बुरा बनाती है। हम सब तरह के लोगो से भड़क गए हैं फिर चाहे वो लोग अच्छे हों या बुरे और ये हमे तय करना होगा कि हमे किस के साथ रहना है अच्छे लोगो के साथ या फिर बुरे लोगो के साथ !

समाजिक व्यवस्था एवं संस्कृति को बचाए रखने की जरूरत

खुशबू कुमारी
डी.एल.एड.

आज हमें अपने देश की सभ्यता व अपने देश की सामाजिक व्यवस्था पर प्रकाश डालने की जरूरत है। वर्षो पूर्व हमारे देश की सामाजिक सांस्कृतिक व आर्थिक व्यवस्था काफी बेहतर थी, पर ज्यो-ज्यों समय बीतता चला गया त्यो-त्यो हमारी सामाजिक व्यवस्था विखण्डित होती चली गयी।

हमारी संस्कृतिक व सामाजिक व्यवस्था पर इस का बहुत बुरा प्रभाव पड़ा गौरतलब है कि पूर्व में मनुष्यों की दिनचर्या संस्कारों से परिपूर्ण थी सुबह को उठ कर माता-पिता के पैरों को स्पर्श करना, गुरुओं को सम्मान देना व अपने से बड़ो व छोटों का आदर करना- ये थीं हमारे देश की सभ्यता एवं संस्कृति, परन्तु ज्यों-ज्यों पश्चिमी सभ्यता हमारे देश में छाती गई मानो जैसे वह सब कुछ परिवर्तित होता चला गया। यहाँ तक मनुष्यों के व्यवहारो में भी काफी बदलाव देखा गया। आदर-सम्मान करना उनकी फ़ितरत थी जिसे वे अपना धर्म समझते थे, परन्तु आज की जमीनी हकीकत उसके विपरीत है।

मनुष्य तो बढ़ता चलता गया पर अपने संस्कारों को भुलाता चला गया। एक ओर कल की शिक्षा थी जो जैसी किताबों में थी वैसी ही वे अपने व्यवहारो में भी रखते थे, पर अब वास्तविकता इसके विपरीत है। किताबी ज्ञान बस आज परीक्षा हाँल तक व बोलने तक या किताबों तक ही सीमित है। आज अपने देश के लोग अपनी संस्कृति सभ्यता को भुलकर पश्चिमी सभ्यता को अपनाने में अपनी महानता समझते है। यही नही खाने-पीने के तौर तरीकों में भी बदलाव आया है।

साथ ही व्यवस्था में काफी बदलाव आया है। अगर ऐसा ही चलता रहा तो वह दिन दूर नही, जब अपने देश की सभ्यता-संस्कृति का एक दिन पूरी तरह से पतन हो जायेगा। देश की पौराणिक संस्कृति-सभ्यता को बचाए रखने को पुराने रीतिरिवाजो का अनुसरण करे, पालन करें और हमारे देश की संस्कारों की सुंदरता से परिपूर्णकरे।

भारत में नारी शिक्षा

सुष्मिता कुमारी
डी.एल.एड.

विश्व की लगभग सभी सभ्यताओं के इतिहास का अध्ययन करते समय हम जीतने प्राचीनकाल की ओर जाते है, नारी का समाज में उतना ही और असंतोषजनक स्थान पाते है, किंतु भारतीय सभ्यता इस दृष्टि से अनोखी है। हम जितने प्राचीन काल में जाते है, समाज में महिलाओं को स्थान उतना ही महत्त्वपूर्ण दृष्टिगत होता है। शिक्षा का क्षेत्र तो विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

भारत में ब्रहावादिनी विदुषियों की योग्यता बहुमुखी थी वैदिक काल में वे बैदिक साहित्य में पांडित्य प्राप्त करती थी और वैदिक मंत्रो की रचना भी किया करती थी। उनके द्वारा रचित कुछ मंत्र वैदिक संहिता में भी सम्मिलित किए गए है।

जब वैदिक ज्ञान और यज्ञ गुरु हो गए तो तत्संबंधी अध्ययन के सिलसिले में ज्ञान की एक नई शाखा का विकास हुआ, जिसे हम मीमांसा कहते है। यधपि यह गणित से भी शुष्क विषय है, तथा विदुषियों को हम इसमें पर्याप्त रुचि लेते पाते हैं। काश कृत्सनी ने मीमांसापर एक पुस्तक की रचना की थी, जिसे उसी के नाम पर काशकृत्सनी कहते है जो छात्राएँ इसका विशेष अध्ययन करती थी, उन्हे काशकृत्सनी कहते थे। यदि मीमांसा जैसे विशिष्ट और क्लिष्ट विज्ञान का अध्ययन करने वाली बालिकाएँ इतनी थी, की उनके लिए एक विशिष्टशब्द का निर्माण करना पड़ा तो हम भली प्रकार यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि साधारण साहित्यिक और सांस्कृतिक शिक्षा ग्रहण करने वाली बालिकाओं की संख्या भी उस काल में पर्याप्त रही होगी। उप निषद काल में जब दर्शन के अध्ययन का खुब प्रचार हुआ तो नारियों भी इस विषय में खुब रुचि लेने लगी। यज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी ऐसी ही नारी थी। वह वस्त्र आभूषण में इतनी रुचि नहीं लेती थी, जितनी दर्शन का गंभीर समस्याओं में। जनक के यज्ञ के अवसर पर जो दार्शनिक शास्त्रर्थ हुआ था, उसमें गार्गी के प्रश्न सबसे सूक्ष्म और दुरूह थे।

''मानव जीवन''

सुषमा कुमारी
डी.एल.एड.

आप तब तक जीवित है, जब तक आपके जीवन में एक उच्च उद्देश्य है, हम जीवन में उद्देश्य चलाएं, जीवन में हमें क्या चाहिए यह निश्चित करें और उस उद्देश्यय को पूरा करें, एक बार एक शिष्य ने अपने गुरु से पुछा–क्या मैं जीवित हूँ? गुरु ने प्रसन्नता से उत्तरदिया–तुम सचमुच भाग्यशाली हो किं तुम्हारे मन में यह प्रश्न तो उठा, क्योंकि अज्ञानी के मनमें ऐसा प्रश्न ही नही उठता।उसे यह भी संदेह नही होता कि वह मरा हुआ है या जीवित है। क्योंकि वह सांस ले सकता है, खा सकता है, इच्छा कर सकता है और अपनी इच्छा पुरी करने के लिए परिश्रम कर सकता है।इसलिए उसे लगता है कि वह जीवित है। यदि केवल सांस लेना ही जीना है, तो आप में और जानवरा में क्या अंतर है? वे भी सांस ले सकते है। यदि आप यह कहे। कि मैं तो इच्छा कर सकता हूँ और अपनी इच्छा पूरी करने के लिए मेहनत भी कर सकता हूँ, तो आपमें और जानवरों में क्या अंतर है? उनके मन में भी इच्छाए पैदा होती है, वे भी अपनी वृत्तियों को पूरा करने का प्रयास करते है और अपने तरीके से संतुष्टि प्राप्त कर लेते है, केवल सांस लेना और खाना ही मानव जीवन नही हो सकता, वह शायद वनस्पति या पशु का जीवन हो सकता है। मानव जीवन इससे कही अधिक है चैतन्य, जोजन्म से पहले मौजूद था और मृत्यु के बादभी मौजूद रहेगा, इस मूल तत्व को जानने में ही मानव जीवन की पूर्णता है क्या मैं जो जीवन जी रहा हूँ उसे सही अर्थ में मानव जीवन कहा जा सकता है? मनमें इस प्रश्न का उठना अधयात्म की शुरूआत है। यह प्रकाश की पहली किरण है, जिसके बिना आपके जीवन में ज्ञान का सूर्य उदित नही हो सकता। इस प्रश्न के साथ आपका एक नया जन्म हुआ है। इस नये जीवन का आपको वरदान मिला है। यह आपका वास्तविक जन्म है। यह आपके जीवन की सही शुरूआत है। धन्य है वह, जिसके मन में यह प्रश्न उठा है। एक बार भी अगर यह प्रश्न उठा, तो उसके पश्चात् वह अज्ञानता की निंद्रा में अधिक समय नही रह सकता।

''महिला सशक्तिकरण''

मीनाक्षी कुमारी
डी.एल.एड.

मैं अपना आना व्यर्थ न करूँगी,
कुछ सीख कर कुछ सिखा कर,
इंसानियत के बीज बो जाँगी।
मैं अपनी जिंदगी यूँ ही तमाम न होने दूँगी,
साँस साँस जमीं के नाम कर जाँगी।
मैं अपना आना व्यर्थ न करूँगी।।
मुसीबतों को नहीं, सिर्फ हल को खोजूँगी,
गया वो नहीं, जो आएगा वो मौका तलाशँगी।
कुछ यूँ ही मैं बढ़ जाँगी,
खेल खेल में जीत जाँगी।
मैं अपना आना व्यर्थ न करूँगी।।
बूँद–बूँद सागर बनेगा,
मेरी कोशिशों का एक महल बनेगा।
चहरों की चमक से उजाला होगा।
दिये जले या न जले,
न इस पार, न उस पार,
विश्व मेरा आशियाना होगा।

सपनों की नई सोच

प्रभात कुमार
डी.एल.एड.

तु कुछ कर अलग, तू कुछ बन अलग,
तभी तो नाम कमाएगा!!
सपनों का है यहाँ ऊँचा आसमान,
तू कुछ सोच अलग इस दुनिया से,
भरना है तुझको लंबी उड़ान,
तभी तू ऊँचा बन पाएगा।।
माना राहो पे आएंगी मुश्किले हजार,
तू संघर्ष कर, तू आगे बढ़
तभी तो सपना साकार कर पाएगा।।
तू कुछ कर अलग, तू कुछ बन अलग,
तभी तो नाम कमाएगा!!
पंख होंगे तेरे भी मजबूत,
जब तू सपनों में साहस भरपाएगा,
तू गिर, तू हजार बारगिर, फिर से उठ खड़ा हो,
तभी तो सपनो में उड़ान भर पाएगा!!
तु संघर्ष कर, तू आगे बढ़
तभी तो नाम कमाएगा।।
तू कुछ कर अलग, तू कुछ बन अलग,
त भी तो नाम कमाएगा।।
जीवन में सफलता मिलेगी तुझे भी,

अपना उज्जवल भविष्य निहारे

मूर्ति कुमारी
डी.एल.एड.

जो व्यक्ति अपने भविष्य को अपार संभावनाओं खुशियों से भरपूर निहारते हैं, उनका वर्तमान तो अच्छा रहता ही है, उनका भविष्य भी उज्जव लरहता है, क्योंकि उज्जवल की संभावना व्यक्ति के अंदर सकारात्मकता का बीजारोपण करती है और उसके भविष्य को सुंदर बनाती है।

अपने स्वर्णिम भविष्य को साकार करने के लिए परम पूज्य गुरुदेव ने सूत्र भी दिया है 21वीं सदी- ''उज्जवलभविष्य''

यह सूत्र ही हमें अपार सुख, शांति, निश्चिंतता व सुकून देता है। यदि भविष्य उज्जवल है, तो उसके लिए अभी से इतना परेशान होने की क्या जरूरत है? लेकिन उसको साकार करने में अपना श्रम, पुरूशार्थ व प्रतिभा के नियोजन की आवश्यकता है।

खुशी पर हर व्यक्ति का नैत्रिक अधिकार है। कोई इसे हमसे छीन नहीं सकता, बजाए हम इसे अपनाते रहें। इसें गुम ना होने दें। जीवन का हरपल हमें खुशियों से भर सकता है,

यदि हम इसमें खुशियो निहारे।
आत्मा अनु है-परमात्मा विभु।
आत्मा बिंदु है-परमात्मा सिंधु।

असली आस्तिक वही है, जिसे स्वयं पर विश्वास है।
अकेला रहने वाला यातो पागल होता है या परम हंस।

दिव्यांगना

सपना

डी.एल.एड.

ए खुदा ! जिन्दगी एसी है तो एसी ही सही। काट लुँगी इसे हिम्मत और किस्मत से लड़कर। अगर पैदा ही अंपग किया है तो क्या,तो मरते समय तक दिव्यांग ना बना लुंगी।

अपनी कमजोरी को इतना कमजोर कर दुगी, कि कमजोरियाँ ही हार जाएगी ?

मेरी सोच ही ताकत बन कर विजय बन जाएगी। जो समझे मुझे अपंग, उन्हे मैं दिव्यांगता दिखाउगी। चाहे जितनी भी मुश्किल हो, देर से ही सही पार कर दिखाँगी।

समाज की मानसिकता की चुनौती हो, तानो की मार हो, सब खाना सीख जा.गी, क्योकि मैं अपंग नही दिन्यांग ना कहलाऊंगी।

अंत मै एक दरख्वास्त करना चाहुगी

आप से सहानुभुति नही सम्मान चाहुँगी।

"लक्ष्य/प्रेरक प्रसंग"

मीरा झा

डी.एल.एड.

एक लड़के ने एक बार एक धनवान व्यक्ति को देखकर धनवान बनने का निश्चय किया। वह धन कमाने के लिए कई दिनों तक मेहनत कर धन कमाने के पीछे पड़ा और सारा पैसा कमा लिया। इसी बीच उसकी मुलाकात एक विद्वान से हुई विद्वान के ऐश्वर्य को देख कर वह आश्चर्यचकित हो गया और अब उसने विद्वान बनने का निश्चय कर लिया, अगले ही दिन से धन-कमाने को छोड़ कर पढ़ने में लग गया। वह अक्षर ज्ञान ही सीख पाता था कि इसी बीच उसकी मुलाकात एक संगीतज्ञ से हो गई। उसको संगीत में अधिक आकर्षण दिया, इस लिए उसी दिन से उसने पढ़ाई बंद करके संगीत सीखने लगा। इसी तरह उसका काफी उम्र बीत गया, न वह धनी बन सका, न विद्वान और न ही एक अच्छा संगीतज्ञ बन पाया। तब उसे बड़ा दुख हुआ। एक दिन उसकी मुलाकात एक बड़े महात्मा से हुई। उसने उन्हे। अपने दुख का कारण बताया, महात्मा ने उसकी परेशानी सुनी और मुस्कुराकर बोले, बेटा जहाँ भीजा ओगे कोई न कोई आकर्षक ही व्यक्ति मिलेगा। इसलिए एक कोई कार्य निश्चय करलो और फिर उसी कार्य पर अमल करते रहो, तुम्हें सफलता की प्राप्ति अवश्य होजा एगी, नहीं तो दुनिया के झमेले के चक्कर खाते रहोगे। बार-बार रुचि बदलने से कोई उन्नति नहीं कर पाओगे।

युवक (व्यक्ति) माहात्मा की बातको समझ गया और एक लक्ष्य निश्चित कर अभ्यास करने लगा।

निश्कर्श-उपर्यु क्तप्रसंग से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हम जो भी कार्य करें, पूरेतन और मन से एका ग्रचित हो कर करें, तभी सफलता प्राप्त की जासकती है।

एकलव्य एक आदर्श प्रस्तुति

रूपा कुमारी
डी.एल.एड.

''करत-करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान,

एकलव्य भील जाति में पैदा हुआ था। भील उन दिनो जंगल में ही निवास करते थें। उन्हे आजीविका के लिए जीव-जन्तुओं के शिकार पर ही निर्भर रहना पड़ता था। एकलव्य अकसर अपने पिता के साथ शिकार पर जाया करता था। उसके पिता खंजर से शिकार करते थें, जो एकलव्य को पसंद नही आता था वह छोटे-छोटे जीवो का शिकार गुलेल से करता था।

एक दिन हिस्तनापुर से गुजरते हुए उसने कुछ बच्चो को धनुर्विधा का अभ्यास करते देखा। उसने सोचा यदि हम भी धनुर्विधा सिख लेते छोटे-बड़े सभी जानवरो को शिकार आसानी से कर सकेगें। उस समय हस्तिनापुर में गुरुद्रोणाचार्य पांडव व कौरवों का धनुर्विद्या सिखाया करते थे। एकलव्य ने भी द्रोणाचार्य के पास जाकर धनुर्विधा सीखने की बात कही परद्रोणाचार्य ने यह कह कर मना कर दिया कि वे केवल क्षत्रियों को ही विद्या दान देते है। अभ्यास से मानव असंभव को भी संभवत: था कठिन से कठिन कार्य को भी सरल बना सकता है।

Self Confidence

Amarjeet Kumar
B.Ed.

We all know that Self-confidence means having a belief in yourself and your abilities.

It is freedom from doubt. It is something that needs to be developed internally. It cannot be taught but it is very important for a healthy and positive lifestyle.

One cannot achieve his/her goals without self-confidence. Self-confidence makes a person independent, eager, optimistic, loving and positive by nature. And all these characteristics are important to achieve goals in life.

It is not so that a confident person will always win and achieve success in life. But a self-confident person will always come over a difficult situation. He/she understands that it's not always about winning but about learning from your mistakes.

People also face the problem of presumption. This also shakes self-confidence. For example, you are going to a debate competition and you know that the opponent is very strong; you may feel nervous and presume that you will lose. This can bring negativity and can affect your debate.

Another way to boost your self-confidence is to set realistic goals. If we set our goals too high, it can affect our self-confidence. For example, if you plan to finish a whole course book in a day. It is unrealistic. You may not be able to achieve this goal. A whole book cannot be learned in aday. You may feel low when unable to achieve this goal.

Similarly, if you set your goals too low, it also won't work for you self-confidence. For example, you plan to learn only one question-answer per day, this is very less work to be done to score good marks or to complete your course on time. Hence, you should always set realistic goals.

Remember, self-confidence and achieve your goals slowly and steadily.

Thank you.

ँ श्रीसरस्वत्यै नमः

अरविन्द कुमार चौधरी

बी.एड.

उठो जागो रूको नही:-उठो, जागों और तब तक रूको नही जब तक मंजिल की प्राप्ति न हो जायें।

अनुभव ही शिक्षक:-जब तक जीना, तब तक सीखना अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।

पवित्रता और दृढ़ता:-पवित्रता, दृढ़ता तथा उधम (परिश्रम) ये तीनो गुण एक साथ होना चाहिए।

ज्ञान और अविष्कार:-ज्ञान स्वयं में वर्तमान है, मनुष्य केवल उसका अविष्कार करता है।

मस्तिष्क पर अधिकार:-जब कोई विचार अन्य रूप से मस्तिष्क पर केवल अधिकार कर लेता है, तब तक वह भौतिक या मानसिक अवस्था में परिवर्तित हो जाता है।

एकाग्रता बनाओ:-मन का विकास करो और उसका संयम करो, उसके बाद जहाँ इच्छा हो, वहाँ इसका प्रयोग करो।उससें जल्द-जल्द सफलता प्राप्त होगी। साथ ही एकाग्रता सीखो और जिस ओर इच्छा हो, उसका प्रयोग करो।

सत्य में विश्वास:- बच्चो, जब तक तुमलोगों को भगवान तथा गुरु में विश्वास रहेगा, तब तक कोई भी तुम्हे नुकसान नही पहुँचा सकता।

धीरज रखो:-काम तुम्हारी आशा से बहुत ज्यादा बढ़ जाएगा। हर काम में सफलता प्राप्त करने से पहले सैकड़ो कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है जो परिश्रम करते रहेंगे, वे आज या कल सफलता को देखेंगे ही इसलिए आप धीरज बनाये रखों।

किसी के सामनेसिर मत झुकाना:-तुम अपने आपको छोड़ कर किसी और के सामने सिर मत झुकाओं। जब तक तुम यह अनुभव नही करते कि तुम स्वयं देवो के देव हो, तब तक मुक्त नही हो सकते।

आत्म-विश्वास

राहुल कुमार

बी.एड.

अपनी मेहनत के बल परतुम
अपना भाग्य सँबारो।
अंधकार से डरना क्या,
बस एक दिया तुम बारों।।
संकल्प शक्ति के साथ हमेशा
आगे बढ़ते रहना।
चाहे जितने तुां आएं
कदम एक न डिगना।।
असफलता के सागर से तुम
अपनी नाव उबारो।
अंधकार से डरना क्या

''एकाग्रता सफलता की कुंजी है''

अंकिता कुमारी

अमेरीका में भ्रमण करते हुए स्वामी विवेकानंद ने एक जगह देखा कि पुल पर खड़े कुछ लड़के नदी में तैर रहे अंडे के छिलके पर बंदूक से निशाना लगाने की कोशिश कर रहें है। किसी का एक भी निशाना सही नहीं लग रहा था। तब वे एक लड़के से बंदुक लेकर खुद निशाना लगाने लगे। उन्होने पहला निशाना बिलकुल सही लगाया। फिर एक के बाद एक उन्होनें 12 निशाने सही लगाए।

लड़को ने आश्चर्य से पूछा, 'आप यह कैसे कर लेते है? स्वामी विवेकानंद बोले, तुम जो भी कर रहे हो, अपना पूरा दिमाग उसी एक काम मे लगा ओं। अगर तुम निशाना लगा रहे हो तो तुम्हारा पूरा धयान अपने लक्ष्य पर ही होना चाहिए, फिर कभी नहीं चूकोगे। अगर पाठ पढ़ रहे हो, तो केवल पाठ के बारे में सोचो।

एकाग्रता ही सफलता की कुंजी है।

आजादी का अमृतमहोत्सव

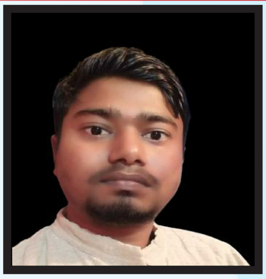

शशि पासवान
बी.एड.

हमारा देशभारत 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों की 200 साल की गुलामी से आजाद हुआ था। आजादी के 75 साल पूरे होने वाले हैं। इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस की 75वीं वर्षगांठ को भारत सरकार आजादी का अमृत महोत्सव के तौर पर मना रहा है। भारत के अनेकों महान स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी कुर्बानी दे कर अंग्रेजों की गुलामी से आजादी दिलाई। आजादी के अमृत महोत्सव मनाने का निर्णय प्रधानमंत्री द्वारा 12 मार्च 2021 को लिया। यह कार्यक्रम 15 अगस्त 2023 तक भारत के 78वें स्वतंत्रता दिवस तक चलेगा। इस मौके पर पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। आजादी का अमृत महोत्सव के माध्यम से भारत अपने लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरव शाली इतिहास का जश्न मना रहा है। 25 साल बाद साल 2047 में देश को आजादी मिले 100 साल हो जाएंगे। आने वाले 25 वर्षदेश के लिए ''अमृतकाल'' होगा। हमें भारत को भ्रष्टाचार, गरीबी, बेराजगारी, कुपोषण और निरक्षरता की समस्याओं से मुक्त बनाना होगा। भारत एक ऐसा देश होगा जहां घर से लेकर सड़कों, कार्यस्थल हर जगह महिलाएं सुरक्षित रहेंगी। साथ ही यह एक ऐसा स्थान होगा जहां सभी के लिए समानता की स्वतंत्रता होगीं। हमें भारत के स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को साकार करने हेतु भारत एक ऐसा स्थान होगा जहां जाति, धर्म, रंग, लिंग सामाजिक या आर्थिक स्थिति और नस्ल का भेद भाव नहीं होगा।भारत खद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर होगा और भारत की महिलाएं सशक्त हो, महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार मिलेगा एवं उन्हें कार्यस्थल पर भी किसी दुर्व्यवहार का सामना नहीं करना पड़ेगा। गरीब बच्चें कोशिक्षा मिलनी चाहिए। अमीर और गरीब के बीच कोई अंतर नहीं होना चाहिए। भारत के शांति, समृद्धि और सच्चाई की भूमि बना रहना चाहिए। भारत को सबसे उन्नत देश बनना चाहिए। हमरा भारत शिक्षित, आत्मनिर्भर, स्वच्छ, सुरक्षित, विकसित व विश्वगुरु हो।

अच्छा स्वास्थ्य

सेनाली कुमारी
बी.एड.

संस्कृत में कहावत है- शरीर मधयं खलु धर्म-साथनम् आर्थात है।अतः शरीर को स्वस्थ होना अति आवश्यक है। यदि अच्छा स्वास्थ्य नहीं है तो मनुष्य कुछ भी नही कर पाता। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है, नियमित और संतुलित आहार, स्वच्छ वायु, नियमित परिश्रम, संयम और व्यायाम। शारीरिक स्वास्थ्य पर ही मानसिक स्वास्थ्य निर्भर करता है। रोगी व्यक्ति की मानसिक शक्तियाँ कुंठित और रूग्ठा हो जाती है। स्वस्थ्य एवं प्रगतिशील विचारों का जन्म भी स्वस्थ शरीर में ही संभव है। इसलिए मनुष्य को अपने स्वास्थ्य पर सर्वाधिक ध्यान देना चाहिए। अच्छे स्वास्थ्य की कीमत तो एक रोगी ही बता सकता है जो जीवन जीने की आस भी त्याग चुका है। स्वास्थ्य से अर्थ ने केवल शरीर का स्वस्थ होना है बल्कि मन भी सच्चे विचारों से परिपूर्ण होना चाहिए । नकारात्मक विचारों से हमारा मानसिक स्वास्थ्य खराब होता है। इसलिए कहा भी गया है कि पहला सुख निरोगी काया।

आज़ादी का
अमृत महोत्सव
ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE BIRSINGHPUR
National Seminar
on
Achieving Sustainable Development Goal:
Through Education 4.0
An Initiative by
IQAC
In Collaboration with RDC
Date : December 27th 2022
G-Mail : spttcbirsinghpur@gmail.com, Website :

ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE BIRSINGHPUR
National Seminar
on
Achieving Sustainable Development Goal:
Through Education 4.0
An Initiative by
IQAC
In Collaboration with RDC
G-Mail : spttcbirsinghpur@gmail.com, Website :

ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE
BIRSINGHPUR, SAMASTIPUR
SEMINAR

COLLEGE
अतिथि

S.P.T.T.C
SIRSINGHPUR

Vision And Mission
DR. ROLI DWIVEDI
Principal

ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE
BIRSINGHPUR, SAMASTIPUR
INSTITUTIONAL SEMINAR
"New Education Policy 2020-Key Challenges in Implementation"
अतिथि
S.P.T.T.C
BIRSINGHPUR

ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE BIRSINGHPUR
NATIONAL SEMINAR
Certificate of Participation

आजादी का
अमृत
महोत्सव
Name - Rashmi

St. Paul Teachers' Training College Birsinghpur
एड्स दिवस पर नारा,
एड्स मुक्त हो विश्व सारा.
WORLD AIDS DAY
1st DECEMBER 2022
Email : spttcbirsinghpur@gmail.com
Website : www.spttcbir.org

World Human Rights Day
Theme - Dignity, Freedom and Justice for all

ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE
BIRSINGHPUR
Orientation
2021
अपराजिता
अतिथि
realme Shot on realme X7 Max

ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE
BIRSINGHPUR
Orientation
2021
अपराजिता
realme Shot on realme X7 Max

ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE BIRSINGHPUR
Lecture on
NATIONAL CONSTITUTIONAL DAY
THEME : MOTHER OF DEMOCRACY
Date : 26th November 2022
महिला कानून
अधिकार
Welcome
S.P.T.T.C
BIRSINGHPUR

World Human Rights Day
Theme - Dignity, Freedom and Justice for all
S.P.T.T.C
BIRSINGHPUR

India, BR, Samastipur, Kalyanpur
Kalyanpur, Samastipur, 848113, Bihar, India
Latitude: 25.929735763953932
Longitude: 85.75382935822546
10/12/2022 11:22:03
Google

ST.PAUL TEACHERS TRAINING COLLEGE
BIRSINGHPUR

ST.PAUL TEACHERS TRAINING COLLEGE
BIRSINGHPUR
realme Shot on realme X7 Max

Paper Clipping

संत पाल के संस्थापक की मनी 77 वीं जयंती

टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में हुई विज्ञान प्रतियोगिता

कल्याणपुर। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर संत पाल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज बिरसिंहपुर में मंगलवार को रमन इफेक्ट राष्ट्रीय विज्ञान फ्यूचर ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी एवं इनोवेशन पर विज्ञान प्रदर्शनी लगाई गई। मौके पर कॉलेज की प्राचार्य डॉ. शेली द्विवेदी ने बच्चों के जीवन में साइंस एवं टेक्नोलॉजी की भूमिका पर प्रकाश डाला। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अमर कुमार, द्वितीय स्थान शालिनी कुमारी को व तृतीय स्थान अंकित कुमार सिन्हा ने प्राप्त किया। उन्हें पुरस्कार देकर पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में तहसील आलम कादरी, अर्पणा कुमारी आदि मौजूद थे।

बीएड-डीएलएड का हुआ सत्रारंभ

प्रशिक्षु शिक्षकों को दिये गये योग के टिप्स

प्रशिक्षु शिक्षकों को कैंसर से बचाव के दिये गये टिप्स

प्रशिक्षुओं को शिक्षक बनने का दिया गया टिप्स

नयी शिक्षा नीति भावी पीढ़ी के लिए उपयोगी

नये सत्र का हुआ शुभारंभ

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की पत्रिका का विमोचन

विमोचन करते अतिथि.

कल्याणपुर. बिरसिंहपुर स्थित सेंट पॉल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में कॉलेज पत्रिका का विमोचन ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के डॉ विनय कुमार व डॉ. मुनेश्वर यादव ने पत्रिका का विमोचन किया. कहा कि पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से शिक्षण प्रशिक्षण विद्यार्थियों के कौशल स्तर में उनकी कार्यक्षमता बढ़ाने व उनके गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती है. महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ शेली द्विवेदी, सचिव अविनाश कुमार व अध्यक्ष उमाशरण प्रसाद सिंह ने लेखन कौशल विकास के लिए छात्र-छात्राओं के बीच प्रतियोगिता कराई. इसमें प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को पुरस्कृत कर उन्हें आगे लेखन से जुड़े रहने की प्रेरणा दी. मौके पर अनिल प्रसाद सिंह, कुमार सौरभ आदि थे.

कैंपस

सेंट पॉल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में नई शिक्षा नीति पर हुई कार्यशाला

INSTITUTIONAL SEMINAR
kalyanpur birsinghpur, Bihar, India
Google

PUBLISHED BY

APICAL BOOK AGENCY

7/22, Ansari Road, Daryaganj,
New Delhi-110002
Mob: 7042255675
Email: apicalbookagency@gmail.com

ISBN 978-93-95661-01-0

ST. Paul Teachers' Training College, Birsinghpur

At-Jhahuri, P.O.- Birsinghpur, Tehsil (Block)– Kalyanpur,
Samastipur Bihar- Pin -848102
Phone : 9709871006, 9905510604, 8252105160
E-mail : spttcbirsinghpur@gmail.com